प्रकाशकीय

विनोबा की बोध-कथाएं

उन्हींके द्वारा कथित

१९६८

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

3M8
152K8

संग्रहकर्त्ता
रामकुमार गुप्त

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

मूल्य : दो रुपया

दूसरी बार : १९६८

मुद्रक
यूनाइटेड आफसेट प्रेस
दिल्ली-६

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी।
आगत क्रमांक...... 1231
दिनांक......

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...काशकीय

...रें को पढ़ने का बड़ा चाव होता है। वे जो कुछ पढ़ते हैं, ...अनजाने-उनके भावी जीवन तथा चरित्र पर गहरा प्रभाव

...वश्यक है कि उन्हें चुना हुआ साहित्य पढ़ने को दिया जाय। ...श्य की पूर्ति के लिए ऐसी पुस्तकें निकाली जा रही है। इनमें ...पुरुषों की आत्म-कथाएं, जीवनियां, यात्रा-वर्णन, देश-विदेश के भूगोल, इतिहास और संस्कृति आदि का परिचय तथा आविष्कारों, अन्वेषणों एवं वैज्ञानिक उपलब्धियों इत्यादि के हाल रहेंगे। नैतिक शिक्षा, साहस की कहानियां, लोक-कथाएं आदि भी दी जायेंगी।

इन पुस्तकों से कम पढ़े-लिखे पाठक भी फायदा उठा सकें, इसलिए इनकी भाषा बड़ी सरल तथा सुबोध रखी गई है। ऐसी पुस्तकों में चित्र भी दिये गए हैं।

अपने प्रवचनों में विनोबाजी समय-समय पर धर्म-ग्रंथों की कथाओं का उपयोग करते रहते हैं। ये कथाएं रोचक तो होती ही हैं, जीवन-निर्माण की शिक्षा भी देती हैं। इस संग्रह की कथाएं उनके प्रवचनों से ही इकट्ठी की गई हैं।

इन कथाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये बहुत ही सरल एवं सुबोध हैं और इनमें जो ज्ञान निहित है, उसकी फल-प्राप्ति सहज ही हो जाती है।

—मंत्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषय-सूची

१. द=दमन—दान—दया ७
२. वेदांत की सीख ८
३. आत्मा का बोध ९
४. सच्चा ज्ञान ९
५. केवल दिग्दर्शन १०
६. 'सर्व ब्रह्म' और शुद्ध ब्रह्म ११
७. कुलधर्म से प्रेरणा १२
८. भक्त की परीक्षा १२
९. सर्वशक्तिमान ब्रह्म १३
१०. मोहासुर का मर्दन १४
११. डाकू से महर्षि १५
१२. रामायण का सार : राम १७
१३. जैसी दृष्टि १८
१४. सहचारी भाव १९
१५. गुड़ न दे, गुड़ जैसी बात तो कर २०
१६. आणविकी सुरसा का सामना २१
१७. खग जाने खग ही की भाषा २२
१८. राम की कृति में उपदेश २३
१९. सेना से विजय नहीं २४
२०. भारत की अद्‌भुत सभ्यता २६
२१. तक्षक अमर कैसे हुआ २७
२२. कामना की तृप्ति त्याग में २७
२३. बैल की सेवा करें २८
२४. सलक्ष्य काम २९
२५. धर्मराज का न्याय ३०
२६. जब दुनिया नष्ट हो, बची ३०
२७. सेवक कृष्ण जैसे हों ३१
२८. माता के हाथ की रसोई ३२
२९. भगवान का आदर्श ३२
३०. गिरिधर ३३
३१. तुलसी की तरह हृदय बनाइये ३४
३२. प्रभु की कृपा ३४
३३. सुख की कुंजी ३५
३४. भगवान का स्मरण ३६
३५. भारतीय संस्कृति : अन्याय का प्रतिरोध ३६
३६. वित्त में अमृतत्व नहीं ३७
३७. द्वेष को प्रेम से शांत करें ३८
३८. क्रोधाग्नि पर प्रेम का पानी ३९
३९. निष्पाप जीवन का रहस्य ४०
४०. ज्ञानी का गुण : नम्रता ४१
४१. सत्याग्रही एकनाथ ४३
४२. भजन और भोजन साथ-साथ ४३
४३. पहले भोजन ४४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूमिका

सन्तो दिशन्ति चक्षूंषि, बहिरर्कसमुत्थितः।
बान्धवाः देवता सन्तः सन्तमात्माहमेव च॥

(भगवान् श्रीकृष्ण)

इसका आशय यह है कि जिस प्रकार भगवान् भास्कर अपनी तीखी एवं अन्धकार को दूर करने वाली तथा समस्त जीवों में जीवन का संचार करने वाली किरणों से बाहरी अन्धकार का नाश कर, सभी प्राणियों को सभी वस्तु देखने की क्षमता प्रदान करते हैं, उसी प्रकार सन्त महापुरुष जीवन के आन्तरिक अज्ञान-तिमिर को मिटा कर, मानव को आत्म-बोध करा देते हैं। इसी प्रकार के सन्त महापुरुष भगवान् की इस भव्य-लीलाभूमि में यथासमय जन्म लेकर केवल भूमि की ही शोभा नहीं बढ़ाते, अपितु समस्त मानवीय समस्याओं का पूर्णतया समाधान करके कोटि-कोटि जनता के लिये एक ऐसा सुन्दर एवं गौरवपूर्ण आदर्श-पथ का निर्माण करते हैं, जिस पर अग्रसर होकर असंख्य लोग सुगमतापूर्वक अपने अभीष्ट को प्राप्त करते हैं।

भगवान् एवं भक्तों का प्राकट्य "सर्वजनसुखाय एवं सर्वजन हिताय" ही हुआ करता है। सच तो यह है कि भगवान् को भी भक्त लोग अपने भावना-सूत्र में बाँध लेते हैं और उनको लोकार्थ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूमि पर अवतीर्ण कराते हैं। क्योंकि भगवान् भक्तों के भाव से बद्ध हैं तथा भावानुसार ही भगवान् भक्तों के सामने कहीं भी प्रकट हो जाते हैं। भागवत में स्पष्ट उल्लेख है :—

त्वं भावयोगपरिभावितहृत्सरोज
आस्से श्रुतेक्षितपथो ननु नाथ पुंसाम्।
यद्-यद् धिया त उरुगाय विभावयन्ति
तत्तद् वपुः प्रणयसे सदनुग्रहाय ॥१॥

अमलात्मा महात्माओं के अभाव में भूमि पर भगवान् का भी आना कठिन है, क्योंकि भगवान् तो भक्तियोग निर्वाह हेतु ही शरीर धारण करते हैं, इसका अन्य कोई मुख्य कारण नहीं है—

तथा परमहंसानां मुनीनां अमलात्मनाम्।
भक्तियोगविधानार्थं कथं पश्येमहि स्त्रियः ॥

रामचरितमानस में स्वयं राम विभीषणजी से कहते हैं—

तुम सारिखे भगत प्रिय मोरे।
धरौं देह नहिं आन निहोरे॥

× × × ×

अगुन अरूप अलख अज जोई।
भगत प्रेम बस सगुन सो होई॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वस्तुतः जगत् की रक्षा करने में सन्त महापुरुष ही समर्थ होते हैं। अन्य लोग तो असमर्थ ही रहते हैं। किसी आचार्य ने ठीक ही कहा है—

रुद्रोऽद्रिं जलधिं हरिर्दिविषदो दूरं विहायाश्रिताः।
भोगीन्द्राः प्रवला अपि प्रथमतः पातालमूलेस्थिताः॥
लीना पद्मवने सरोजनिलया मन्येऽर्थिसार्थाद्भिया।
दीनोद्धार परायणाः कलियुगे सत्पूरुषाः केवलम्॥

इसका तात्पर्य यह है कि इस कराल कलिकाल में भिक्षुक जीवों की याचना के भय से सभी देवगण दूर जाकर छिप गये। शिव कैलाश को, श्रीहरि क्षीर सागर को तथा शेष पाताल को चले गये। लक्ष्मीजी कमल वन को स्वीकार कर अलक्षित हो गई। इस स्थिति में केवल सन्त महापुरुष ही एकमात्र जीव का उद्धार करते हैं।

शुक, भीष्म, जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम, गर्ग, कपिल, कणाद, अर्जुन, अगस्त्य, युधिष्ठिर, एवं हनुमान् आदि प्राचीन महापुरुषों से तथा श्रीधर, तिलक, गांधी, विनोवा, राधाकृष्णन्, एवं श्री करपात्रीजी आदि आधुनिक सन्तों से जो मनुष्य सद्भावना की प्रेरणा नहीं लेंगे, उनके लिये क्या कहा जाय? यह सृष्टि भगवान् की है, अतः इसकी रक्षा वे स्वयं करते हैं। व्यक्ति विशेष तो केवल निमित्त मात्र है। ईश्वर की इच्छा से जगत् रक्षार्थ समय-समय पर सन्तों का प्रादुर्भाव होता रहता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निःसन्देह सूर, तुलसी, मीरा, रामकृष्ण, विवेकानन्द, ज्ञानेश्वर, एकनाथ एवं श्री समर्थ रामदास आदि सन्तों के प्रादुर्भाव में भगवान् की महती कृपा विद्यामान है। इन सन्तों ने जिस आध्यात्मिक भाव-भास्कर के प्रकाश से मानवीय अज्ञान का विनाश कर बोध प्रदान किया है, वह मानव समाज में सदा अक्षुण्ण बना रहेगा एवं जनता उनकी कृतज्ञता व्यक्त करती रहेगी।

केवल भौतिक सम्पन्नता ही मानव जीवन का यथार्थ तथा अन्तिम लक्ष्य नहीं है। प्रायः देखा जाता है कि उक्त सम्पन्नता के होते हुए भी लोग काफी चिन्तित एवं आन्तरिक शान्ति से रहित रहते हैं। अतः चेतन जीव अनित्य सांसारिक वैभव एवं वस्तुओं से एकान्ततः सन्तुष्ट नहीं हो सकता है। इसलिये वह अपने शरीर कारागारमें, जो उसके संस्कारों से बना हुआ है, अवरुद्ध होकर विकल है एवं मुक्ति चाहता है। परन्तु यह कार्य केवल सन्त महापुरुषों से ही संभव है। आचार्यों का ऐसा ही परामर्श परिलक्षित होता है :—

निमज्योन्मज्जतां घोरे भवाब्धौ परमायनम्।
सन्तो ब्रह्मविदःशान्ताः नौर्दृढ़ेवाप्सु मज्जताम्॥

आचार्यों का ऐसा कथन है कि महापुरुषों का सम्पर्क भगवान् का साक्षात् अनुग्रह है क्योंकि जीवन में सभी पुरुषार्थों की सुलभता महापुरुष के सम्पर्क पर निर्भर करती है। आशय यह है कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महापुरुष स्वार्थ रहित मेघों के समान अपने कृपारुपी वारिवर्षण से आनन्द की सरिता बहाकर मानव जीवन को पूर्णतया सरस एवं शान्तिपूर्ण बना देते हैं। महापुरुषों का दर्शन जीवन के समस्त विपत्तियों एवं संकटों का समूल विनाश कर देता है। दर्शक सभी तरह से शुद्ध होकर सभी सुखों का केन्द्र बिन्दु बन जाता है। महाकवि भारवि के शब्दों में सन्त-दर्शन सभी सुख एवं शान्ति प्रदान करता है। वह ब्रह्म-दर्शन के समान अमोघ है :—

श्रियं विकर्षत्यपहन्त्यघानि
श्रेयः परिस्नौति तनोति कीर्त्तिम्।
सन्दर्शनं लोकगुरोरमोघं
तवात्मयोनेरिव किं न धत्ते॥

सचमुच सन्त दर्शन अघ नाशक, ऐश्वर्य प्रदायक, कीर्ति विस्तारक और जीवन के सर्वाङ्गीण श्रेय साधन का मूल कारण है। सन्तों की साधना में वह सामर्थ्य है जो धरती के प्रत्येक कण में चेतनता का संचार करता है। इसी स्थिति में अलौकिक अनुभूति होती है। प्रह्लाद की कठिन साधना का फल नृसिंह, मनु के भगवान् राम, वसुदेव के कृष्ण गान्धी का भारतीय स्वातन्त्र्य और तुलसी का रामचरित मानस इसी अलौकिक अनुभूति का द्योतक है। इस समय गोस्वामी तुलसीदासजी ही चर्चा के विषय हैं। आपने मानवीय जीवन के लौकिक तथा वैदिक दोनों पक्षों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में वैचारिक दृष्टिकोण अपनाया है। तुलशी ने अपनी राम कथारूपी सरयू-सरिता के लौकिक एवं वैदिक तटों के प्रति मांगलिक दृष्टिकोण स्वीकार किया है। दोनों में कोई भी उपेक्ष्य नहीं है।

सरयू नाम सुमंगल मूला। लोक वेदमत मंजुल कूला॥

वास्तव में जीवन की सर्वांङ्गीण पूर्णता तभी मानी जाती है जब पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ काम, मोक्ष) में से किसी की भी कमी न हो। सभी का यथोचित समावेश हो। कोई भी पुरुषार्थ उपेक्षणीय नहीं है। वेदव्यासजी का भी इस विषय में यही सिद्धांत दिखाई पड़ता है :—

धर्मार्थकामाः सममेव सेव्या
यो ह्येकभक्तः स नरो जघन्यः।
तयोस्तु दाक्ष्यं प्रवदन्ति मध्यमं
स उत्तमो योऽभिरतस्त्रिवर्गे॥

धर्म अर्थ व काम तीनों पुरुषार्थ यथा समय यथोचित रूप से वांछनीय है, परन्तु मर्यादाहीन रूप में नहीं। प्रायः लोग अर्थ व काम के सम्बन्ध में आँख बन्द कर असीमित रूप से वृद्धि चाहते हैं। पर वे यह नहीं जानते कि अमर्यादित अर्थ-वृद्धि भी जीवन-नौका को जलधि में जलतरंगमाला के समान डुबा देती है। सच

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहा जाय तो अमर्यादित भावना जीवन के लिये वह अमावस रात्रि है—जो मनुष्य के सारे सद्गुणों को स्वार्थरुपी अन्धकार में विलीन कर देती है। मर्यादा-शून्य जल वृद्धि सरोवर के सारे सौंदर्य को नष्ट कर देती है। इस विषय में पण्डितराज जगन्नाथ का यह कथन कितना स्पष्ट एवं सटीक है :—

सोपानानि निमज्जितानि पदवी छन्ना तृणैर्नूतनैः
कालुष्यं पयसां विलोक्य शनकैः उड्डीय हंसा गताः।
माधुर्यं न मधुव्रतोदितगिरां पद्मानि मग्नानि कं
भेकानामिहगर्जितं परमहो वृद्धयैव नष्टं सरः॥

इसका तात्पर्य यह है कि वर्षा काल में सरोवर में भी अमर्यादित जल आने से उसकी सीढ़ियाँ, मार्ग, निर्मलता, कमल, हंस और मधुकर आदि की कल ध्वनिजनित सारी शोभा समाप्त हो गई। केवल सहस्रों मेढ़क का टरटराना ही शेष रह गया। मर्यादा के अभाव में ऐसा ही होता है। अतः मर्यादित जीवन ही श्रेष्ठ है।

"कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः" के अनुसार, कवि परमात्मा भी है। "कं सुखं वाति" इस व्युत्पति के अनुसार, कवि मानव के जीवन-जगत् में सुख-शान्ति एवं आनन्द के शीतल मन्द सुगन्ध पवन का संचार करता है। कवि में वर्णन शक्ति तो होती ही है। काव्य, जो कवि का कर्म या भाव होता है, की रचना करते समय कवि स्वयं को पात्रों के अनुरुप बना लेता है यही कारण है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि वह तथाकथित पात्रों के अन्तर्भावों को इस तरह चित्रित करता है कि मानो कवि उस पात्र के रूप में परिणत होकर ही बोलता हो। वर्णित पात्र के अन्तःकरण के अतिरिक्त कवि का स्वयं का अन्तःकरण दबा रहता है, इसीलिये यथातथ्य दूसरों का भाव चित्रण करने में वह समर्थ होता है। वह अपनी सूक्ष्म दृष्टि से अन्य व्यक्तियों के मानस-पटल पर सम्भूत भावों को पढ़ लेता है। गोस्वामीजी की कवित्व शक्ति सहजा है। इनके काव्य में कृत्रिमता का अभाव एवं निर्बाध प्रवाह है। स्वर्गीय कवि अयोध्या सिंह उपाध्यायजी ने इनकी कवित्व-शक्ति एवं कवि स्वरूपता का निम्नांकित शब्दों में उल्लेख किया है—

बनि राम - रसायन की रसिका,
रसना रसिकों की भई सफला।
अवगाहन मानस में करि के,
जन मानस का मल सारा टला।
भइ पावन भाव की भूमि भली,
भइ भाविक भावकता का भला।
कविता करिके तुलसी न लसे,
कविता लसी पा तुलसी की कला।

तुलसी जैसे कवि को पाकर हिन्दी कविता की ही प्रतिष्ठा बढ़ गई—यही बात सच है।

प्रश्न उठता है कि तुलसी के काव्य में सहज सौन्दर्य-दर्शन लोगों को क्यों होता है? इसका कारण यह है कि वे समाधि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाषा में भाव व्यक्त करते हैं। साथ ही, उसमें अपने कर्तृत्व पर अहंकार की गन्ध तक नहीं है। रामने ही तुलसी को बनाया है अतः तुलसी में या तुलसी के मानस में अगर कोई दोष है तो यह तुलसी को बनाने वाले का होगा, उनका नहीं—ऐसी इनकी साधिकार मान्यता है।

"आपु हौं आपुको नीक कै जानत, रावरो राम भरायो गढ़ायो।
कीरु ज्यौं नाम रटै तुलसी, सौ कहैं जग जानकीनाथ पढ़ायो॥
सोई है खेद जो वेद कहै, न घटै जन जो रघुवी बढ़ायो।
हौं तो सदा खर के असवार, तिहारोई नाम गयन्द चढ़ायो॥

अपने कर्तृत्व की निरभिमानता ने ही तुलसी के काव्य में इतना लालित्य व व्यापकत्व भर दिया है। गोस्वामीजी में अद्भुत सामयिक परख थी। उन्होंने अपने समय में भारत की शोचनीय स्थिति का अनुभव किया। उस समय भारतवर्ष पर सम्राट् अकबर का शासन था। लोग शाही दरबार की चापलूसी करने में ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझते थे। जनता मूक एवं परतंत्र थी। ऐसी दशा में भारतीय संस्कृति का पतन होना स्वाभाविक ही था। लोग त्रिपात से तप्त थे। इस स्थिति में वैदिक संस्कृतिसुरक्षा करने के लिये एक कर्मठ नेता की नितान्त आवश्यकता थी। इस गुरुतर कार्य को पूर्ण करने के भार ग्रहणकर गोस्वामीजी ने बड़ी सफलतापूर्वक जनता के त्रिताप (दैहिक, दैविक, भौतिक) को दूर किया। इन्होंने ईश्वरीय कृपा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर पूर्णतया अवलम्बित होकर तत्कालीन मानव समाज की सारी समस्याओं का उचित समाधान किया।

इनके भावों के अनुसार समाज के स्वरूप का वर्णन इन्हीं के शब्दों में देखिये :—

"वरनाश्रम निज निज धरम, निरत वेदपथ लोग।
चलहि सदा पावहि सुखहि नहिं भय शोक न रोग॥"

दैहिक-दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि व्यापा।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति रीती॥
चारिउ चरण धर्म जग माहीं। पूरि रहा सपनेहु अघनाहीं।
राम भगत रत सब नर नारी। सकल परम गति के अधिकारी।
अल्प मृत्यु नहिं कवनेऊ पीरा। सब सुन्दर सब विरुज शरीरा।
नहिं दरिद्र कोउ दुःखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लक्षण हीना॥
सब निर्दम्भ धर्मरत पुनी। नर अरु नारि चतुर सब गुनी।
सब गुणग्य, पंडित सब ज्ञानी। सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी॥

गोस्वामीजी की उपर्युक्त सामाजिक परिकल्पना कितनी अच्छी है इसकी भव्यता से आकर्षित होकर ही पूज्य बापू (महात्मा गांधीजी) भी भारत में रामराज्य की ही स्थापना को भारतीय स्वतंत्रता का आदर्श मानते थे।

अस्पृश्यता कलंक परिमार्जन :—

गोस्वामीजी वैदिक सिद्धान्त और वर्णाश्रम मर्यादा के कट्टर समर्थक हैं। अन्य अवैदिक मतों का समर्थन इन्हें पसन्द नहीं,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जबकि आये दिन अनेकानेक नये-नये धर्म-पथ तथा सम्प्रदाय बरसाती भेढ़क की तरह आते रहते हैं। गोस्वामीजी द्वारा नीचे उल्लिखित इस कथन में ऐसे पथों के प्रति प्रचण्ड प्रहार है :—

"श्रुति सम्मत हरिभक्ति पथ, संयुत विरति विवेक।
तेहि न चलहि नर मोह बस, कल्पहि पन्थ अनेक॥"

जीवन के समाहारिक तत्वों का निरूपण करते हुए आपने जो विचार प्रस्तुत किये हैं वे वस्तुतः देश काल की सीमा से परे, तथा सर्व सुखद होने से विश्व के सभी मानवों के लिए मान्य है। वेद प्रतिपादित हरि भक्ति पथ ही सुपथ है। परन्तु स्मरण रहे कि इस पथ से गुजरने वाले पथिकों को ज्ञान तथा वैराग्य रुपी युगल नेत्रों से युक्त होना चाहिये अन्यथा भक्ति-मणि को ग्रहण करने में भक्त असमर्थ रहेगा। अतः "ज्ञान विराग नयन उरगारी" कह कर गोस्वामीजी ने संकेत कर दिया है।

वैदिक भूमिका पर आधारिक वर्णाश्रम धर्म को उच्छेद कर वेद भूमि को रसातल ले जाना ही कराल कलिकाल का पहला कलुषित कार्य होता है। निम्नलिखित उद्धरण से यह बात स्पष्ट है :—

"बरण धरम नहिं आश्रमचारी।
श्रुति विरोध रत सब नर नारी।"

तुलसी का मानस वैदिक धर्म समर्थक होते हुए भी भारतीय समाज के भीतर वर्तमान में उत्पन्न सामाजिक अभिशाप रूप अस्पृश्यता रोग का कुशल चिकित्सक है। देखिये ! भक्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रसनिष्णात भरतजी निषादराज को जिसकी छाया छू जाने मात्र से लोग स्नान करते थे—उल्लास के साथ हृदय से लगाते हैं।

"करत दण्डवत देखि तेहि, भरत लीन उर लाय।
मनहु लषन सन भेट भई, प्रेम न हृदय समाय॥"

चित्रकूट में वैदिक ऋषि वशिष्ठजी भी तो मानो भरत के निषाद मिलन रूप कार्योपदेश से प्रभावित होकर राम सखा से से छुआछूत की भावना को भुलाकर बड़े प्रेम से मिलते हैं—

"रामसखा ऋषि बरबस भेटा।
जनु महि लुठत सनेह समेटा॥"

इस प्रकार भक्ति की भूमिका पर इनका दृष्टिकोण उच्चतम है। उस भूमि पर भेद-भाव का अस्तित्व मिट जाता है जो इससे स्पष्ट है।

पुत्र की आज्ञाकारिता

भगवान् राम की भक्ति भावना युक्त पुत्र को जन्म देने से ही यदि युवती का पुत्र उत्पन्न करना सार्थक है, तो मातृपितृ आज्ञा पालन में ही पुत्र के जन्म की सफलता एवं सर्वाङ्गीण विकास निहित है। आज्ञाकारी पुत्र सुख, सुयश एवं स्वर्ग आदि सभी को साधिकार प्राप्त करने की क्षमता रखता है।

'अनुचित उचित विचार तजि जे पालहि पितु बैन।
ते भाजन सुख सुजस के बसहि अमरपति ऐन॥"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दाम्पत्य-धर्म संकेत :

त्रिगुणातीत ऋषि अत्रि की प्रिया अनसूया ने जानकी को जो शिक्षा प्रदान की है वह भारतीय संस्कृति के अनुरूप है और व्यावहारिक भी। वस्तु शुद्ध बनी रहे—इसके लिये पात्र-शुद्धता की बड़ी आवश्यकता होती है। सन्तति की भावना शुद्धि के लिए मातृ-भावना, जिसमें सन्तति का दीर्घकालीन परिपाक होता है, शुद्धता की बड़ी आवश्यकता होती है।

सन्तति माता एवं पिता की युगल भावनात्मक ममता का प्रतीक है तथा मातृशील का उत्तराधिकारिणी है।

"मातृ दोषेण दुःशीलः पितृ दोषेणमूर्खता"

"एकनारि ब्रतरत सब झारी" एवं "अमित दानि भर्त्ता वैदेही" कहकर गोस्वामीजी ने स्त्री-पुरुष युगल समाज को मर्यादित कर दिया है। अपने अधिकार का अतिक्रमण करना ही स्वतंत्रता का दुरुपयोग है।

सेवक-सेव्य धर्म

मानवीय रचना सब प्रकार से पूर्ण है। फिर भी वह एक सामाजिक प्राणी होने के नाते जीवन भर अकेले नहीं जी सकता है। यह जगत् सेव्य-सेवक भाव पर आधारित है। सूर्य-चन्द्र भी इस भाव से परे नहीं हैं तो फिर और लोगों की बात ही क्या कही जाय ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिय उरगारि।
भजिअ राम-पद-पंकज अस सिद्धान्त विचारि॥

रामचरित मानस के सेवक के लिये कुछ धर्मों एवं कर्त्तव्यों का निरूपण है।

इसके सम्बन्ध में ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य है—

जो सेवक साहिब हे संचोची। निज हित चहै तासु मति पोची॥
सेवक हित साहिब सेवकाई। करै सकल सुख लोभ बिहाई॥
उतरू देई सुनि स्वामिरजाई। सो सेवक लखि लाज लजाई॥
सहज सनेह स्वामि सेवकाई। स्वारथ छल-फल-चारि बिहाई।
आज्ञा सम न सुसाहिब सेवा। सोप्रसाद जन पावे देवा"॥

सेवक का धर्म अति कठिन है। इसकी कठिनता तो गोस्वामी जी के इस कथन से स्पष्ट है—

"हर गिरिते गुरु सेवक धरमू"।

कर्त्तव्य के आधार पर ही अधिकार का स्थान होता है। स्वामी का स्थान उच्चतम है, अतः उनका कर्त्तव्य भी अति कठिन है। स्वामी समत्व भूमिका को कभी नहीं छोड़ता है। सबके आत्म-स्वरूप दर्शन को अध्यात्मजगत् में विज्ञान कहा जाता है "बिनु विज्ञान कि समता आवै" से ही स्पष्ट है। गोस्वामीजी का निर्धारण देखिए—

"सेवक कर पद नयन से मुख सो साहिब होइ।
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकबि सराहहि सोइ"।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर श्रीराम का प्रबोधन देखिए—

"मुखिया मुख सो चाहिये खान-पान कह एक।
पालइ पोषइ सकल अंग तुलसी सहित विवेक"॥

स्वामी में विषमता की भावना नहीं होनी चाहिये। जब विषमता होती है तो दशा बिगड़ती है यह ध्रुव सत्य है।

वर्णाश्रम धर्मानुसार सभी मानव अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हों, यह इनका सामाजिक संदेश है। अपने आवश्यक सहज कर्म से पराङ्मुख होना अपनी चिन्तनीय दसा को बुलाना है। सामाजिक भूमिका पर कर्त्तव्यहीन व्यक्ति कलियुग में भी निन्दनीय है। गोस्वामीजी ने इसका वर्णन निम्नांकित रूप से किया है—

सोचिअ विप्र जो वेद विहीना।
तजि निज धरम विषय लयलीना॥
सोचिय नृपति जो नीति न जाना।
जेहि न प्रजा प्रिय प्राण समाना॥
सोचिअ वयस कृपण धनवानू।
जो न अतिथि शिव भगति सुजानू॥
सोचिय सूद्र विप्र अवमानी। मुखर मानप्रिय ज्ञान गुमानी॥
सोचिअ पुनि पतिवंचक नारी। कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी॥
सोचिय बटु निजव्रत परिहरई। जो नहि गुरु आयासु अनुसरई।
सोचिय गृही जो मोहबस करै करम पथ त्याग।
सोचिय यती प्रपंचरत, विगत विवेक विराग॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वैखानस सोइ सोचे जोगू। तप विहाय जेहि भावइ भोगू॥
सोचिय पिसुन अकरण क्रोधी। जननि जनक गुरु बन्धु विरोधी।
सबविधि सोचिय पर अपकारी। निज तनु पोषक निरदय भारी॥
सोचनीय सबही विधि सोई। जो न छारि छल हरिजन होई॥

उपर्युक्त लोग कर्त्तव्यहीन होने से समाज में बोझरुप हैं एवं शोचनीय हैं।

सन्त तुलसी लोक-मांगलिक चेतना को जागृत करने के लिए केवल सैद्धांतिक पक्ष की दक्षता को अपूर्ण मानकर जीवन - जगत में उसके व्यावहारिक पालन करने पर ही पूर्णता का प्रमाणपत्र देते हैं। वस्तुतः जीवन में कुछ ऐसे विषय हैं जो अपने नितांत आवश्यक निर्धारित भावों एवं संस्कारों के अभाव से अन्ततः लोक निरपेक्षता का विषय बन जाता है।

तिनहि ज्ञान उपदेशा रावन। आपुन मन्द कथा अति पावन॥
पर उपदेश कुशल बहुतेरे। जे आचरहि ते नर न घनेरे॥

उपर्युक्त पंक्तियों में व्यक्तिगत सिद्धांत बोध के बावजूद भी जीवन में आचरण के अभाव से इस प्रकार के उपदेश, व्यगं एवं आलोचना के विषय बन जाते हैं। इन चार तत्वों से ये चार भार ही भार एवं निःसार है।

भारोऽविवेकिनः शास्त्रं भारो ज्ञानं च रागिणः।
अशान्तस्य मनोभारं भारोऽनात्मविदो वपुः॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसका आशय है कि अविवेकी को शास्त्र, रागी को ज्ञान, अशान्त को मन और मूढ़ को देह भाररूप अनुभव होता है।

जीवन का स्वरूप क्रियात्मक है। अतः यह कभी निष्क्रिय नहीं हो सकता है। व्यक्ति में सत्रह तत्वों से निर्मित एवं स्थापित सूक्ष्म देहवर्ती चेतन की चैतन्य-धारा निर्बाध गति से बहती चली जा रही है। ऐसी दशा में समझदार साधक उसे पुण्यात्मक पथ से ही बहाते हैं न कि अशुभ मार्ग से। शुभ मार्ग से ही प्रवाहित होने पर जीवन का प्रत्येक अंश हराभरा रहता है। फलतः जीवन की शुष्कता समाप्त हो जाती है, जो हम चाहते भी हैं। आचार्यों का कथन है :—

शुभाऽशुभाभ्यां मार्गाभ्यां वहन्ती वासनासरित्।
पौरुषेण प्रयत्नेन योजनीया शुभे पथि॥

जो वस्तु जितनी जल्दी बनती है वह उतनी ही जल्दी बदलती हुई अपनी दूसरी दिशा की ओर अग्रसर होती है। जिस कालक्रम से सूर्य ऊपर चढ़ते हैं उसी कालक्रम से मध्यान्ह में तेज होकर भी सायंकाल अस्ताचल की ओर जाकर अदृश्य हो जाते हैं। साधक को चाहिये कि धैर्य के साथ अपनी चिरसंचित वासना—विशुद्धि के लिये प्रयत्नशील रहे। एकाएक यह कार्य होना कठिन है क्योंकि जीव की आदत बड़ी पुरानी पड़ी हुई है और वह आदत है संसार के विषयों में लीन रहने की। वासना किसे कहते हैं ? उत्तर है—

यद्भावनयां त्यक्त पूर्वापर विचारणम्।
यदादानं पदार्थस्य वासनां सा प्रकीर्तिता॥ —वशिष्ठ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जन्मान्तरशताभ्यस्ता मिथ्यासंसारवासना ।
सा चिराभ्यासयोगेन विना न क्षीयते क्वचित् ॥

पुरुषार्थ करना प्राणी मात्र का आवश्यक कर्त्तव्य है। वास्तव में सैद्धान्तिक बोध-वृक्ष का फल ही उसी के अनुसार जीवन-यापन है जो व्यावहारिक होता है।

गोस्वामीजी समस्त समाज को भगवान् के चरण-कमलों में अटूट निष्ठा रखते हुए, अपने सहज कर्मों को करते रहने का सन्देश देते हैं। क्रिया ही कर्त्ता को महनीय-मंच पर आसीन करके उसकी महनीयता का उद्घोष करती है। व्यक्ति तो भौतिम देह त्याग कर चला जाता है परन्तु उसका कार्य-कलाप ही उसकी कीर्ति-पताका को, जिसे कराल काल भी कर्तन नहीं कर पाता है, उठाए रहता है। आनेवाला समाज भी जिसे आदर देता है वही धन्य है। "कीर्त्तियस्य स जीवति"—कीर्त्तिवान् ही जीता है—कहना ठीक है। उपासना से मल, एकाग्रता से विक्षेप और गुरु कृपा से आवरण दूर हो जाते हैं।

कर्म, ज्ञान एवं भक्ति का सुन्दर सामंजस्य :—

बहुधा लोग इस विषय पर विवाद किया करते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि ज्ञान ही सर्वोपरि तत्व है तो कुछेक का कथन है कि भक्ति ही सर्वोच्च है जब कि कुछ लोगों का आग्रह है कि कर्म ही सबकुछ है। इन तीनों तत्वों को लेकर अगर स्वस्थ चित्त से चिन्तन किया जाय तो इस निष्कर्ष पर आते हैं कि उक्त तीनों का परस्पर सापेक्ष सम्बन्ध है तथा प्रत्येक एक दूसरे के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूरक एवं अन्योन्याश्रित है। उक्त तीनों के सम्बन्ध समन्वय से ही मानव अपने जीवन में शान्ति पा सकता है। कर्म-गति है, इसके बिना जीवन जड़ तथा सौन्दर्यहीन हो जाता है। ज्ञान स्थिति है, जिसके भीतर गत्यात्मकता शक्ति बनी रहती है। बोधमूलक क्रिया जब अहं भाव शून्यता के साथ ईश्वरार्पित हो जाती है तो तीनों का समन्वय समझना चाहिए ज्ञान एवं विराग रूपी नेत्रों से सुशोभित एवं प्रयत्नशील साधक जब भावयुक्त होकर भक्ति-मणि को ढूँढ़ता है तभी वह उसे पाता है।

भाव सहित खोजे जो प्राणी।
पाव भगति मणि सब सुखखानी॥

भाव-युक्ता क्रिया साधना - भक्ति कहलाती है, जिसका निम्नांकित शब्दों में चित्रण किया गया है :—

श्रवणं कीर्तनं ध्यानं हरेरद्भुद् कर्मणः।
जन्म-कर्म गुणानाञ्च तदर्थेऽखिलचेष्टितम्॥
परस्परानुकथनं पावनं भगवद्यशः।
मिथोरतिः मिथस्तुष्टिः निवृत्तिर्मिथ आत्मनः॥
स्मरन्तः स्मारयन्तश्च मिथोऽघौघहरं हरिम्।
भक्त्या संजातया भक्त्या विभ्रत्युत्पुलकां तनुम्॥

बोध एवं क्रियात्मकता के बावजूद भी ईश्वर में श्रद्धात्मिकता वृत्ति के अभाव में सफलता प्राप्त नहीं होती है। आचार्यों का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यही सिद्धान्त है। समुद्र मन्थन के समय देवों ने अमृत प्राप्त कर लिया पर दैत्यों को नहीं मिला। क्यों? यह एक प्रश्न है। इसका उत्तर भी वहीं पर दिया गया है। शुकदेवजी के शब्दों में देखिये :—

एवं सुरासुरगणाः समदेशकालहेत्यर्थ-
कर्ममतयोऽपि फले विकल्पाः।
तत्रामृतं सुरगणाः फलमंजसापुः
यत्पादपङ्कजरजःश्रयणान्न दैत्याः॥

पुरुषार्थ के साथ ईश्वरीय आश्रय एवं विश्वास न रखने के कारण देवताओं की भाँति ही सब समान क्रियायें होने पर भी दैत्यों को अमृत फल नहीं मिला और देवतों को वह प्राप्त हो गया। भक्ति से ज्ञान की प्राप्ति होती है और विवेक ही भक्ति का सामर्थ्य है। वृत्ति-ज्ञान भक्ति का पुत्र और अखण्ड ज्ञान परस्पर दम्पती रूप होता है।

"सो सुतंत्र अवलम्ब न आना। तेहि आधीन ज्ञान विज्ञाना।"

भक्ति से सब कुछ प्राप्त होता है इसमें सन्देह नहीं। परन्तु भक्ति विवेक भूमि पर ही ठहरती है। विवेक मूलक भक्ति उचित है अन्ध-भक्ति अनुचित है। गोस्वामी तुलसीदासजी के शब्दों में देखिये :—

होई विवेक मोह भ्रम भागा।
तब रघुनाथ चरण अनुरागा॥

× × ×

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाने बिनु न होई परतीती।
बिनु परतीति होइ नहिं प्रीति॥
प्रीति बिना नहिं भगति दृढ़ाई।
जिमि खगपति जल की चिकनाई॥

अतः जीवन में उक्त तीनों का समन्वय होना चाहिए। गीता में कर्म उपासना एवं ज्ञान का समन्वय ही है।

परमपिता परमेश्वर मायिक परिधान को स्वीकार करके मनुष्यों के शिक्षण हेतु नरादि के रूप में मूर्त्तिमान् हो जाते हैं। मनुष्य के रूप में आना विशेष कर मानव शिक्षण हेतु ही समझना चाहिए न कि केवल राक्षसों के वधार्थ। "मर्त्यावतारस्त्विह मर्त्यशिक्षणं रक्षोवधायैव न केवलं हि" इस कथन से स्पष्ट है। "ईश्वर मूर्त्ति में भावात्मक होते हैं।" यह सिद्धान्त वेदादि से प्रतिपादित है। इस जगत् में मूर्ति से परे रहकर कोई न कुछ कह सकता है न श्रवणादि क्रिया ही कर सकता है। वेद में मूर्तिमान् प्रभु के सम्बन्ध में वर्णन है :—

एषो ह देवः प्रदिशोऽनुसर्वा
पूर्वो ह जातह जातः सहगर्भे।
अन्तः स एव जातः जनिष्यमाणः
प्रत्यङ्जनास्तिष्ठन्ति सर्वतोमुखः।

यजु०—२०-अध्याय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आयोधर्माणि प्रथमः ससाद ततो वपूंषि कुरुषे पुरूणि

अथर्व—५-१-१-२

एहि अस्मानम् आतिष्ठ अस्मानवतु ते तनुः
अथ मृत्पिडं आदाय महावीरं करोमि मखाय त्वा

यजुर्वेद—३७-३

मनुजी ने मूर्ति की व्यापकता एवं पूजा की चर्चा की है। वे लिखते हैं कि :—

भृदं गां देवतं विप्रं घृतं मधु चतुष्पथं।
प्रदक्षिणानि कुर्वीत प्रज्ञाताञ्च वनस्पतीन्॥

मनुजी ने तो मूर्ति भंजन करने वाले को ५००-०० रुपये दण्ड देने का विधान किया है :—

संक्रम ध्वजयष्टीनां प्रतिमानां च भेदकः।
प्रतिकुर्याच्च तत्सर्वं पंचदद्यात् शतानि च॥

मनु—९/२९५

ब्रह्म सगुण भी है तथा निर्गुण भी :—

न स्थानतोऽपि परस्य उभयलिंगं सर्वत्र

ब्रह्मसूत्र—३-२-११

उक्त समस्त प्रमाणों से भगवान् का व्यापक रूप से मूर्तिमान् सिद्ध है। भगवान् के सगुणात्मक रूप के चार (नाम, रूप, लीला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एवं धाम नित्य शरीर विग्रह माने जाते हैं। भगवान् को उपासना—धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष—चारों पुरुषार्थ प्रदान करती है। नारदजी ने कहा है :—

धर्मार्थकाममोक्षाख्यं य इच्छेच्छ्रेय आत्मनः।
एकमेव हरेस्तत्र कारणं पादसेवनम्॥

भक्त यदि धर्म अर्थ एवं काम पुरुषार्थों को आसक्ति त्याग करके निष्काम भाव से प्रभु की भक्ति करता है तो गुणों को पार कर जाता है, अर्थात् प्राकृतिक जाल व माया से सदा के लिये मुक्त हो जाता हैं :—

मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते।
स गुणान् समतीत्यैतान् ब्रह्म भूयाय कल्पते॥
(गीता)

गीता के उक्त वचन से यह सिद्धान्त स्पष्ट है। आत्म स्वरूप की प्राप्ति के लिए दो मार्ग है एक है "मानना" तथा दूसरा है "जानना"। भक्ति मार्ग में शास्त्र, वेद, स्मृति, गुरु आदि की बातों को श्रद्धा विश्वास पूर्वक मान कर आचरण करता हुआ भक्त आराध्य को पा लेता है, अर्थात्, वह भी गुणातीत हो जाता है। दूसरा मत हैं "जानना", जो ज्ञान मार्ग कहलाता। इस पथ में साधक को इस सात्विक बुद्धि से सम्पन्न होना चाहिए :—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नान्यं गुणेभ्यःकर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति ।
गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावंसोऽधिगच्छति ॥

गीता०

अर्थात् जागतिक समस्त परिवर्तन गुणात्मिका प्रकृति-नटी द्वारा कृत है एवं मैं विशुद्ध रूप प्रकृति पाश मुक्त केवल साक्षी, तथा द्रष्टा मात्र हूँ। इस प्रकार पुरुष "ज्ञ" रूप होकर आत्म सुख पाता है। सांख्य दर्शन में ऐसा ही उल्लेख है। कपिल दर्शन में २५ और योग दर्शन में ईश्वर सहित २६ तत्व हैं।

भक्तियोग में सेव्य-सेवक भाव अनिवार्य होता। सेवक अपना सेवाभाव परिपुष्ट कर सेव्य की सेवा में सदा निरत रहता है। सेवक को अपने सेव्य स्वरूप स्थिर करने के बाद सेव्य के नाम, रूप, लीला एवं धाम चार विग्रहों में किसी एक का दृढ़ता-पूर्वक अवलम्बन करना पड़ता है। भक्त देह से सेवा मन से त्याग और बुद्धि से प्रभु में प्रीति करता है।

रामस्य नाम रूपंच लीला धाम परात्परं ।
एतत् चतुष्टयं नित्यं सच्चिदानन्द विग्रहम् ॥

इनमें से नामात्मक अवलम्बन से अन्य सभी की पूर्ति हो जाती है। नाम स्मरण विधि-निषेध अवस्था विशेष आदि बन्धनों से मुक्त है। नाम स्मरण सब समय सभी अवस्था में मान्य है। राम नाम की महिमा को जब राम भी नहीं घटला सकते हैं तो फिर विषय में अनुरक्त जीव क्या कहेगा? गोस्वामीजी ने लिखा है :—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहौं कहा लगि नाम बड़ाई।
राम न सकहि नाम गुण गाई॥

नाम और नामी अभिन्न होते हैं अतः कृष्ण चिन्तामणि रूप हैं तो उनका नाम भी चिन्तामणि है। चैतन्य महाप्रभु के शब्दों में—

नाम चिन्तामणिः कृष्णः चैतन्यरसविग्रहः।
पूर्णः शुद्धो नित्यमुक्तोऽभिन्नत्वान्नमनामिनोः॥

नामावलम्बी साधक सात तत्त्वों को बड़ी सरलता पूर्वक पा लेता है। नाम साधक को सात तत्त्वों को देकर शान्त हो जाता है जैसा कि आचार्य ने वर्णन किया है :—

विष्णोर्नामैव पुंसः शमलमप-
हरतू पुण्यसम्पादयच्च
ब्रह्मादिस्थान भोगात् विरतिमथ
गुरोःश्रीपदद्वन्द्वभक्तिम्।
तत्त्वज्ञानं च विष्णोरिह जनन-
मृति-भ्रान्त बीजं च दग्ध्वा
सम्पूर्णानन्दबोधे महति च
पुरूषे स्थापयित्वा निवृत्तम्॥

आशय यह है कि भगवान् के नाम साधकों को निर्मल बनाकर पुण्यवान् बनाता है। परन्तु वह पुण्य स्वर्गिक-सुख भोगार्थ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं है बल्कि गुरु पद द्वय भक्ति ही उसका फल है। साथ ही तत्व बोध करा देने के कारण जन्म व मरण रूप भ्रान्ति-बीज को जलाकर नाम साधक को सनातन प्रसाद में स्थिर करके स्वयं निवृत्त हो जाता है।

चित्तमल शोधन के लिए पावकोपम परमेश्वर के पुनीत नाम को ऋग्वेदादि आगमों का हृदय कहा गया है। नाम निष्ठ भक्तों का यह सिद्धान्त है कि इस कलिकाल में नाम स्मरण ही हरि सन्तुष्टि एवं स्वशोधन के लिये पर्याप्त है। किसी नारायण प्रेमी का इस विषय में यह कितना उत्तम उद्गार है :—

चतुर्णां वेदानां हृदयमिदमाकृष्य हरिणा
चतुर्भिर्यद्वर्णैः, स्फुटमवटि नारायणपदम्।
तदेतद्गायन्तो वयमनिश मात्मानमधुना
पुनीमो जानीमो न हरिपरितोषाय किमपि॥

नाम प्रेमी कहता है कि "नारायण" में चारों अक्षर मानो चारों वेद का हृदय है। भगवान् ने भक्तों के ऊपर कृपा कर यह अवदान दिया है। प्रभु के परितोष एवं अपने को पुनीत करने के लिये यही नाम है। इससे अधिक मैं कुछ नहीं जानता हूँ। भगवान के गुणात्मक तथा कर्मात्मक कोई भी नाम का संकीर्तन समस्त कालुष्य को मिटाने के लिये काफी है। भागवत में इसका स्पष्ट उल्लेख है :—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एतावतालमघनिर्हरणाय पुसां
संकीर्तनं भगवतो गुणकर्मनाम्नाम् ।
विक्रुष्यपुत्रमघवान् यदजामिलोऽपि
नारायणेति म्रियमाणइयायमुक्तिम् ॥

प्रभु के नाम में आये उल्टे अक्षर भी मुँह से निकले तो भी सही अक्षरों के समान ही पुण्य प्रदान करते हैं। बस नामाक्षरों का उच्चारण मात्र होना चाहिए। तुलसी का कितना दृढ़ भाव है—

राम विहाय "मरा" जपते बिगरी सुधरी कवि कोकिल हूँ की।
नामहि ते गज की गनिका की अजामिल की चल गइचल चूकी॥
नाम प्रताप बड़ो कुसमाज बचाई रही पति पाण्डु वधू की।
ताको भलो अजहूँ तुलसी जेहि प्रीति प्रतीति है आखर दूँ की॥

बाल्मीकि, अजामिल, गणिका और गजराज का उद्धार नाम ने ही किया, साथ ही अन्यायपूर्ण दुर्योधन की सभा में द्रौपदी की रक्षा श्रीकृष्ण नाम से ही हुई।

नाम जापकों को इन दस अपराधों से सदा बचना चाहिए। नाम की आड़ में इन अपराधों को होने की पूरी सम्भावना रहती है। आचार्यों ने इसका वर्णन इस प्रकार किया है—

सन्निन्दाऽसतिनामवैभवकथा श्रीशेशयोर्भेदधीः
अश्रद्धाश्रुतिशास्त्रदैशिकगिरां नाम्न्यर्थवादभ्रमः।
नामास्तीतिनिषिद्धवृत्तिविहितः त्यागोहिधर्मान्तरैः
साम्यं नाम्नि जपे शिवस्य च हरेः नामापराधादश॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाम जापकों को यह आवश्यक है कि वे उक्त दस अपराधों से बचें। जैसे वे साधक सन्तों की निन्दा, नाम में विश्वास न रखने वालों के सामने नाम महात्म्य का निदर्शन तथा शिव एवं विष्णु में भेद बुद्धि न करें। मैं नाम जापक हूँ इसलिये वेद शास्त्र की आज्ञा के प्रति अश्रद्धालु न हों। नाम की साहित्य में इतनी बड़ी सराहना मात्र की गई है, ऐसी आशंका न करें। नाम से सब पाप नष्ट हो जायेगा, अतः निसिद्ध कर्म न करें ऐसा सोचे भी नहीं संध्यावन्दनादि विहित कर्म को न छोड़ें तथा शिव एवं हरिनाम के जप की तुलना न करें।

पण्डितराज जगन्नाथ की इस विषय में एक बात और कहकर प्रस्तुत विषय को विश्राम दे रहा हूँ। श्रीकृष्ण नाम जपने के प्रभाव, कवि के शब्दों में किन-किन, रूपों में सामने आते हैं उन्हीं के शब्दों में सुनिए—

वज्रं पापमहीभृतां भवगदोद्रेकस्य सिद्धौषधम्,
मिथ्याज्ञाननिशाविसालतमसःतिग्मांशुविम्बोदयः ।
क्रूरक्लेशमहीरूहां उरूभरज्वालाजटालःशिखी,
द्वारं निर्वृतिसद्मनो विजयते कृष्णेतिवर्णद्वयम् ॥

इस श्लोक से स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण का नाम जापकों के पाप-रूपी पहाड़ को तोड़ने के हेतु बज्र के समान है, भवरोग दूर करने के अचूक औषधि है, अज्ञानरूपी रात का गहरे अन्धकार को नाश करने के लिये सूर्य के समान है, तो जापकों के क्लेशरूपी महावृक्ष को जलाने के लिये ज्वाला से युक्त अग्नि-राशि के समान है। वास्तव में नाम जप ही साधक का मुक्तिद्वार है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शब्दों के माध्यम से चित्रित भगवान् के माङ्मय विग्रह को लोग अपने हृदय-प्रांगण में अवतीर्ण करते हैं। भगवान् का पृथ्वी पर अवतार की तुलना में हृदय में अवतरित नामावतार अधिक स्थायी एवं प्रभावशाली होता है, क्योंकि पृथ्वी पर अवतरित भगवान् के अवतार की स्थिति की एक सीमा होती है। गोस्वामीजी ने भगवान् के बाल रूप का जो वर्णन किया है वह अत्यन्त सजीव है। मनु शतरूपा के प्रसंग में, बाल रूप वर्णन में, तथा जनकपुर की फुलवाड़ी की कथा प्रसंगों में सर्वथा हम प्रभु के पूर्ण रूप का दर्शन करते हैं। रूप बर्णन अति अनूठा है। उन्हीं के शब्दों में लक्ष्मण सहित भगवान् राम के सौन्दर्य की एक छटा का दर्शन करें--

"लता भवन ते प्रगट भये, तेहि अवसर दोउ भाइ।
निकसे जनु जुग बिमल बिधु, जलद पटल बिलगाइ॥"

शोभा सींव सुभग दोउ बीरा। नील पीत जलजाभ शरीरा॥
मोर पंख सिर सोहत नीके। गुच्छ बीच बिच कुसुम कली के॥
भाल तिलक श्रम बिन्दु सुहाए। श्रवन सुभग लोचन छवि छाए॥
बिकच भ्रूकुटि कच घूंघुरवारे। नव सरोज लोचन रत नारे॥
चारु चिबुक नासिका कपोला। हास बिलास लेत मन मोला॥
मुख छवि कहि न जाइ मोहि पाहीं। जो बिलोकि बहु काम लजाहीं॥
उर मनिमाल कम्बु कल ग्रीवा। काम कलभ कर भुजबल सींवा॥
सुमन समेत बाम कर दोना। सांवर कुँवर सखी सुठि लोना॥

केहरि कटिपटपीतधर, सुषमा सील निधान।
देखि भानुकुल भूषणहि, बिसरा सखिन अपान॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नेत्र का विषय है रूप, और नेत्र हैं नेता। मानव का रूप सौन्दर्य में स्वभावतः आकर्षण होता है और होता रहेगा। प्रत्येक क्षण में नवीनता प्रदान करने वाली रमणीयता की खोज में ही हम सब जुटे हुए हैं। ऐसी शाश्वत रमणीयता जहाँ भी उपलब्ध है वह प्रभु से ही सम्बन्धित है "क्षणेक्षणेयन्नवता मुपैति तदेवरूपं रमणीयतायाः।" सत्य सौन्दर्यमें प्रतिक्षण नवीनता देते रहने की असीम क्षमता निहित रहती है। पर सौन्दर्य अवस्था विशेष पर अपना अलग ही महत्व रखता है। बाल-सौन्दर्य की छटा सरलता एवं निष्कपटता से पूर्ण होने के कारण बड़ी ही मनोहारी लगती है। उसमें न तो वासना की गन्ध ही है और न विषमता का महत्व। इसीलिये तो सनकादि बाल-अवस्था में ही सदा रहते हैं। बाल भाव के वर्णन में सूर धरती पर अद्वितीय कवि हैं। संस्कृत में तो इस भाव का विशिष्ठ स्थान है ही।

एक बार नारदजी गोकुल गये। वहाँ देखते क्या हैं "कि यशोदा की गोद में चढ़ने के लिये श्रीकृष्ण उनके चरणों पर लुढ़क रहे हैं" इस दृश्य से नारदजी आश्चर्यचकित होकर कहते हैं—

किं ब्रूमस्त्वां यशोदे कति कति सुकृतक्षेत्रवृन्देषुपूर्वम्,
गत्वाँकिङ्ग् विधानैः कतिकति सुकृतान्यर्जितानि त्वयैव।
नो शक्रोनो स्वयम्भूः नच मदनरिपुः यस्यलेभे प्रसादम्,
तत्पूर्णं ब्रह्म भूमौ विलुठति विलपत् क्रोड़मारोढुकामम्॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे यशोदे ! वास्तव में तुन धन्य हो। पता नहीं कितने तीर्थों में जाकर तुमने पुण्य किया है। प्रत्यक्ष ही है कि जिनके कृपा प्रसाद को ब्रह्मा शिव और इन्द्र भी नहीं प्राप्त कर पाते हैं वही ब्रह्म तुम्हारी गोद में चढ़ने के लिये धरती पर तुम्हारे चरणों में विलाप करता हुआ लुढ़क रहा है। आश्चर्य !

भक्त शिरोमणि कागभुसुण्डीजी जिस समय भगवान् राम के दर्शन करते हैं तो उसका क्या ही हृदयहारी चित्रण गोस्वामीजी की लेखनी से हुआ है : –

बाल विनोद करत रघुराई। बिचरत अजिर जननि सुखदाई ॥
मरकत मृदुल कलेवर श्यामा। अंग-अंग प्रति छवि बहु कामा ॥
नव राजीव अरुण मृदुचरणा। पदज रुचिर नख शशिदुति हरना ॥
ललित अंक कुलिशादिक चारी। नूपुर चारु मधुर रवकारी ॥
चारु पुरट मनिखचित बनाई। कटि किंकिण कल मुखर सुहाई ॥

रेखा त्रय सुन्दर उदर, नाभी रुचिर गंभीर।
उर आयत भ्राजत विविध, बाल विभूषण चीर ॥

अरुण पानि नख कंज मनोहर। बाहु विशाल बिभूषण सुन्दर ॥
कन्ध बाल केहरि दर ग्रीवा। चारु चिबुक आनन छवि सींवा ॥
कल बल वचन अधर अरुणारे। दुइ-दुइ दशन बिसद बरबारे ॥
ललित कपोल मनोहर नासा। सकल सुखद शशिकर सम हांसा ॥
नील कंज लोचन भव मोचन। भ्राजत भाल तिलक गोरोचन ॥
विकट भ्रकुटि सम श्रवण सुहाए। कुंचित कच मेचक छवि छाए ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीत झीनि झगुली तन सोही। किलकनि चितवनि भावति मोही।
रूपराशि नृप अजिर बिहारी। नाचहिं निज प्रतिबिम्ब निहारी॥

वाह! क्या ही सुन्दर बाल छवि का चित्रण है! साधक स्वतः ही इस छवि-निधि में डूबकर तथा उस रूप माधुरी का पान कर अपने को कृतकृत्य अनुभव करते हैं। परमेश्वर की औतिक लीला-कथा श्रवण में साधकों के जितने क्षण गुजरते हैं वे दिव्य हो जाने के कारण काल से प्रभावित नहीं होते हैं, जबकि अन्य वस्तुओं का चिन्तन-क्षण काल कवलित हो जाता है। वेद व्यासजी का कथन है—

आयुर्हरतिवैपुंसां उद्यन्नस्तच्च यन्नसौ।
तस्यर्ते तत्क्षणोनीतः उत्तमश्लोकवार्तया॥

उत्तमश्लोक (भगवान्) की लीला श्रवण में जो क्षण गुजरते हैं वे अमूल्य हो जाते हैं। गोस्वामीजी भी उस घड़ी को धन्य कहते हैं जो सत्संग में व्यतीत होती है—

"धन्य घड़ी सोइ जब सत्संगा।
धन्य जनम द्विज भगति अभंगा॥

"श्रोतव्यः मन्तव्यः निदिध्यासितव्यः" इस सिद्धान्त के अनुसार इस प्रकार के बोध प्रदान करने वाले श्रवण को सर्वोपरि कहा गया है। श्रवण दो प्रकार के होते हैं। प्रथम "अर्थशून्य शब्दश्रवण" जिसमें केवल शब्द ही सुने जाते हैं। द्वितीय श्रवण वह है जिससे सब्द के साथ अर्थ भी स्पष्ट हो। इनमें दूसरे प्रकार के श्रवण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को महत्व विशेष है। ईश्वरीय लीला का श्रवण सभी धर्मों में श्रेष्ठ कहा गया है—

श्रवणं सर्वधर्मेभ्यो वरं मन्ये तपोधनाः।
वैकुण्ठस्थो यतो विष्णुः श्रवणादुपलभ्यते॥

रहस्य यह है कि अर्थ सहित श्रवण में शब्द धारा के भीतर प्रभु का स्वरूप चित्त-पट पर अंकित हो जाता है और साधक प्रभु की वाङ्मयी मूर्ति का दर्शन कर लेता है।

प्रभु का लीलात्मक शब्द-चित्र-रूपी विग्रह जब श्रोता के अन्तःकरण पर अंकित होता है तो वह पुनीत हो जाता है। नित्य प्रभु की लीला को सुनना पवित्र-ज्ञान-यज्ञ है। भागवत में इसका उल्लेख इस प्रकार है

शृण्वतः श्रद्धया नित्यं गृणतश्च स्वचेष्टितम्।
कालेन नातिदीर्घेण भगवान् विशते हृदि॥
प्रविष्टः कर्णरंध्रेण स्वानांभावसरोरुहम्।
धुनोति शमलं कृष्णः सलिलस्य यथा शरत्॥
धौतात्मा पुरुषः कृष्णपादमूलं न मुंचति।
त्यक्तसर्वपरिक्लेशः पान्थः स्वशरणं यथा॥

इससे स्पष्ट है कि जब श्रोता प्रभु की लीला को सुनता है तब कृष्णचन्द्र उसके कर्ण-पथ से शब्दों द्वारा चित्रित रूप में हृदय में प्रविष्ट हो जाते हैं। इसके साथ ही श्रोता के अन्तःकरण को उसी प्रकार निर्मल कर देते हैं जिस प्रकार शरद्ऋतु सरोवर के जल को स्वतः ही निर्मल कर देती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साधक श्रीकृष्ण चरणाश्रित होकर परम शान्ति को प्राप्त करता है। इस स्थिति के बाद साधक प्रभु चरण का फिर कभी भी नहीं छोड़ता है जिस प्रकार घर पहुंचा हुआ यात्री अपने घर को नहीं छोड़ता है।

भक्त ईश्वरीय लीलामृत पान करने में कभी भी तृप्त नहीं होता है। भगवती पावती शंकरजी से कहती हैं—

नाथ तवाननशशिश्रवत कथासुधा रघुवीर।
श्रवण पुटन मन पान करि, नहिं अघात मतिधीर॥

ईश्वरीय लीलामृत पान करने का सौभाग्य सब को नहीं मिलता है। केवल वहा इसका अधिकारी होता है जिसके ऊपर प्रभु की महती कृपा होती है। प्रभु की लीलाअमृत महात्म्य का वर्णन भक्त ध्रुव कितना सुन्दर निम्नांकित श्लोक में करते हैं—

या निर्वृतिस्तनुभृतां तव पादपद्मध्यानात्,
भवज्जनकथा श्रवणेन वा स्यात्।
सा ब्रह्मणि स्वमहिमन्यपि नाथ माभूत्
किंत्वन्तकासि लुलितात् पततां विमानात्।

इसका तात्पर्य यह है कि हरिचरण का ध्यान तथा हरि भक्तों के मुख से निसृत हरिलीलामृत श्रवण से जैसी आनन्दमयी स्थिति की अनुभूति होती है, वैसी स्वयं ब्रह्मा को भगवान् के निर्गुण स्वरूप के चिन्तन में भी प्राप्त नहीं होती है। तो फिर काल की असि से कट कर गिरने वाले विमान में बैठे व्यक्ति को तो तदर्थ शक्ति एवं स्थिति ही क्या है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सनकादि का कथन है कि, "हे प्रभो ! आपके कथामृत को पान करने वाले एवं संकीर्तन में एकान्तिक आनन्द प्राप्त करने में कुशल भक्तजन आपके मुक्ति-प्रसाद की भी कामना नहीं करते हैं सांसारिक विषय तत्वों को तो बात ही क्या है !"

नात्यन्तिकं विगणयन्त्यपि ते प्रसादं
किं त्वन्यदर्पितभयं भ्रुव उन्नयस्ते ।
येऽङ्ग त्वदङ्घ्रिशरणाः भवतः कथायाः
कीर्तन्यतीर्थयशसः कुशला रसज्ञाः ॥

भगवान् के चरितामृत पान करने वालों के सभी ओर से मांगलिक स्थिति बन जाती है। उन्हें कहीं भी संकट का सामना नहीं करना पड़ता है। अतीत जन्मों की सारी बातें स्पष्ट हो जाती हैं। परन्तु यह कथामृत तो कहीं-कहीं पर सन्तों के मुख से ही उपलब्ध होता है। भागवत में शुकदेवजी की स्पष्ट घोषणा है —

कुतोऽशिवं तच्चरणाम्बुजासवं महन्मनस्तो
मुखनिसृतं क्वचित् ।
पिबन्ति ये कर्णपुटैरलं प्रभो देहभृतां
देहकृदस्मृतिच्छिदम् ।

प्रभु लीला के श्रवण सम्बन्धी विषय पर चर्चा करते हुए गोस्वामीजी मानस में स्पष्ट रूप से वर्णन करते हैं कि शुक सनकादि भी प्रभु लीलामृत के लिये लालायित रहते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन मुक्त महामुनि जेऊँ । हरि गुन सुनहिं निरन्तर तेऊँ ॥
जीवन मुक्त ब्रह्म पर कथा सुनहिं हरि जान ।
जे हरि कथा न करहिं रति- तिनके हिय पाषान ॥

हरि कथा रति की कितनी महत्ता है ! इसकी माधुरी गोपी के शब्दों में देखें । एक गोपी का कथन है हरि को तो मैं त्याग सकती हूँ पर हरि कथा को नहीं त्याग सकती हूँ । "दुस्त्यजस्तत् कथार्थः" ।

भक्त जब ईश्वरीय स्वरूप को हृदय में धारण करता है अथवा प्रभु के चरणों को शिरोधार्य करता है, तब ठीक वसुदेवजी के समान जीवन की सात आध्यात्मिक समस्याएँ सरलता से हल हो जाती है । जैसा कि निम्नांकित श्लोक से स्पष्ट है :—

यः प्रेष्णा हृदि मां दधात्यविकलं स्यात्तस्य बन्धच्युतिः
मुक्तिद्वारकवाटमुक्तिरपि तद्रोधिद्विषांलीनता ।
धीपीयूषकरोदयो भवनदीगुल्फप्रमाणोदका
लुप्यद्वृत्ति च गोकुलं करगता माया च तत्र स्थिता ॥

इसका भावार्थ यह है कि जब वसुदेवजी भगवान् श्रीकृष्ण के चरण चमलों को मस्तक पर शिरोधार्य करते हैं, तो क्रमशः उनकी सात समस्याएँ दूर हो जाती हैं । वसुदेवजी कारागार से मुक्त हुए ; उनके द्वार स्वतः ही खुल गए ; पहरेदार सो गये ; बुद्धि खुल गई ; उफनती यमुना भी पार हो गए ; गोकुल के लोग कुछ भी नहीं जान सके और योगमाया भी उनके हाथ में आ गई अर्थात् उनके अधीन हो गई । भगवान् को हृदय में धारण करने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाले भक्तों की भी ऐसी स्थिति हो जाती है। भगवान् ने लीला करके यही स्पष्ट किया है।

× × ×

भगवान् का चतुर्थ विग्रह है, धाम। अयोध्या, चित्रकूट, मथुरा एवं वृन्दावन आदि प्रभु के धाम रूप शरीर हैं। अभी भी ऐसे भक्त हैं जो प्रभु का धाम छोड़कर कहीं नहीं जाते हैं। प्रभु के धाम में रह कर ही साधना करते हैं।

प्रभु की उपासना हेतु भारतीय संस्कृति में सभी दर्शन शास्त्रों का मिलन है। द्वैत अथवा अद्वैत सभी दर्शनों के आचार्यों को उपासना से सम्बन्ध अवश्य ही रखना पड़ता है। प्रभु की उपासना के बिना सारे तत्त्व अपूर्ण ही रहते हैं। गलित भेद वाले एवं जीवन मुक्त व्यक्ति भी उपासना करते हैं। नारदजी ने युधिष्ठिर से तीन प्रकार के अद्वैतवाद की चर्चा की है। भावाद्वैत क्रियाद्वैत तथा द्रव्याद्वैत। भावाद्वैत :—

कार्यकारणयोरैक्यमर्शनं पटतन्तुवत्।
अवस्तुत्वात् विकल्पस्य भावाद्वैतं तदुच्यते॥

इसका तात्पर्य यह है कि कपड़ा कार्य है तथा सूत कारण है। परन्तु कार्य रूप कपड़ा की स्थिति का कारण सूत के अलावा अपना स्वयं का कोई अस्तित्व नहीं है। वस्तुतः कारण ही कार्य है। इसी प्रकार नाम रूपात्मक कार्य में, तात्विक कारण की अपेक्षा व्यवहारिक कौशल का प्राबल्य हो जाता है। तत्त्वतः कारण ही कार्य है। यही भावाद्वैत की विशेषता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोस्वामीजी का यह सिद्धान्त भावाद्वैत परक है :—

जड़ चेतन जग जीव जत, सकल राममय जानि।
बन्दों सबके पद कमल सदा जोरि जुग-पानि॥

क्रियाद्वैत :—इसका निरूपण भक्त नारदजी ने इस प्रकार किया है :—

यद् ब्रह्मणि परे साक्षात् सर्वकर्मसमर्पणम्।
मनो वाक् तनुभिः पार्थ क्रियाद्वैतं तदुच्यते॥

मन, वचन और शरीर से समस्त विधि कार्यों को प्रभु को समर्पण कर देना ही क्रियाद्वैत है। ऐसी स्थिति में कर्म का बन्धन व्यक्ति को नहीं लगता है। इस स्थिति में उस क्रिया की बन्धन-शक्ति उसी प्रकार नष्ट हो जाती है जिस प्रकार भुने अथवा उबाले हुए बीज के अंकुरित होने की शक्ति नष्ट हो जाती है।

द्रव्याद्वैत :—

आत्मजायासुतादीनां अन्येषां सर्वदेहिनाम्।
यत्स्वार्थकामयोरैक्यं द्रव्याद्वैतं तदुच्यते॥

इसका तात्पर्य यह है कि जब मनुष्य शरीर, पुत्र, पत्नी इत्यादि सभी व्यक्तियों के सुख को आत्मसुख समझता है, तब उसे द्रव्याद्वैत कहते हैं।

ज्ञानयुक्त, निरीह एवं जीवनमुक्तात्मा भी सगुणात्मक अंग का चरितामृत पान करने के हेतु द्वैत भूमि पर आ जाते हैं क्योंकि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपसनामृत का पान द्वैत भूमि पर ही होता है। अद्वैत में तो उपास्य एवं उपासक का भेद ही समाप्त हो जाता है।

द्वैतं मोहाय बोधात् प्राक् जातेबोधे मनीषया।
भक्त्यर्थं कल्पितं द्वैतं अद्वैतादपि सुन्दरम्॥

सगुण साकार के चरितामृत पान करने एवं प्रभु की भक्ति हेतु तो अद्वैत से कल्पित द्वैत अच्छा है। वास्तविक द्वैत दुःखद है। उपासना के लिए कल्पित द्वैत अति सुन्दर माना गया है। प्रभु की उपासना तो सर्वजन करणीय है। परम ज्ञानी एवं गलित भेद मति वाले को भी प्रभु की उपासना करनी चाहिए ऐसा शंकराचार्य एवं मधुसूदनजी आदि का आदेश हैं—

विश्वेश्वरोऽपि सुधिया गलितेऽपि भेदे
भावेन भक्तिसहितेन समर्चनीयः।
प्राणेश्वरोश्चतुरया मिलितेऽपि चित्ते
चैलाञ्चलव्यतिकरेण निरीक्षणीयः॥

साधक उपासना से ज्ञानादि समस्त तत्वों को बड़ी सरलता पूर्वक प्राप्त कर लेता है। वास्तव में सिद्धान्त यही है कि उपासना से प्रारम्भ और उपासना में ही अन्तः अर्न्तभाव होता है। ज्ञान कुठारादि के द्वारा पंच कोषात्मक स्वरूपभ्रान्ति का निवारण तो बीच की वस्तु है। भागवत में इसका स्पष्ट उल्लेख इस प्रकार है—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तस्यानया भगवतःपरिकर्मशुद्ध
सत्वात्मनस्तदनुसंस्मरणानुपूर्त्या ।
ज्ञानं विरक्तिमदभ्रान्निशितेन येन
चिच्छेद संशयपदं निजजीवकोषम् ॥
छिन्नान्यधीरधिगतात्मगतिर्निरीहः
तत्तत्यजेऽच्छिनदिदं वयुनेन येन ।
तावन्न योगगतिभिर्यतिरप्रमत्तो
यावद् गदाग्रजकथासु रतिं न कुर्यात् ॥

सेवार्थक "भज्" धातु से क्तिन् प्रत्यय लगाकर भक्ति शब्द बना है। आचार्य के शब्दों में देखिये—

भज्धातोस्तु सेवार्थः प्रेमाक्तिन् प्रत्ययस्य च ।
स्नेहेनभगवत्सेवा भक्तिरित्युच्यते बुधैः ॥

अर्थात् विश्वरूप भगवान् की सेवा ही भक्ति है। प्राणी-सेवा ही सच्ची भगवत् सेवा है। प्राणियों को यथाशक्ति सेवा सहायता करना ही भगवान् की सच्ची पूजा है। "प्रत्येक प्राणी में मैं ही हूँ, अतः इसकी सेवा मेरी सेवा है" यह कथन स्वयं भगवान् का है। भगवान् के अवतार स्वरूप ऋषभदेवजी स्वयं कहते हैं :—

सर्वाणिमद्भिष्ण्यतया भवद्भिश्चराणि
भूतानि सुता ध्रुवाणि ।
सम्भावितव्यानि पदे-पदे वो
विविक्तदृग्भिस्तदुपार्हणं मे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसका सरांश है, "कि समस्त चराचर जगत् के भीतर मैं ही हूँ अतः उसकी सेवा करना ही मेरी सच्ची पूजा है।

जब साधक की चिन्तन-वृत्ति गंगा की धारा के समान लगातार आराध्य के चरणों में लगी हुई होती है, तब उस वृत्ति को भक्ति कहते हैं। आचार्यों की इस सम्बन्ध में निर्म्नांकित मान्यता है :—

द्रुतस्यभगवद्धर्मात् धारावाहिकतां गता।
सर्वेशे मनसोवृत्तिः भक्तिरित्यभिधीयते॥

प्रभु के विरह ताप में लाख के समान जब चित्त पिघल जाता है, तब उस विरह ताप से गले हुए चित्त में प्रभु की जो आकृति बनती है वह कभी भी नहीं मिटती है। भक्त हृदय में प्रभु का वह रूप स्थायी हो जाता है। ममता का केन्द्र जब एक मात्र प्रभु का चरण हो जाता है तब वह साधक त्रिगुणातीत होता है अर्थात् त्रिगुण (सत्व, तम एवं रज) का जादू उस पर नहीं चलता। भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं कहते :—

मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते।
स गुणान् समतीत्यैतान् ब्रह्मभूयाय कल्पते॥
अनन्यममता विष्णौ ममताप्रेमसंगता।
भक्तिरित्युच्यतेभीष्मप्रह्लादोद्धवनारदैः॥

भक्तों की ममता के केन्द्र भगवान् ही होते हैं न कि संसार के विषय। प्रेममूलक अनन्य ममता जो आराध्य से सम्बन्धित हो भक्ति कही जाती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साधकों को साधना के भीतर समस्त इन्द्रियों द्वारा प्रभु के ध्यान, दर्शनादि, सेवा के अलावा, अन्य सभी प्रकार की वस्तु की इच्छा आदि जब कुछ भी नहीं रहती है, बल्कि अपनी ऐन्द्रिय शक्ति के द्वारा प्रभु की सेवा मात्र ही होती है, तब वह भक्ति कहलाती है :—

सर्वोपाधिविनिर्मुक्तं तत्परत्वेन निर्मलम् ।
हृषीकेण हृषीकेशं सेवनं भक्तिरूच्यते ॥

आचार्यों के शब्द में इस प्रकार कहा गया है :—

वास्तविक सुख केवल बुद्धि से ही अनुभव किया जा सकता है न कि इन्द्रियों से। इन्द्रियों द्वारा अनुभूत सुख तो सांसारिक विषय पदार्थों से ही सम्बन्धित हैं जो क्षणिक तथा परिणाम में दुखद हैं।

गीता के शब्दों में स्पष्ट उल्लेख हैं :—

सुखमात्यन्तिकंयत्तत् बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम् ।

अतः साधक को अन्य सभी अभिलाषाओं को त्याग कर, प्रकृति प्रवाह से प्राप्त वस्तुओं को स्वीकार कर सन्तुष्ट रहते हुए, भगवान् कृष्ण का अनुशीलन करते रहना चाहिये। इस प्रकार के सजीव भाव को ही भक्ति कहीं गयी है।

अन्याभिलाषिताशून्यं ज्ञानकर्माद्यनावृतम् ।
आनुकूल्येन कृष्णानुशीलनं भक्तिरूच्यते ॥

ज्ञान और कर्मों से अनाच्छन्न, समस्त विषयाभिलाषा शून्य एवं प्रभु की कृपा के प्रति अनुकूल सिद्धान्त में एकनिष्ठ होकर,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रभु का चिन्तन करना ही भक्ति कहलाती है। आचार्यों ने ईश्वर भक्ति में छै गुण बतलाए हैं इन विशेषताओं के कारण भक्ति सबके लिये प्राप्त करने योग्य हो जाती है। वे विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :—

क्लेशघ्नी सुभदा मोक्षलघुताकृत सुदुर्लभा।
सान्द्रानन्द विशेषात्मा श्रीकृष्णाकर्षणीच सा॥

इसका तात्पर्य है कि कृष्ण भक्ति साधकों के समस्त कष्टों को दूर कर देती है, जीवन को मंगलमय बनाती है, मोक्ष की न्यूनता सिद्ध कर देती है। भक्ति स्वयं आनन्दमयी हैं। विशेष गुण से संयुक्त होने के साथ श्री कृष्ण चन्द्र को भी बरबस आकर्षित कर लेती है।

इसी प्रकार भक्ति में जिन बाधाओं की पूरी सम्भावना रहती है उनको भी आचार्यों ने चर्चा की है। ये बाधायें प्रायः पांच प्रकार की हैं। साधकों को इन बाधाओं से सदा बचना चाहिए।

जाति विद्या महत्वं च रूपयौवनमेवच।
यत्नेन वै परित्याज्यं पंचते भक्तिकण्टकाः।

साधना जगत में भक्तों के सामने जाति, विद्या, प्रतिष्ठा, रूप, एवं यौवन सबन्धी बाधाएँ आती रहती है अतः साधक को इन काँटों से बचना चाहिये। भक्ति जगत् में दीनता एवं करुणा की प्रधानता रहती है। भक्ति बड़ी ही दीनता पूर्वक करुण स्वर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं अपने प्रभु के सामने हृदय की सारी बातें स्पष्ट रूप से रख देता है। उसके हृदय में छल एवं कपट का कोई स्थान नहीं रहता है। पण्डितराज जगन्नाथ का कथन है—

नितरां नरकेपिसादतः किमु हीनं गलितत्रपस्यमे।
भगवान् कुरुसूक्ष्ममीक्षणं परतस्त्वां जनता किमालपेत्॥

भक्त कहता है, कि प्रभो! मैं तो निर्लज्ज हूँ अनेक नारकीय जन्म से गुजरता चला आ रहा हूँ। मुझे क्या शर्म? परन्तु प्रभु आप तो जरा गंभीरता पूर्वक विचार करें कि आप जैसे कृपालु को जानता क्या कहेगी? हम आपके पापी पुत्र हैं। आप मेरा उद्धार करके अपनी दयालुता की प्रतिष्ठा की रक्षा करें क्योंकि ऐसा करने से दोनों की मर्यादाओं की रक्षा हो सकेगी।

नितरां विनयेन पृच्छ्यते सुविचार्योत्तरमत्र यच्छमे।
करितो गिरितो गुरूरयं त्वरितोनोद्धरसे यदद्यमां॥

भक्त प्रभु के सामने एक निवेदन करता है, "प्रभो! मैं बड़ी विनम्रता से पूछताहूँ, क्या मै हाथी अथवा गोवर्द्धन पहाड़ की तुलना में अधिक भारीहूँ जिसके कारण आप मेरा उद्धार शीघ्रातिशीघ्र नहीं कर रहे हैं?

अयमप्यधमोऽपि निर्गुणे दयनीयो भवता दयानिधे।
क्षमतां फणिनां विषानलं किमुनानन्दयिता हि चन्दनः॥

भक्त अपने ऊपर भगवान की एक तरफा दया करने के लिये सप्रमाण निवेदन कर कहता है, प्रभो मैं अधम हुँ, समो सद्गुणों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से रहित हुँ, फिर भी आप जैसे दयालु की दया तो मेरे ऊपर होनी ही चाहिए ।,, वह प्रमाण देकर कहता है। प्रभो यदि चन्दन के वृक्ष में लिपटा भुजंग जहर उगलता है तो क्या चन्दन उसे अपनी शीतलता नहीं देता है ? अवश्य ही देता है। उसी प्रकार हम चाहे जैसे हो, आपकी दया तो मुझ पर होनी ही चाहिये।" "भागो भक्तिः" इस व्युत्पत्ति के अनुसार भक्ति का अर्थ विश्वरूप ईश्वर के लिये सेवा का वितरन करना है। वितरण से ही वैतरणी पार होना है। "वितरणेन तीर्यते पारं गम्यते या सा अथवा विगता तरणिः नौः यत्र।" वहाँ पार करने के लिये नौका नहीं है अपितु जीवन में सेवा वितरण से ही वह वैतरणी नदी पार की जा सकता है। व्यक्ति संचय में रुचि रखता है पर उस संचित धन को यथासमय लोक सेवा में लगाने से उदासीन रहता है। वितरण से धन पवित्र होता है। वरना वह अति कष्टमय होता है। अतिथि सेवा में न लगाया गया धन इसी प्रकार अपवित्र है जैसे ईश्वर चिन्तन में न लगाई गई वाणी काक तीर्थवत् (कौआ जूठन) होती है। भागवत में स्पष्ट उल्लेख है—

वित्त त्वतोर्थीकृत मंगवाचं हीनां मया रक्षति दुःखदुःखी ॥

जो लोग वाणी को हरिचर्या में और धन को लोक सेवा में नहीं लगाते हैं वे दुखी जाते हैं। संचय करके यदि लोग उसे लोक सेवार्थ वितरण नहीं करते हैं तो उनसे यह धन भी लीया जाता है। समुद्र इसका प्रत्यक्ष प्रयाण है। सागर ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौदह रत्नों को छिपाया था पर देव एवं दानवों ने मिलकर उसका मन्थन करके उन रत्नों को निकाल लिया। तभी तो समुद्र से एक कवि कहता है—

अददानात् अन्यस्मै देवैः प्रमथ्य वोरंस्त्वत्।
अर्णव ! साधु जगृहिरे चिरसंचितचित्ररत्नानि ॥

हे सागर ! "तुमने स्वयं रत्नों का वितरण नहीं किया, अतः देव तथा दानवों ने मिलकर तुम से रत्न ले लिए; उचित ही किया।"

भक्ति जगत् में जाति, विद्या आदि का अभिमान नहीं होना चाहिए। दीनता एवं अपने सर्वस्वसमर्पण से ईश्वर शीघ्र दर्शन देते हैं। निष्कपट प्रीति ही एक मात्र प्रभु प्राप्ति का कारण होता है। किसी भक्त का कितना सजीव चित्रण है देखिये—

गोपालांगण कर्दमेषु विहरन् विप्राध्वरे लज्जसे,
ब्रूषे गोवृष हूँ कृतैः स्तुतिशतैः मौनं विधत्से सताम्।
दास्यं गोकुलपुंश्चलीषु कुरूषे स्वाम्यञ्चदान्तात्मसु,
ज्ञातं कृष्ण ! तवांघ्रिपंकजयुगं प्रेमैकलभ्यंमुहुः ॥

हे कृष्ण ! कीचड़ भरे गोप ग्वालों के आँगन में आप स्वयं जाकर उन्हें बुलाते हैं, पर ब्राह्मणों के यज्ञ मे जाने से संकोच करते हैं क्योंकि यज्ञ में कुछ अभिमान की गन्ध है। गायों के हुंकार मात्र से आप बोलने लगते हैं पर बड़े-बड़े स्तुति कर्ताओं की सैकड़ों स्तुति करने पर भी आप मौन रहते हैं। गोपियों की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दासता करना आपको स्वीकार है पर मननशील योगियों का स्वामी बनना भी आपको पसन्द नहीं है। इससे ज्ञात होता है कि आप केवल प्रेम से ही मिल सकते है। गोस्वामीजी के शब्दों में भी—

"रामहि केवल प्रेम पियारा। जानि लेहु जो जाननि हारा।"

इस प्रकार युगान्तकारी एवं समन्वयवाद के पोषक कवि एवं भक्त तुलसीदासजी ने रामचरितमानस में मर्यादित, सुसंगठित धर्म, नीति, शान्ति; शील एवं सुमनि के आधार पर परिपुष्ट मानव जीवन के विकास को सर्वोच्च महत्ता दी है जिसमें भक्ति के सभी अंगों एवं तत्वों का सांगोपांग वेद, शास्त्र, पुराण तथा दर्शन की पृष्ठभूमि में तात्विक विवेचन कर उन्हें सरस एवं हृदयगामी रूप से चित्रित किया है। क्या विद्वान् क्या ज्ञानी क्या कर्मकाण्ड के पण्डित तथा भक्त सभी तुलसीदास की रामचरितरूपी मानसी-गंगा में अवगाहन कर अपने को धन्य मानते हैं।

विक्टोरिया सत्संग परिषद् की यह द्वितीय प्रकाशन अपने में अनूठी है जिसमें मानस की सभी स्तुतियों का विवेचन, उनके नक्षत्रों, देवताओं, तारों तथा फलश्रुति सहित किया गया है।

इस कृति को आपलोगों के सम्मुख प्रस्तुत करने में प्रमुख रूप से आर्थिक सहयोग समस्त परिषद् के सज्जनों द्वारा प्रदान किया गया है। जिसके लिए वे विशेष रूप से धन्यवाद के पात्र हैं इसके अतिरिक्त मैं श्री मुन्नीलाल शुक्ला सहायक निर्देशक राजस्थान सूचना केन्द्र, कलकत्ता का भी आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यवस्थित रूप देने में स्तुत्य सहयोग प्रदान किया है। पुस्तक के विभिन्न पृष्ठों के प्रूफ देखने एवं सुव्यवस्थित करके प्रत्येक को ठीक करने में जिस तन्मयता का परिचय श्री महेन्द्र पाण्डेय ने दिया है वह सराहनीय है। साथ ही श्री चम्पालाल कोठारी, 'सचिव' विक्टोरिया सत्संग परिषद् एवं अन्य मित्रों का धन्यवाद दिए बिना नहीं रह सकता जिनकी सौजन्य से इस पुस्तक को लिखने की प्रेरणा प्राप्त हुई। पुस्तक को प्रकाशित करने में काफी सावधानी बरती गई है फिर भी सम्भवतया कुछ त्रुटियाँ रह सकती है जिसके लिए सुझावों का सदा ही स्वागत है।

पुस्तक में सन्तों के पद एवं भजनों की १६५ माला भी सम्मिलित की गई है जिनमें भक्त तुलसीदास को विनय पत्रिका के भी काफी गेय पद भी हैं जिनका अपना अलग ही लालित्य है। स्तुतियों एवं भजनों की शृंखला से सुशोभित यह कृति यदि लोगों की रुचियों का परिष्कार कर उन्हें भगवदाराधना के मार्ग पर अग्रसर करती है, तो मैं अपने परिश्रम को सफल मानूँगा तथा इसी में पुस्तक की गरिमा निहित है।

विनीत :

गुलाबनाथ झा (व्यास)
विक्टोरिया सत्संग परिषद्
कलकत्ता मैदान

Resi :—
30/1D, Biden Row
Calcutta-6
(infront of Beaden Street
Post Offic)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वन्दना

प्रातः पाणिदर्शनम्

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम्॥

पृथ्वी प्रार्थना

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डले।
विष्णुपत्निनमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे॥

ब्रह्मविद्या-पुरी-प्रार्थना

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः॥

पञ्चप्रपन्ना महाभक्ता

अहल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा।
पञ्चकं ना स्मरेन्नित्यं महापातकनाशकम्॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रातः स्मरणीय भगवद्भक्त

प्रह्लाद नारद पराशर-पुण्डरीक
व्यासाम्बरीष-शुकशौनकभीष्मदाल्भ्यान् ।
रुक्मांगदार्जुन वसिष्ठ विभीषणादीन्
पुण्यानिमान् परमभागवतान् स्मरामि ॥

तुलसी-वन्दना

विष्णुभक्तिप्रदे देवि सत्यवत्यै नमो नमः ।
वृन्दायै तुलसीदेव्यै प्रियायै केशवस्य च ॥

तुलसीमहात्म्य

या दृष्टा निखिलाघसंघशमनी स्पृष्टा वपुः पावनी ।
रोगाणामभिवन्दितानिरसनी सिक्तान्तकत्रासिनी ॥
प्रत्यासत्यभिधायिनी भगवतः कृष्णस्य संरोपिता ।
न्यस्तातच्चरणे विमुक्तिफलदा तस्यै तुलस्यै नमः ॥

गणेश वन्दना

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

M9

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कामार्थसिद्धये ॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदंतं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥
लंबोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेवच ।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टकम् ॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः ।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम् ॥

श्रीराम वन्दना

ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं
तीर्थास्पदं शिवविरिंचिनुतं शरण्यम् ।
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतम्
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥
त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सित राज्यलक्ष्मीम्
धर्मिष्ठआर्यवचसा यदगादरण्यम् ।

मुमुक्षु भवन ... आगत क्रमांक ... 23423 ... दिनांक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावत्
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गम्
सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महासायकचारुचापं
नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥

मातारामो मत्पिता रामचन्द्रः स्वामीरामो मत्सखारामचन्द्रः ।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुः नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसास्मरामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसागृणामि ।
श्रीरामचन्द्र चरणौ सिरसा नमामि
श्रीरामचन्द्र चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥

दुर्वादलद्युतितनुं तरुणाब्जनेत्रम् ।
हेमाम्बरं वरविभूषणभूषिताङ्गम् ॥
कंदर्पकोटिकमनीयकिशोरमूर्तिम् ।
संपूरकम् नर ! सदा भज जानकीशम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपदामपहन्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाऽभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥
आर्तानामार्त्तिहर्तारं भीतानामभयनाशनम् ।
द्विषतां कालदण्डं तं रामचन्द्रं नमाम्यहम् ॥

श्रीकृष्ण वन्दना

बर्हापीडं नटवरवपुः कर्णयोः कर्णिकारं
बिभ्रद्वासः कनककपिशं वैजयन्तीं च मालाम् ।
रन्ध्रान् वेणोरधरसुधया पूरयन् गोपवृन्दैः
वृन्दारण्यं स्वपदरमणं प्राविशद् गीतकीर्तिः ॥
वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात् ।
पीताम्बरादरुणविम्बफलाधरोष्ठात् ।
पूर्णेन्दु सुन्दरमुखादरविन्दनेत्रात्
कृष्णात्परं किमपि तत्वमहं न जाने ॥
कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ।
प्रणतः क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः
वसुदेवसुतंदेवं कंसचाणूरमर्दनम् ।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विष्णु-वन्दना

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं ।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ॥
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं ।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

ब्रह्म वन्दना

यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरूतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै
र्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगा ।
ध्यानावस्थिततद्गतेनमनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः ॥
मूकं करोति वाचालं पंगुंलंघयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम् ॥

श्री राधा वन्दना

यत्पादपद्मनखचन्द्रमणिच्छटायाः
विस्फूर्जितं किमपि गोपवधूष्वदर्शि ।
पूर्णानुरागरससागरसारमूर्त्तिः
सा राधिका मयि कदापि कृपां करोतु ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वृन्दावनेश्वरि तवैवपदारविन्दं-
प्रेमामृतैकमकरन्दरसौघपूर्णम् ।
ह्यर्पितं मधुपते; स्मरतापमुग्रं-
निर्वापयत्परमशीतलमाश्रयामि ॥

हे राधे वृषभानुभूपतनये हेपूर्णचन्द्रानने
हे कान्ते कमनीयकोकिलरवे वृन्दावनाधीश्वरि ।
हे मत्प्राणपरायणे च रसिके हे सर्वयूथेश्वरि
आगत्य त्वरितं प्रतप्तमनिशं मां दीनमानन्दय ।

श्री दुर्गा वन्दना

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजन-प्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नतास्म परिपालय देवि विश्वम् ॥
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभांददासि ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि कात्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नव दुर्गा वन्दना

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतूर्थकम् ॥

पञ्चमं स्कंदमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ॥

नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गा प्रकीर्तिताः ।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैवमहात्मना ॥

सरस्वती वन्दना

सर्वमङ्गलमांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यंम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥

महालक्ष्म नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि ।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ॥

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता ।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ॥

या ब्रह्माच्युतशंङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदावन्दिता ।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री शिव वन्दना

यस्याङ्के च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट् ।
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकरः पातुमाम् ॥

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरूं वन्दे जगत्कारणं
वन्देपन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनांपतिम् ।
वन्दे सूर्यशशांकवह्निनयनम् वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम् ॥

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पञ्चवक्त्रंत्रिनेत्रम्
शूलं वज्रं च खड्गं परसुमभयदं दक्षिणाङ्गे वहन्तम् ।
नागं पाशं च घण्टाडमरूकसहितं सांकुशं वामभागे
नानालंङ्कारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ॥

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरूवरशाखालेखिनी पत्रमूर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्री शैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारे परमेश्वरम् ॥
परल्यां वैजनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम् ।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारूकावने ॥
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकंगौतमीतटे ।
हिमालये तु केदारं घुष्मेशं तु शिवालये ॥
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः ।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेनविनश्यति ॥

अवतार वन्दना

मत्स्यं कूर्मं च वाराहं नारसिंह च वावनम् ।
रामं रामं च कृष्णं च बुद्धं कल्कि नमोस्तुते ॥
नौमि नारायणं नारदं कौमारं च कापिलम् ।
ऋषभं यज्ञपुरुषं दत्तात्रेयं पृथुं तथा ॥
धन्वन्तरिं च हंसं च मोहिनीम् व्यासमेव च ।
हयग्रीवं हरिंचैव भूयोभूयो नमाम्यहम् ।

नवग्रह वन्दना

ब्रह्मामुरारिः स्त्रीपुरान्तकारिः भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः कुर्वंतु सर्वेममसुप्रभातम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री सूर्य वन्दना

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम् मर्त्यञ्च ।
हिरण्येन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन ॥

नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे ।
जगत्सवित्रे शुचये नमस्ते कर्मदायिने ॥

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ॥

आदित्यः प्रथमं नाम द्वितीयं तु दिवाकरः ।
तृतीयं भास्करः प्रोक्तं चतुर्थं तु प्रभाकरः ।
पञ्चमं तु सहस्रांशुः षष्ठ त्रैलोक्यलोचनः ।
सप्तमं हरिदश्वश्च अष्टमं च विभावसुः ॥
नवमं दिनकरः प्रोक्ता दशमं द्वादशात्मकः ।
एकादशं त्रयोमूर्त्तिः द्वादशं सूर्य एव च ।

द्वादशैतानि नामानि प्रातः काले पठेन्नरः ।
दुःस्वप्न नाशनं सद्यः सर्वसिद्धिः प्रजायते ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री हनुमान् वन्दना

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियदूत वातजातं नमामि ॥
उल्लंघ्यसिन्धोः सलिलंसलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः ।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

सो०—प्रनवउँ पवनकुमार खल वन पावक ग्यानघन ।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ॥

गुरु स्तुति

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुःगुरुर्देवोमहेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परंब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥
अखंड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिः ।
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम् ॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरून्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः ॥

नमोस्त्वऽनंताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरूबाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटि युगधारिणे नमः ॥

श्री शुकदेव वन्दना

यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेत कृत्यं द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव । पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदुस्त सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोऽस्मि ।

यः स्वानुभावमखिलश्रुति सारमेक,
मध्यात्मदीपमतितितीर्षतां तमोऽन्धम् ।
संसारिणां करूणयाऽऽहपुराणगुह्यं
तं व्याससुनुमुपयामि गुरुं मुनीनाम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रवचनारम्भ में दैनिक प्रार्थना

नारायणं नमस्कृत्य नर चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥

नमोऽस्तु ते व्यास विशालबुद्धे
फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र ।
येन त्वया भारततैलपूर्णः
प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः ॥

मानापनोदनविनोदनते गिरीशे
भासेव संकुचितयोरूचितं तदिन्दोः ।
भेत्तुं भवानिशचित दुरितं भवानि !
नम्रीभवानि घनमंघ्रिसरोजयोस्ते ॥

हे ब्रह्मविद्या की उपदेशिका शिवशक्तिरूपा भवानी ! आपके पद-कमलों को, संसार में सदा से संचित पापों को नष्ट करने के लिए, मैं नतमस्तक होकर प्रणाम करता हूँ । आपके अनुग्रह रूप शिव भालेन्दु से द्वैतभाव रूपी भववारिज सम्पुटित हो जाता है ।

वन्दे विदेहतनयापदपुण्डरीकं
कैशोरसौरभसमाहृत योगिचित्तम् ।
हन्तुं त्रितापमनिशं मुनिहंससेव्यम्
सन्मानशालि परिपीतपरागपुञ्जम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं विदेह राज की पुत्री जगन्माता जानकी के चरण कमलों को सविनय प्रणाम करता हूँ। जिनके नव सौरभ से योगियों का चित्त आकर्षित हो जाता है एवं जो मुनिजन सेवित सम्मानशील परागपुंजों से परिपूर्ण हैं, वे चरणारविन्द हमारे त्रिताप को हरण कर लेवें।

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौयथाऽहेर्भ्रमः।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावताम्
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम्॥

सारा संसार जिनकी माया शक्ति के अधीन है और देवता दानव भी जिनके वशवर्ती हैं तथा जिन की सत्यता से परिवर्तनशील जगत् सत्य प्रतीत होता है, जैसे रस्सी में सही ज्ञान के अभाव से सांप की प्रतीति होती है। एकमात्र जिनके चरण ही भवसागर से पार होने के सही इच्छुकों के लिए प्लवरूप है तथा जो सम्पूर्ण कारणों से परे सर्वसमर्थ है एवं सुखस्वरूप 'राम' जिनका नाम है, मैं उन हरि की वन्दना करता हूँ।

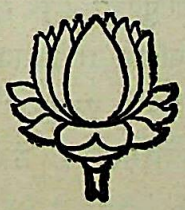

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पारायण विधि

श्रीरामचरितमानसका विधिपूर्वक पाठ करने वाले महानुभावों को पाठारम्भ के पूर्व श्रीतुलसीदासजी, श्रीवाल्मीकिजी, श्रीशिवजी तथा श्रीहनुमान्‌जी का आवाहन पूजन करने के पश्चात् तीनों भाइयों सहित श्रीसीतारामजी का आवाहन, षोडशोपचार पूजन और ध्यान करना चाहिए। तदनन्तर पाठ का आरम्भ करना चाहिए। सबके आवाहन पूजन और ध्यान के मन्त्र क्रमशः नीचे लिखे जाते हैं :—

अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सवाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

अथ संकल्पः

ओम् विष्णुर्विष्णुः विष्णुः। श्रीपरमात्मनः पुराणपुरुषोत्तमस्य श्रीविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्री ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे सप्तमे वैवश्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बुद्वीपे भारत वर्षे भरत खण्डे आर्यावर्तान्तर्गत आर्य्यावर्तैक देशे पुण्यक्षेत्रे बौद्धावतारे वर्तमाने यथानाम संवत्सरे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक दिने यथा यथा राशिस्थितेषुग्रहेषु अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुकनामा मम कायिक वाचिक मानसिक तापोपशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्ष चतुर्विधपुरुषार्थ सिद्धर्थं विश्व कल्याणार्थं च नवरात्रौ रामादिसपर्यापूर्वकम् मूल रामचरितमानसपाठं तदंगत्वेन रामस्तुतिपाठं च अहं करिष्ये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ आवाहनमन्त्रः

तुलसीक नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुचिव्रत
नैर्ऋत्य उपविश्येदं पूजनं प्रतिगृह्यताम् ॥१॥

ॐ तुलसीदासाय नमः

श्रीवाल्मीकि नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुभप्रद ।
उत्तरपूर्वयोर्मध्ये तिष्ठ गृह्णीष्व मेऽर्चनम् । २॥

ॐ वाल्मीकाय नमः

गौरीपते नमस्तुभ्यमिहागच्छ महेश्वर ।
पूर्वदक्षिणयोर्मध्ये तिष्ठ पूजां गृहाण मे ॥३॥

ॐ गौरीपतये नमः

श्रीलक्ष्मण नमस्तुभ्यमिहागच्छ सहप्रियः ।
याम्यभागे समातिष्ठ पूजनं संगृहाण मे ॥४॥

ॐ श्रीसपत्नीकाय लक्ष्मणाय नमः

श्री शत्रुघ्न नमस्तुभ्यमिहागच्छ सहप्रियः ।
पीठस्य पश्चिमे भागे पूजनं स्वीकुरुष्व मे ॥५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ॐ श्रीसपत्नीकाय शत्रुघ्नाय नमः

श्रीभरत नमस्तुभ्यमिहागच्छ सहप्रियः ।
पीठकस्योत्तरे भागे तिष्ठ पूजां गृहाण मे ॥६।

ॐ श्रीसपत्नीकाय भरताय नमः

श्री हनुमन्नमस्तुभ्यमिहागच्छ कृपानिधे ।
पूर्वभागे समातिष्ठ पूजनं स्वीकुरु प्रभो ॥७॥

ॐ हनुमते नमः

अथ प्रधानपूजा च कर्तव्या विधिपूर्वकम् ।
पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा तु ध्यानं कुर्यात्परस्य च ।८।

रक्ताम्भोजदलाभिरामनयनं पीताम्बरालङ्कृतं
श्यामाङ्गं द्विभुजं प्रसन्नवदनं श्री सीतया शोभितम् ।
कारुण्यामृतसागरं प्रियगणैर्भ्रात्रादिभिर्भावितं ।
वन्दे विष्णुशिवादिसेव्यमनिशं भक्तेष्टसिद्धिप्रदम् ॥९॥

आगच्छ जानकीनाथ जानक्या सह राघव ।
गृहाण मम पूजां च वायुपुत्रादिभिर्युतः ॥१०॥

सुवर्णरचितं राम दिव्यास्तरणशोभितम् ।
आसनं हि मया दत्तं गृहाण मणिचित्रितम् ॥११॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ पुष्पांजलिः

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानिधर्म्माणि प्रथमान्यासन्।
तेहनाकंमहिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥
सेवान्तिकावकुल चम्पकपाटलाब्जैः पुन्नागजातिकरवीर रसालपुष्पैः। विल्व प्रवाल तुलसीदल मंजरीभिः त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद॥ नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद् भवानि च।

पुष्पाञ्जलि मया दत्तं गृहाण परमेश्वर। इतिमन्त्र पुष्पांजलि समर्पयामि।

प्रार्थना

पापोऽहं पाप कर्माऽहं पापात्मा पापसम्भवः।
त्राहि मां सर्वदा राम सर्वपापहरो भव॥

अथ विनियोगः

ॐ अस्य श्री मन्मानसरामायणश्रीरामचरितस्य श्री शिवकागशुशुंडियाज्ञवल्क्य गोस्वामितुलसीदासा ऋषयः श्रीसीतारामो देवता श्रीरामनाम बीजं भवरोगहरी भक्तिः शक्तिः मम नियन्त्रिताशेषविघ्नतया श्रीसीतारामप्रीति-पूर्वक सकलमनोरथसिद्ध्यर्थं पाठे विनियोगः॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथआचमनम्

श्रीसीतारामाय नमः । श्रीरामचन्द्राय नमः ।
श्रीरामभद्राय नमः । इति मन्त्रत्रितयेन आचमनं कुर्यात् ।
श्रीयुगलबीजमन्त्रेण प्राणायामं कुर्यात् ॥

अथ करन्यासः

जग मंगल गुनग्राम राम के । दानि मुकुति धन धरम धाम के ॥

अंगुष्ठाभ्यां नमः

राम राम कहि जे जमुहाहीं । तिन्हहि न पापपुंज समुहाहीं ॥

तर्जनीभ्यां नमः

राम सकल नामन्ह ते अधिका । होउ नाथ अघ खग गन बधिका ॥

मध्यमाभ्यां नमः

उमा दारु जोषित की नाईं । सबहि नचावत रामु गोसाईं ॥

अनामिकाभ्यां नमः

सन्मुख होइ जीव मोहि जबहीं । जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं ॥

कनिष्ठिकाभ्यां नमः

मामभिरक्षय रघुकुलनायक । धृत बर चाप रुचिर कर सायक ॥

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

इति करन्यासः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ हृदयादिन्यासः

अग मंगल गुनग्राम राम के। दानि मुकुति धन धरम धाम के॥

हृदयाय नमः

राम राम कहि जे जमुहाहीं। तिन्हहि न पापपूंज समुहाहीं॥

शिरसे स्वाहा

राम सकल नामन्ह ते अधिका। होउ नाथ अघ खग गन बधिका॥

शिखायै वषट्

उमा दारु जोषित की नाईं। सबहि नचावत रामु गोसाईं॥

कवचाय हुम्

सन्मुख होइ जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं॥

नेत्राभ्यां वौषट्

मामभिरक्षय रघुकुलनायक। धृत बर चाप रुचिर कर सायक॥

अस्त्राय फट्। इति हृदयादिन्यासः

अथ ध्यानम्

मामवलोकय पंकजलोचन। कृपा बिलोकनि सोच बिमोचन॥
नील तामरस स्याम काम अरि। हृदय कंज मकरंद मधुप हरि॥
जातुधान बरुथ बल भंजन। मुनि सज्जन रंजन अघ गंजन॥
भूसुर ससि नव बृंद बलाहक। असरन सरन दीनजन गाहक॥
भुजबल बिपुल भार महि खंडित। खरदूषन बिराध बध पंडित॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रावनारि सुखरूप भूपबर। जय दशरथ कुल कुमुद सुधाकर।।
सुजस पुरान विदित निगमागम। गावत सुर मुनि संत समागम।।
काहनीक व्यलीक मद खंडन। सब विधि कुसल कोसला मंडन।।
कलि मल मथन नाम ममताहन। तुलसिदास प्रभु पाहि प्रनतजन।।

इति ध्यानम्-

प्रसंग :—भगवान् शंकर से प्रेरणा प्राप्त कर प्रभु के रण लीला से मोह ग्रस्त गरुड़ जो कागभुशुण्डिजी के आश्रम नीलगिरि पर्वत पर जाते हैं। वहाँ जाने पर भुशुण्डिजी खगेश का स्वागत करते हैं। गरुड़ की राम कथा कहने के लिये सुरुचिपूर्ण इच्छा देखकर काग ने उन्हें मानस की पूरी कथा सुनाई। इस अवतरण में मानस के सारे प्रसंगों का निदर्शन किया गया है।

॥ मूल मानस पाठ प्रारम्भ ॥

(उ० का० दोहा नं० ६२ से)

—: चौ० :—

गयउ गरुड़ जहँ बसइ भुसुंडा। मति अकुंठ हरि भगति अखंडा।।
देखि सैल प्रसन्न मन भयऊ। माया मोह सोच सब गयऊ।।
करि तड़ाग मज्जन जलपाना। बट तर गयउ हृदयँ हरसाना।।
बृद्ध-बृद्ध बिहंग तहँ आए। सुनै राम के चरित सुहाए।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कथा अरंभ करै सोइ चाहा। तेही समय गयउ खगनाहा॥
आवत देखि सकल खगराजा। हरषेउ बायस सहित समाजा॥
अति आदर खगपति कर कीन्हा। स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा॥
करि पूजा समेत अनुरागा। मधुर बचन तब बोलेउ कागा॥

दो० :—नाथ कृतारथ भयउँ मैं तव दरसन खगराज।
आयसु देहु सो करौं अब, प्रभु आयहु केहि काज।
सदा कृतारथ रूप तुम्ह, कह मृदु बचन खगेस।
जेहि कै अस्तुति सादर, निज मुख कीन्हि महेस॥

—: चौपाई :—

सुनहु तात जेहि कारन आयउँ। सो सब भयउ दरस तव पायउँ॥
देखि परम पावन तव आश्रम। गयउ मोह संसय नाना भ्रम॥
अब श्रीराम कथा अति पावनि। सदा सुखद दुख पुंज नसावनि॥
सादर तात सुनावहु मोही। बार-बार बिनवउँ प्रभु तोही॥
सुनत गरुड़ कै गिरा बिनीता। सरल सुप्रेम सुखद सुपुनीता॥
भयउ तासु मन परम उछाहा। लाग कहै रघुपति गुन गाहा॥
प्रथमहिं अति अनुराग भवानी। रामचरित सर कहेसि बखानी॥
पुनि नारद कर मोह अपारा। कहेसि बहुरि रावन अवतारा॥
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई। तब सिसु चरित कहेसि मन लाई॥

दो० :—बालचरित कहि बिबिधि बिधि, मन महँ परम उछाह॥
रिषि आगवन कहेसि पुनि श्री रघुबीर बिबाह॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

—:चौपाई:—

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा। पुनि नृप बचन राज-रस भंगा॥
पुरबासिन्ह कर बिरह बिषादा। कहेसि राम लछिमन संबादा॥
बिपिन गवन केवट अनुरागा। सुरसरि उतरि निवास प्रयागा।
बाल्मीकि प्रभु मिलन बखाना। चित्रकूट जिमि बस भगवाना॥
सचिवागवन नगर नृप मरना। भरतागवन प्रेम बहु बरना॥
करि नृप क्रिया संग पुरबासी। भरत गए जहँ प्रभु सुखरासी॥
पुनि रघुपति बहुबिधि समुझाए। लै पादुका अवधपुर आए॥
भरत रहनि सुरपति सुत करनी। प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि बरनी॥

दो०:—कहि बिराध बध जेहि बिधि, देह तजी सरभंग।
बरनि सुतीछन प्रीति पुनि, प्रभु अगस्ति सतसंग॥

—: चौपाई :—

कहि दंडक बन पावनताई। गीध मइत्री पुनि तेहिं गाई॥
पुनि प्रभु पंचबटीं कृत बासा। भंजी सकल मुनिन्ह की त्रासा॥
पुनि लछिमन उपदेश अनूपा। सूपनखा जिमि कीन्हि कुरूपा॥
खर दूषन बध बहुरि बखाना। जिमि सब मरमु दसानन जाना॥
दसकंधर मारीच बतकही। जेहि बिधि भई सो सब तेहिं कही॥
पुनि माया सीता कर हरना। श्रीरघुबीर बिरह कछु बरना॥
पुनि प्रभुगीध क्रिया जिमि कीन्ही। बधि कबंध सबरिहि गतिदीन्ही॥
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा। जेहि बिधि गए सरोवर तीरा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो० :—प्रभु नारद संबाद कहि, मारुति मिलन प्रसंग।
पुनि सुग्रीव मिताई बालि प्रान कर भंग॥
कपिहि तिलक करि प्रभु कृत, सैल प्रबरषन वास।
बरनन वर्षा सरद अरु, राम रोष कपि त्रास॥

—: चौपाई :—

जेहि बिधि कपिपति कीस पठाए। सीता खोज सकल दिसि धाए॥
बिबर प्रवेस कीन्ह जेहि भाँती। कपिन्ह बहोरि मिला संपाती॥
सुनि सब कथा समीर कुमारा। नाँघत भयउ पयोधि अपारा॥
लंका कपि प्रवेस जिमि कीन्हा। पुनि सीतहि धीरजु जिमि दीन्हा॥
बन उजारि रावनहि प्रबोधी। पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी॥
आए कपि सब जहँ रघुराई। बैदेही की कुसल सुनाई॥
हरन समेत तथा रघुबीरा। उतरे जाइ बारिनिधि तीरा॥
मिला बिभीषन जेहि बिधि आई। सागर निग्रह कथा सुनाई॥

दो० :—सेतु बाँधि कपि सेन जिमि, उतरी सागर पार॥
गयउ बसीठी बीरबर जेहि बिधि बालि कुमार॥
निसिचर कीस लराई बरनिसि बिबिधि प्रकार।
कुंभकरन घननाद कर, बल पौरुष संघार।

—: चौपाई :—

निसिचर निकर मरन बिधिनाना। रघपति रावन समर बखाना॥
रावन बध मंदोदरि सोका। राज बिभीषन देव अशोका॥
सीता रघुपति मिलन बहोरी। सुरन्ह कीन्ह अस्तुति कर जोरी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता। अवध चले प्रभु कृपा निकेता॥
जेहि विधि राम नगर निज आए। बायस बिसद चरित सब गाए॥
कहेसि बहोरि राम अभिषेका। पुर बरनत नृपनीति अनेका॥
कथा समस्त भुसुंडि बखानी। जो मैं तुम्ह सन कही भवानी॥
सुनि सब राम कथा खगनाहा। कहत बचन मन परम उछाहा॥
दो० :- गयउ मोर संदेह, सुनेउँ सकल रघुपति चरित।
भयेउ राम पद नेह, तव प्रसाद बायस तिलक॥

★

स्तुति-माहात्म्य

मानस की अट्ठाइस स्तुतियों के नक्षत्रों एवं देवताओं तथा उनमें स्थित तारों के आधार पर ही उक्त विवेचन प्रस्तुत किया गया है। भारतीय एवं पाश्चात्य जगत् के ज्योतिष विशारद तथा खगोल शास्त्रियों का यह सुनिश्चित मत है कि मनुष्य के जीवन पर विभिन्न नक्षत्रों एवं ग्रहों का निश्चय ही प्रभाव पड़ता है। मानव जीवन प्रारम्भ से अन्त तक सुखपूर्ण रहे तथा दुख भी सुख की तरह मानव की दृष्टि में प्रतीत हो तथा अशुभ ग्रह स्वयं ही शान्त होकर मनुष्य जीवन में सुख का संचार करें। इस प्रकार के आनन्दमय जीवन को बिरले ही व्यक्ति अनुभव कर पाते हैं। पर यदि मानस की स्तुतियों का नित्यप्रति पाठ श्रद्धा एवं भक्ति से किया जाय तो यह लगभग निश्चित सा है कि उस व्यक्ति के जीवन में आदि से अन्त तक ग्रहों के अनुकूल रहने के कारण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनकी कृपाशक्ति से सदा आनन्द का संचार होता रहेगा। स्तुति फलादि मानस-पीयूष के आधार पर सम्पादित है।

श्रीरामः शरणं मम

मानस की प्रार्थनाएँ

प्रसंग :—रावण के अत्याचार से सर्वंसहा धरा भी चीत्कार कर उठी। वह देव वृन्द के पास जाकर अपनी करुणामयी व्यथा सुनाती है। देवतागण गोरूप धारिणी पृथ्वी के साथ ब्रह्मा के पास जाते हैं। उस देव समुदाय में भगवान शंकर भी सम्मिलित होकर सब के सब विष्णु की प्रार्थना के हेतु एकमत होते हैं। 'परमात्मा अग-जग-मय एवं सदा सर्वगत हैं। भक्तों के निश्छल प्रेममयी भावना से किसी स्थान पर भी प्रादुर्भूत हो जाते हैं" भगवान् शंकर के इस प्रकार के आश्वासन से सभी देव वृन्द वैकुण्ठ एवं क्षीरसागरादि जाने का प्रश्न को छोड़कर उसी स्थान पर आश्वस्त हो मिल कर प्रार्थना करते हैं।

इस स्तुति का "अश्विनी नक्षत्र" माना गया है। इस प्रार्थना के अन्दर तीन तारे चमकते हैं। ये विष्णु क्षीरशायी और ब्रह्म हैं। इस नक्षत्र के देवता भगवान् हयग्रीव है। "जग मंगल गुण ग्राम रामके" इस गुणगान का फल है। यह प्रसंग मानस में बा० का० १८१ दोहा से है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्तुति संख्या १

दो० :—सुनि बिरंचि मन हरष तन, पुलकि नयन बह नीर।
अस्तुति करत जोरि कर, सावधान मतिधीर॥

छन्द :—जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रणतपाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता॥
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला दीन दयाला, करउ अनुग्रह सोई।
जय जय अबिनासी, सब घट बासी व्यापक परमानन्दा।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं, माया रहित मुकुन्दा॥
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी, बिगत मोह मुनिबृन्दा।
निसिबासर ध्यावहिं गुनगन गावहिं जयति सच्चिदानंदा।
जेहिं सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई, संग सहाय न दूजा।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा।
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथा।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी, सरन सकल सुरजूथा।
सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा, जा कहुँ कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पियारे बेद पुकारे द्रवउ सो श्री भगवाना।
भव बारिधि मन्दर सब बिधि सुन्दर गुण मन्दिर सुखपुंजा।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पदकंजा।

दो० :—जानि सभय सुर भूमि सुनि, बचन समेत सनेह।
गगन गिरा गम्भीर भई, हरनि सोक कन्देह॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा। तुम्हहि लागि धरिहउँ नर बेसा।
अंसन्ह सहित मनुज अवतारा। लैहउ दिनकर बंस उदारा।
कस्यप अदिति महातप कीन्हा। तिन्ह कहुँ मैं पूरब बर दीन्हा।
ते दसरथ कौशल्या रूपा। कोशलपुरीं प्रगट नरभूपा।
तिन्ह कें गृह अवतरिहउँ जाई। रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई।
नारद बचन सत्य सब करिहउँ। परम सक्ति समेत अवतरिहउँ॥
हरिहउँ सकल भूमि गरुआई। निर्भय होहु देव समुदाई॥

दो०:—निज लोकहि बिरंचि गे देवन्ह इहइ सिखाइ।
बानर तनु धरि धरि महि, हरि पद सेवहु जाइ॥

श्रीरामं शरणं मम

प्रसंग: भगवान् राम के प्रादुर्भाव काल में सभी ग्रह योग और नक्षत्रादि अनुकूल हो गये थे। वह पावन मध्यान्ह काल मोहक बासन्ती छटाओं से सुशोभित था। अभिजित नक्षत्र एवं नवमी तिथी थी। प्राकृतिक वातावरण अत्यन्त ही सुशान्त था क्योंकि निखिल प्रकृति प्रकाशक सरकार ही स्वयं प्रगट हो रहे थे। देव वृन्द स्तुति करके चले गये। प्रभु राम अद्भुद बालक के रूप में प्रगट हुए। समस्त मातृ-सत्ता की सन्तवात्सल्यमयी माता कौशल्या राम को देखकर स्तुति करने लगी।

यह भगवान् की जन्म स्तुति है। इसमें "वेद पुराण भनंता, जेहि गावहि श्रुति सन्ता एवं रोम रोम प्रति वेद कहे" तीन तारे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं। इसके भरणी नक्षत्र है। यहाँ से राम कथा का प्रारम्भ है। इसी कारण "राम कथा कलि तरुनग भरिणी" कहा गया है। यह स्तुति बा० का० १९१ दोहा से है।

"दानि-मुकुति धन धरम धाम के" नक्षत्र का फल व स्तुति फल "ते न परहि भव कूपा" है। इसके देवता यम है जो दुष्टों के नियामक हैं।

स्तुति संख्या-२

दो० :—जोग लगन ग्रह वार तिथि, सकल भये अनुकूल।
चर अरु अचर हर्षयुत, राम जनम सुखमूल॥

—: चौपाई :—

नौमी तिथि मधु मास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता॥
मध्यदिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोक बिश्रामा॥
सीतल मन्द सुरभि वह बाऊ। हरषित सुर संतन मन चाऊ॥
बन कुसुमित गिरिगन मनिआरा। स्रवहिं सकल सरितामृत धारा॥
सो अवसर बिरंचि जब जाना। चले सकल सुर साजि बिमाना॥
गगन बिमल संकुल सुर जूथा। गावहिं गुण गन्धर्व बरुथा॥
बरसहिं सुमन सुअंजुलि साजी। गहगहि गगन दुन्दुभी बाजी॥
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा। बहुविधि लावहिं निज निजसेवा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो० :—सुर समूह विनती करि, पहुँचे निज निज धाम ॥
जग निवास प्रभु प्रगटे, अखिल लोक विश्राम ॥

छं० :—भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी ।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुद रूप विचारी ॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुजचारी ॥
भूषण वनमाला नयन विसाला शोभा सिन्धु खरारी ॥
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी कहि विधि करौं अनंता ॥
माया गुणज्ञानातीत अमाना वेद पुरान भनंता ॥
करुणा सुखसागर सब गुण आगर जेहि गावहिं श्रुति संता ॥
सो मम हितलागी जन अनुरागी प्रगट भयउ श्री कंता ॥
ब्रह्मण्ड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै ॥
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ।
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै ॥
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ।
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ॥
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना भइ बालक सुर भूपा ।
यह चरित जो गावहिं हरि पद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ॥

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग : विश्व मांगलिक धारा के श्रोत, स्वनाम धन्य मुनिवर विश्वामित्र के आश्रम पर याज्ञिक रक्षा कार्य के उपरान्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवान् राम एवं लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ उनको योजनानुसार धनुष यज्ञ देखने के लिए जनकपुर को प्रस्थान करते हैं। वे मार्ग में एक उदासीन एवं शोभा-रहित तथा अतीत काल में हुई घटना को मूक शब्दों में अभिव्यक्त कर रहे गौतम ऋषि के आश्रम को देखते हैं।

फलस्वरूप भगवान् राम ने मुनिवर से उत्सुकता पूर्वक उस आश्रम के बारे में जिज्ञासा व्यक्त की। विश्वामित्र ने गौतम शाप की सारी पौराणिक कथा को कह दिया और कहा 'आश्रम में पड़ी यह शिला खण्ड गौतम की पत्नी शापित अहिल्या हैं तथा आपकी चरण धूलि से इसका उद्धार हो जायगा। हे राम कृपा कर इनका उद्धार करो।'

समस्त पापों को नष्ट करने वाली इस स्तुति का सम्बन्ध 'कृत्तिका' नक्षत्र से है। इसमें सात तारे हैं। परन्तु केवल छैही दिखलाई पड़ते हैं तथा एक हरि चरण भी है जो दिखलाई नहीं पड़ता है। इस नक्षत्र के देवता अग्निदेव है जो गौतम के कोपानल के रूप में स्पष्ट ही है।

"सद गुरु ज्ञान विराग जोग के" इस स्तुति की फलश्रुति है जो भावांश में स्तुति से बहुत साम्यता रखती है। बा० का० दोहा २१० से यह स्तुति है :—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

—:चौपाई :—

तब मुनि सादर कहा बुझाई। चरित एक प्रभु देखिअ जाई॥
धनुष जज्ञ मुनि रघुकुल नाथा। हरषि चले मुनिवर के साथा॥
आश्रम एक दीख मग माहीं। खग मृग जीव जन्तु तहँ नाहीं॥
पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी। सकल कथा मुनि कहा विसेषी॥
दो० :—गौतम नारी श्राप बस, उपल देह धरि-धीर।
चरण कमल-रज चाहति, कृपा करहु रघुबीर॥

स्तुति संख्या-३

छं० :—परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सही।
देखत रघुनायक जनसुख दायक सनमुख होय कर जोरि रही॥
अति प्रेम अधीरा पुलक शरीरा मुख नहिं आवइ बचन कही।
अतिशय बड़ भागी चरणन्हि लागी जुगल नयन जलधार बही॥
धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहुं चीन्हा रघुपति कृपा भगति पाई॥
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ग्यान गम्य जय रघुराई।
मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावण रिपु जन सुखदाई॥
राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनहि आई॥
मुनि शाप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना।
देखऊँ भरि लोचन हरि भव मोचन इहइ लाभ शंकर जाना॥
विनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न माँगऊँ बर आना।
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना॥
जेहि पद सुर सरिता परम पुनीता प्रगट भई शिवसीस धरी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सोई पद पंकज जेहि पूजत अज मम शिर धरेउ कृपालु हरी ।।
एहि भाँति सिधारी गौतम नारी बार-बार हरिचरन परी ।
जो अति मन भावा सो बर पावा गै पति लोक अनन्द भरी ।।
दो० :—अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारण रहित दयाल ।
तुलसिदास सठ तेहि भजु, छाड़ि कपट जंजाल ।।

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग :—जनकपुर में भगवान राम ने जब गुरु विश्वामित्र की आज्ञा से धनुष को तोड़ दिया, तब समस्त ब्रह्माण्ड में धनुष भंग का शब्द व्याप्त हो गया। जगदम्बा जानकी ने श्रीराम के गले में विजय माल पहनायी। इसके बाद स्वयं सभा में जिस समय अभिमानी राजा लोग आपस में रामभद्र के साथ युद्ध करने की अव्यवहारिक बातें कर रहे थे कि एकाएक भगवान भार्गव का सभा में आगमन होता है। समस्त राज-समाज का वातावरण उनको देखते ही शान्त हो जाता है क्योंकि सम्पूर्ण समाज में परशुरामजी क्षत्रिय विरोधी कठिन कार्यों के कारण, सुपरिचित थे। सभी राजा लोग अपने-अपने पिताजी के नाम कह-कह कर भार्गव के चरणों में दण्डवत् प्रणाम करने लगे। कुछ क्षणों के बाद परशुरामजी की दृष्टि भंग धनुष की ओर पड़ती है। क्रुद्ध होकर वह राजा जनक से पूछते हैं, "इस धनुष को किसने तोडा है? बतलाओ! नहीं तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जनक ! तुम्हारे राज्य को नष्ट कर दूंगा।" भगवान राम ने कहा, "नाथ धनुष तोड़नेवाला कोई आपका दास ही होगा।" फिर तो परशुराम का लक्ष्मण के साथ जो सम्वाद होता रहा वह सारे साहित्य में अनूठा सम्वाद है, जिसे विज्ञजन जानते हैं। इस स्तुति में परशुरामजी ने भगवान राम के प्रति बड़ा ही गम्भीर भाव व्यक्त किया है।

इस स्तुति में "रोहिणी नक्षत्र" माना गया है, तथा इसमें पाँच तारे हैं। "विबुध वैदय भव भीम रोग के" इसकी फल श्रुति है। मद और मोहादि पाँच तारों को मलिन करने के मृतु भानु रूप राम से स्तुति प्रारम्भ होती है। लक्ष्मण सम्वाद के बाद भगवान राम ने निम्न प्रसंग से सम्बन्धित बातें कही हैं जिसके फलस्वरूप भार्गव-मोह भंग होने की स्थिति आती है और अन्त में वह स्तुति करते हैं। भगवान् राम ने भार्गव से अपना भाव इस प्रकार प्रगट किया है। यह स्तुति बा० का० दोहा २८४ से है।

—: चौपाई :—

राम कहा मुनि कहहु बिचारी। रिस अति बड़ि लघु चूक हमारी॥
छुअतहिं टूट पिनाक पुराना। मैं केहि हेतु करौं अभिमाना॥
दोहा—जौं हम निदरहिं बिप्र बदि सत्य सुनहु भृगुनाथ।
तौ अस को जग सुभटु जेहि भय बस नावहिं माथ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

—: चौपाई :—

देव दनुज भूपति भट नाना। समबल अधिक होउ बलबाना॥
जौं रन हमहि पचारै कोऊ। लरहिं सुखेन कालु किन होऊ॥
छत्रिय तनु धरि समर सकाना। कुल कलंकु तेहि पावँर आना॥
कहउँ सुभाउ न कुलहि प्रसंसी। कालहु डरहिं न रन रघुबंसी॥
बिप्रबंस कै अस प्रभुताई। अभय होइ जो तुम्हहि डेराई॥
सुनि मृदु गूढ़ बचन रघुपति के। उघरे पटल परसुधर मति के॥
राम रमापति कर धनु लेहूँ। खैंचहु मिटै मोर संदेहू॥
देत चापु आपुहिं चलि गयऊ। परशुराम मन बिसमय भयऊ॥

दोहा—जाना राम प्रभाउ तब, पुलक प्रफुल्लित गात।
जोरि पानि बोले बचन, हृदयँ न प्रेमु अमात॥

स्तुति संख्या-४

—: चौपाई :—

जय रघुबंश बनज बन भानू। गहन दनुज कुल दहन कृसानू।
जय सुर बिप्र धेनु हितकारी। जय मद मोह कोह भ्रम हारी॥
बिनयशील करुना गुन सागर। जयति बचन रचना अति नागर॥
सेवक सुखद सुभग सब अंगा। जय सरीर छबि कोटि अनंगा॥
करौं काह मुख एक प्रसंसा। जय महेस मन मानस हंसा॥
अनुचित बहुत कहेउँ अग्याता। छमहु छमामन्दिर दोउ भ्राता॥
कहि जय जय जय रघुकुल केतू। भृगुपति गए बनहि तप हेतू।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग :—विदेह नगरी मिथिला में भगवान राम के चारों भाइयों का विवाह-उत्सव सम्पन्न हुआ बड़े ही आनन्द के साथ सभी बाराती वृन्द ठहरे हुए हैं। नगर निवासियों का प्रेम अनुदिन बढ़ रहा है। सभी रानियाँ पुत्रियों को स्त्रियोचित नारी-धर्म की शिक्षा देती हैं जो भारतीय संस्कृति का आदर्श है। उसी समय राम चारों भाईयों के साथ जनकजी के महल में जनवासे से जाते हैं क्योंकि अब जनकपुर से बिदा होना है।

यह "मृगशिला नक्षत्र" की स्तुति है। यह स्तुति अपनी प्रिय पुत्री जानकी को रामचन्द्र के लिये समर्पण करती हुई विदेहमहिषी माता सुनयना करती है। यह स्तुति अत्यन्त प्रेमात्मक भाव से पूर्ण है। इसका फल "जननि जनक सियराम प्रेम के" है। सियराम प्रेम ही इस स्तुति का अवदान है। इसमें तीन तारे हैं तथा शशि देवता है। रामचन्द्रजी बन्धुओं के साथ बिदाई हेतु जनक भवन में पहुँचते हैं मानस में यह स्तुति बा० का० ३३+दोहा है। दोहा का छन्द है

दोहा :—तेहि अवसर भाइन्ह सहित, रामु भानु कुल केतु।
चले जनक मंदिर मुदित बिदा करावन हेतु॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

:—चौपाई—:

चारिउ भाइ सुभायँ सुहाए। नगर नारि नर देखन धाए॥
कोउ कह चलन चहत हहिं आजू। कीन्ह बिदेह बिदा कर साजू॥
लेहु नयन भरि रूप निहारी। प्रिय पाहुने भूप सुत चारी॥
को जानै केहिं सुकृत सयानी। नयन अतिथि कीन्हे बिधि आनी॥
मरनसीलु जिमि पाव पिऊषा। सुरतरु लहै जनम कर भूखा॥
पाव नारकी हरिपदु जैसें। इन्ह कर दरसनु हम कहँ तैसें॥
निरखि राम सोभा उर धरहू। निज मन-फनि मूरति-मनि करहू॥
एहि बिधि सबहि नयन फलु देता। गए कुँअर सब राज निकेता॥

दोहा :—रूप सिंधु सब बंधु लखि हरषि उठा रनिवासु॥
करहिं निछावरि आरति महा मुदित मन सासु

:—चौपाई—:

देखि राम छबि अति अनुरागीं। प्रेम बिबस पुनि पुनि पद लागीं॥
रही न लाज प्रीति उर छाई। सहज सनेहु बरनि किमि जाई॥
भाइन्ह सहित उबटि अन्हवाए। छरस असन अति हेतु जेवाँए॥
बोले रामु सुअवसरु जानी। सील सनेह सकुचमय बानी॥
राउ अवधपुर चहत सिधाए। बिदा होन हम इहाँ पठाए॥
मातु मुदित मन आयसु देहू। बालक जानि करब नित नेहू॥
सुनत बचन बिलखेउ रनिवासू। बोलि न सकहिं प्रेमबस सासू॥
हृदयँ लगाइ कुअँरि सब लीन्ही। पतिन्ह सौंपि बिनती अति कीन्ही॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्तुति संख्या-५

—:छन्दः—

करि बिनय सिय रामहि समरपी जोरि कर पुनि पुनि कहै।
बलि जाउँ तात सुजान तुम्ह कहुँ बिदित गति सबकी अहै॥
परिवार पुरजन मोहि राजहि प्रानप्रिय सिय जानिबी।
तुलसीस सीलु सनेहु लखि निज किंकरी करि मानिबी॥

—:सोरठाः—

तुम्ह परिपूरन काम जान सिरोमनि भावप्रिय।
जन गुन गाहक राम दोष दलन करुनायतन॥

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग :—राघवेन्द्र सरकार के विदाई के समय प्रेम विभोर होकर जनक स्तुति करते हैं। इस स्तुति का नक्षत्र "आद्रा" है। सियाराम प्रेम ही इस स्तुति का फल है। प्रेमरस आद्र होने से आद्रा नक्षत्र सार्थक है। शिवजी इसके देवता हैं। इस प्रार्थना में शिवजी कारण है। पात्र के अनुरूप यह स्तुति दार्शनिक भाव से ओत-प्रोत है। ज्ञाननिधि जनक द्वारा इस प्रकार की स्तुति उनके अनुरूप ही है। यह स्तुति बा० का० दोहा ३४० में है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्तुति संख्या-६

—:चौपाई:—

जोरि पंकरुह पानि सुहाए। बोले बचन प्रेम जनु जाए॥
राम करौं केहि भाँति प्रसंसा। मुनि महेस मन मानस हंसा।
करहिं जोग जोगी जेहि लागी। कोहु मोहु ममता मदु त्यागी।
व्यापकु ब्रह्मु अलखु अबिनासी। चिदानंदु निरगुन गुनरासी॥
मन समेत जेहि जान न बानी। तरकि न सकहिं सकल अनुमानी॥
महिमा निगमु नेति कहि कहई। जो तिहुँ काल एकरस रहई॥

दोहा :— नयन विषय मो कहुँ भयउ सो समस्त सुख मूल।
सबइ लाभु जग जीव कहँ भएँ ईसु अनुकूल॥

—:चौपाई:—

सबहि भाँति मोहि दीन्हि बड़ाई। निज जन जानि लीन्ह अपनाई॥
होहिं सहस दस सारद सेषा। करहिं कलप कोटिक भरि लेखा॥
मोर भाग्य राउर गुन गाथा। कहि न सिराहिं सुनहु रघुनाथा॥
मैं कछु कहउँ एक बल मोरें। तुम्ह रीझहु सनेह सुठि थोरें॥
बार-बार मागउँ कर जोरें। मनु परिहरै चरन जनि भोरें॥
सुनि बर बचन प्रेम जनु पोषे। पूरनकाम रामु परितोषे॥

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग—राघवेन्द्र सरकार निषादराज गुह तथा उनके स्वजनों को आदरपूर्वक विदा करने के उपरान्त लक्ष्मन एवं जानकी सहित प्रयाग की ओर जा रहे हैं। इसके बाद गोस्वामी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जी "चारि पदारथ भरा भण्डारु' आदि शब्दों से प्रयाग राज के सांगरूपक में उनका बड़े सुन्दर ढंग से वर्णन करते हैं। भगवान राम अपने बन्धु एवं श्री जानकीजी को प्रयाग की महत्ता का वर्णन एवं निग्दर्शन कराते हुए त्रिवेणी तट पर पहुंचते हैं। यहाँ संगम में स्नान कर शिव का पूजन करते हैं। तीर्थ देव पूजन के बाद में प्रभु महर्षि भरद्वाज जी के आश्रम की ओर जाते हैं।

इस स्तुति का नक्षत्र "पुनर्वसु" है। इसमें चार तारे हैं। नक्षत्र के आकार "हर्म्य" के समान माना गया है। देवमाता आदिति इस नक्षत्र की देवता है। इस स्तुति का फल है, "बीज सकल व्रत धरम नेम के।" प्रेमात्मक रस ही अन्तिम साध्य है। अयोध्या काण्ड दोहा १०६ से स्तुति।

चौपाई

करि प्रनामु देखत बन बागा। कहत महातम अति अनुरागा॥
एहि बिधि आइ बिलोकी बेनी। सुमिरत सकल सुमंगल देनी॥
मुदित नहाइ कीन्हि सिव सेवा। पूजि जथाबिधि तीरथ देवा॥
तब प्रभु भरद्वाज पहिं आए। करत दण्डवत मुनि उर लाए॥
मुनि मन मोद न कछु कहि जाई। ब्रह्मानंद रासि जनु पाई॥

दोहा—दीन्हि असीस मुनीस उर अति अनंदु अस जानि।
लोचन गोचर सुकृत फल मनहुँ किए बिधि आनि॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौपाई

कुसल प्रस्न करि आसन दीन्हे। पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हें॥
कंद मूल फल अंकुर नीके। दिए आनि मुनि मनहुँ अमी के॥
सीय लखन जन सहित सुहाए। अति रुचि राम मूल फल खाए॥
भए बिगत श्रम रामु सुखारे। भरद्वाज मृदु बचन उचारे॥

स्तुति संख्या-७

चौपाई

आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू। आजु सुफल जप जोग बिरागू॥
सफल सकल सुभ साधन साजू। राम तुम्हहि अवलोकत आजू॥
लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी। तुम्हरें दरस आस सब पूजी॥
अब करि कृपा देहु बर एहू। निज पद सरसिज सहज सनेहू॥

दोहा—करम बचन मन छाड़ि छलु जब लगि जनु न तुम्हार।
तब लगि सुखु सपनेहुँ नहीं किएँ कोटि उपचार॥

चौपाई

मुनि मुनि बचन रामु सकुचाने। भाव भगति आनंद अघाने॥

—:०:—

श्री रामः शरणं मम

प्रसंग :—भारतीय संस्कृति के देदीप्यमान स्तम्भ महर्षि बाल्मीकि के आश्रम पर भगवान राम पहुंचते हैं। भगवान राम को इस पवित्र आश्रम को देखकर परम आनन्द होता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महर्षि बालमीकि प्रिय अतिथि का कन्द-मूल-फलों से सत्कार करते हैं। सरकार की मनोहर मूर्ति का दर्शन कर महर्षि को बहुत अधिक हर्ष होता है। राघवेन्द्र सरकार महर्षि से रहने के लिए एसा स्थान पूछते हैं जहाँ पर रहने से किसी मुनि तथा महात्मा इत्यादि को कष्ट न हो महर्षि आध्यात्मिक भाव से कहते हैं, "भला आप कहाँ नहीं हैं?" आपतो सर्वत्र है।" फिर भी औपचारिकता के रूप में चौदह स्थल बतलाने के पूर्व स्तुति करते हैं।

इस स्तुति में 'पुण्य नक्षत्र" है जो पोषण करता है। इस नक्षत्र के बीच तीन तारे हैं। जो सरकार त्रिमूर्ति रूप में है। नक्षत्र का देवता "वाक्पति" है एवं शोक पाप शमन ही इसका फल है। ""समन पाप सन्ताप शोक के" इसकी फलश्रुति के रूप में है। अयोध्या काण्ड दोहा १२५

स्तुति संख्या.८

चौ०-सहज सरल सुनि रघुवर बानी। साधु-साधु बोले मुनि ग्यानी।
कस नँ कहहु अस रघुकुल केतू तुम्ह पालक संतत श्रुति सेतू॥

छं०—श्रुति सेतु पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी।
जो सृजति जगु पालति हरति रुख पाइ कृपानिधानकी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो सहससीसु अहीसु महिधरु लखनु सचराचर धनी।
सुर काज धरि नरराज तनु चले दलन खल निसिचर अनी॥

सो०—राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धि पर।
अविगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह॥

चौपाई

जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे। बिधि हरि संभु नचावनिहारे॥
तेउ न जानहिं मरम तुम्हारा। औरु तुम्हहि को जाननिहारा॥
सोइ जानइ जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई॥
तुम्हरिहि कृपा तुम्हहि रघुनन्दन। जानहिं भगत भगत उर चंदन॥
चिदानन्दमय देह तुम्हारी। बिगत बिकार जान अधिकारी॥
नर तनु धरेहु संत सुर काजा। कहहु करहु जस प्राकृत राजा॥
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे। जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे॥
तुम्ह जो कहहु करहु सबु साँचा। जस काछिअ तस चाहिअ नाचा॥

दो०—पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाउँ॥
जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउँ॥

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग :—भगवान राम, लक्ष्मण एवं जानकी के साथ वन यात्रा में महर्षि अत्रि के आश्रम पर पहुंचते हैं। महर्षि अत्रि के हर्ष के पारावार का क्या कहना? वह राघवेन्द्र सरकार को उच्चासन प्रदान कर उनकी अर्चना एवं पूजा करते हैं। साथ ही हार्दिक स्तुति करते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस स्तुति में छः तारे हैं। नक्षत्र के देवता कद्रु तनय सर्प हैं। इस स्तुति का नक्षत्र "आश्लेषा" है। भक्ति संयुक्ता भावना एवं प्रिय पालक परलोक लोक के-इसकी फलश्रुति है। अरण्य का० दोहा-३

—:o:—

स्तुति संख्या-६

:—सोरठा—:

प्रभु आसन आसीन भरि लोचन सोभा निरखि।
मुनिवर परम प्रवीन जोरि पानि अस्तुति करत॥

छन्दः—

नमामि भक्त वत्सलं। कृपालु शील कोमलं॥
भजामि ते पदांबुजं। अकामिनां स्वधामदं॥
निकाम श्याम सुन्दरं। भवाम्बुनाथ मंदरं॥
प्रफुल्ल कंज लोचनं। मदादि दोष मोचनं॥
प्रलंब बाहु विक्रमं। प्रभो-ऽप्रमेय वैभवं॥
निषंग चाप सायकं। धरं त्रिलोक नायकं॥
दिनेश वंश मंडनं। महेश चाप खंडनं॥
मुनीन्द्र संत रंजनं। सुरारि वृन्द भंजनं॥
मनोज वैरि वंदितं। अजादि देव सेवितं॥
विशुद्ध बोध विग्रहं। समस्त दूषणापहं॥
नमामि इन्दिरा पतिं। सुखाकरं सतां गतिं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भजे सशक्ति सानुजं। शची पति प्रियानुजं॥
त्वदंघ्रि मूल ये नराः। भजंति हीनमत्सरा॥
पतंति नो भवार्णवे। वितर्क वीचि संकुले॥
विविक्त वासिनः सदा। भजंति मुक्तये मुदा॥
निरस्य इन्द्रियादिकं। प्रयांति ते गतिं स्वकं॥
तमेकमद्भुतं प्रभुं। निरीहमीश्वरं विभुं॥
जगद्गुरुं च शाश्वतं। तुरीयमेव केवलं॥
भजामि भाव वल्लभं। कुयोगिनां सुदुर्लभं॥
स्वभक्त कल्प - पादपं। समं सुसेव्यमन्वहं॥
अनूप रूप भूपतिं। नतोऽहमुर्विजा पतिं॥
प्रसीद मे नमामि ते। पदाब्ज भक्तिं देहि मे॥
पठंति ये स्तवं इदं। नरादरेण ते पदं॥
व्रजंति नात्र संशयं। त्वदीय भक्ति संयुक्ता॥

दो०—विनती करि मुनि नाइ सिरु कह कर जोरि बहोरि।
चरन सरोरुह नाथ जनि कबहुँ तजै मति मोरि।

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग—वनवासी राम जानकी सहित वन भ्रमण में अत्रि आश्रम से प्रस्थान करते हैं आगे बढ़ने पर मार्ग के बीच में उनकी भेंट विराध से होती है तथा उसे दुःखी देखकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपना धाम देकर उसका उद्धार करते हैं। इसके बाद यात्रा करते हुए वह मुनिवर सरभंग के आश्रम आश्रम पहुँचते हैं। अखिल भुवन नायक राम का अपने आश्रम पर आगमन देखकर मुनि सरभंग उनका सत्कार एवं पूजन कर अत्यन्त ही स्नेह पूर्ण स्तुति करते हैं।

इस स्तुति का नक्षत्र "मघा" है जिसका स्वरूप शरात्मक है। इसका आकार शालावत् माना गया है। इसमें पांच तारे हैं। इसके देवता पितर है। श्रीराम जगत् पिता हैं। "सचिव सुभट भूपति विचार के" इस स्तुति की फल श्रुति है। अर० का० दोहा—७

स्तुति संख्या-१०

चौपाई

पुनि आए जहँ मुनि सरभंगा। सुन्दर अनुज जानकी संगा॥

दो०—देखि राम मुख पंकज मुनिबर लोचन भृंग।
सादर पान करत अति धन्य जन्म सरभंग॥

—: चौपाई :—

कह मुनि सुनु रघुबीर कृपाला। शंकर मानस राजमराला॥
जात रहेउँ बिरंचि के धामा। सुनेउँ श्रवन बन ऐहहिं रामा॥
चितवत पंथ रहेउँ दिन राती। अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती॥
नाथ सकल साधन मैं हीना। कीन्हीं कृपा जानि जन दीना॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सो कछु देव न मोहि निहोरा। निज पन राखेउ जन मन चोरा॥
तब लगि रहहु दीन हित लागी। जब लगि मिलौं तुम्हहि तनु त्यागी॥
जोग जग्य जप तप ब्रत कीन्हा। प्रभु कहँ देइ भगति बर लीन्हा॥
एहि बिधि सर रचि मुनि सरभंगा। बैठे हृदय छाड़ि सब संगा॥
दो०—सीता अनुज समेत प्रभु नील जलद तनु स्याम।
मम हियँ बसहु निरंतर सगुनरुप श्रीराम॥

चौपाई

अस कहि जोग अगिनि तनु जारा। राम कृपाँ बैकुण्ठ सिधारा॥
ताते मुनि हरि लीन न भयऊ। प्रथमहि भेद भगति बर लयऊ॥

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग—सरभंग आश्रम से प्रस्थान कर भगवान राघवेन्द्र सरकार अपनी वन यात्रा में ऋषियों एवं मुनियों के आश्रमों को देखते हुए वन मार्ग के एक भाग में मुनियों की अस्थियों के समूह को देखकर मुनियों से पूछते हैं, "हड्डियों के इस ढेर के एकत्रित होने का क्या कारण है तथा ये किन लोगों की हड्डियाँ हैं?" मुनियों ने दुखी स्वर में कहा "प्रभो! आप सब कुछ जानते हुए भी क्या पूछते हैं?" राक्षसों ने सहस्त्रों ऋषियों का भक्षण कर डाला है जिसके प्रतीक स्वरूप यह हड्डियों का ढेर है।" भगवान राम इस बात से दुखी हो प्रतिज्ञा करते हैं, "इस धरा को राक्षसों से विहीन ही कर दूंगा।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस घोषणा के उपरान्त वह सभी ऋषियों एवं मुनियों के आश्रमों पर जाकर उनकी रक्षा का आश्वासन देकर उनमें हर्ष एवं आनन्द का संचार करते हैं। इस प्रकार वन विचरण करते हुए भगवान राम के आगमन का समाचार महर्षि अगस्त्य के शिष्य सूतीक्ष्ण को प्राप्त होता है। वह अत्यधिक आनन्दित होकर विचार करते हैं, "क्या मेरे जैसे साधन हीन व्यक्ति को भी प्रभु दर्शन देंगे?" वास्तव में प्रभु कितने दयालु हैं?

इस विचार के उत्पन्न होते ही सुतीक्ष्णजी प्रेम में इतने आत्म-विभोर हो जाते हैं कि वह मार्ग में ही बैठ कर प्रभु का ध्यान करने लगते हैं। प्रभु सुतीक्ष्ण के पास पहुँचते हैं, पर वह तो ध्यानमग्न है। इस स्थिति में भगवान राघवेन्द्र सरकार उनके हृदय से राम रूप दूर कर चतुर्भुज रूप को मनोहर झाँकी प्रस्तुत कर देते हैं। ऐसी दशा में सूतीक्ष्ण व्याकूल होकर जब नेत्र खोलते हैं तो अपने सम्मुख भगवान राम को अपने अनुज एवं जानकी सहित खड़े हुए देखकर तत्काल उनके चरणों में लिपट जाते हैं। भगवान राम उन्हें बड़े ही प्रेम पूर्वक हृदय से लगाकर भेटते हैं। तत्पश्चात सुतीक्ष्ण की प्रार्थना पर उनके आश्रम में पधारते हैं जहां सुतीक्ष्णजी उनके विविध प्रकार से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूजा एवं अर्चना अत्यन्त ही भाव पूरित हृदय एवं हर्ष-पूरित नेत्रों से करते हैं तथा भगवान राम की स्तुति करते हैं।

इस स्तुति का नक्षत्र "पूर्वा फाल्गुन" है। इसमें तीन तारे हैं। इसमें निर्गुन से सगुण की प्रधानता का वर्णन है। इस नक्षत्र के देवता सूर्य हैं। इसकी फल श्रुति "सचिव सुभट भूपति विचार के" हैं जो प्रभु का गुणग्राम है। इसीलिए दम्भादि असुरों को जलाने में वह अग्नि के समान दहनशक्ति पूर्ण है। अरण्यकाण्ड दोहा १०

स्तुति संख्या—११

दोहा :—तव मुनि हृदयँ धीर धरि गहि पद बारहिं बार।
निज आश्रम प्रभु आनि करि पूजा बिबिध प्रकार॥

:— चौपाई :—

कह मुनि प्रभु सुनु बिनती मोरी। अस्तुति करौं कवन बिधि तोरी॥
महिमा अमित मोरि मति थोरी। रबि सन्मुख खद्योत अजोरी॥
श्याम तामरस दाम शरीरं। जटा मुकुट परिधन मुनिचीरं॥
पाणि चाप शर कटि तूणीरं। नौमि निरंतरं श्री रघुवीरं॥
मोह बिपिन घन दहन कृशानुः। संत सरोरूह कानन भानुः॥
निशिचर करि बरूथ मृगराजः। त्रातु सदा नो भव खग बाजः॥
अरुण नयन राजीव सुवेशं। सीता नयन चकोर निशेशं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर हृदि मानस बाल मरालं। नौमि राम उर बाहु विशालं॥
संशय सर्प ग्रसन उरगादः। शमन सुकर्कश तर्क विषादः॥
भव भंजन रंजन सुर यूथः। त्रातु सदा नो कृपावरुथः॥
निर्गुण सगुण विषम सम रूपं। ज्ञान गिरा गोतीतमनूपं॥
अमलमखिलमनवद्यमपारं। नौमि राम भंजन महि भारं॥
भक्त कल्पपादप आरामः। तर्जन क्रोध लोभ मद कामः॥
अति नागर भव सागर सेतुः। त्रातु सदा दिनकर कुल केतुः॥
अतुलित भुज प्रताप बल धामः। कलि मल विपुल विभंजन नामः॥
धर्म वर्म नर्मद गुण ग्रामः। संतत शं तनोतु मम रामः॥
जदपि बिरज ब्यापक अबिनासी। सबके हृदय निरंतर बासी॥
तदपि अनुज श्री सहित खरारी। बसतु मनसि मम काननचारी॥
जे जानहिं ते जानहुँ स्वामी। सगुन अगुन उर अंतरजामी॥
जो कोसलपति राजिव नयना। करउ सो राम हृदय मम अयना॥
अस अभिमान जाइ जनि भोरे। मैं सेवक रघुपति पति मोरे॥
सुनि मुनि बचन राम मन भाए। बहुरि हरषि मुनिवर उर लाए॥
परम प्रसन्न जानु मुनि मोही। जो बर मांगहु देउँ सो तोही॥
मुनि कह मैं बर कबहुं न जाचा। समुझि न परइ झूठ का साचा॥
तुम्हहिं नीक लागै रघुराई। सो मोहि देहु दास सुखदाई॥
अबिरल भगति बिरति बिग्याना। होहु सकल गुन ग्यान निधाना॥
प्रभु जो दीन्ह सो बरु मैं पावा। अब सो देहु मोहि जो भावा॥

दोहा :—अनुज जानकी सहित प्रभु चाप बान धर राम।
मम हिय गगन इन्दु इव बसहु सदा निह काम॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

:—चौपाई:—

एवमस्तु करि रमानिवासा। हरषि चले कुंभज रिषि पासा।

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग :—प्रभु के अनन्य भक्त सुतीक्ष्णजी राघवेन्द्र सरकार से विवध प्रकार के वरदान प्राप्त करने के वाद फिर उन्ही के साथ अपने गुरु अगस्त्य के आश्रम पर गए और अगस्त्यजी का भगवान राम का अनुज एवं जानकी सहित आश्रम पर पधारने का संदेश देते हैं। इस समाचार को पाकर अगस्त्यजी अत्यन्त ही पुलकित हृदम से राघवेन्द्र सरकार को स्वागत कर अपने आश्रम पर लाते हैं और कुशल पूछकर सम्मान सहित पूजा करते हैं। आश्रम में महर्षि अगस्त्य प्रभु-दर्शन से अपने को अति भाग्यवान समझते हैं। आश्रम में प्रभु राम भी ऋषियों के मध्य आसीन है। इस अवसर पर भगवान राम महर्षि अगस्त्य से रावण विजय की मन्त्रणा करते हैं। प्रभु राम की ऐसी जिज्ञासा देखकर अगस्त्यजी कहते हैं "आपही के भजन प्रभाव से मैं भी कुछ जानता हूँ।" इसके वाद महर्षि अगस्त्यजी प्रभु की स्तुति करते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस स्तुति का नक्षत्र "उत्तरा फाल्गुनी" है। इसमें दो तारे हैं पूर्वा एवं उत्तरा फालगुनी के चारों नक्षत्र से इसका रूप शय्या के समान होता है। इसके देवता अर्यमा हैं। जिस प्रकार सारे दिन घूमने के बाद लोग विश्राम पाने के हेतु शैय्या पर आते हैं वैसे ही उपासक सभी ओर से निराश होकर अन्त में सगुण ब्रह्म की शरण में जाते हैं। "फिरि फिरि सगुण ब्रह्म रति मानेउ" महर्षि का स्वयं का कथन है। "कुम्भज लोभ उदधि अपार के" इस स्तुति की फलश्रुति है। अर० का० दोहा १२

स्तुति संख्या-१२

:—चौपाई—:

ऊमरि तरू बिसाल तव माया। फल ब्रह्मांड अनेक निकाया
जीव चराचर जन्तु समाना। भीतर बसहिं न जानहिं आना॥
ते फल भच्छक कठिन कराला। तव भयँ डरत सदा सोउ काला॥
ते तुम्ह सकल लोकपति सांई। पूँछेहु मोहि मनुज की नाई॥
यह बर मागउँ कृपा निकेता। बसहु हृदयँ श्री अनुज समेता॥
अबिरल भगति बिरति सतसंगा। चरन सरोरूह प्रीति अभंगा॥
यद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता। अनुभव गम्य भजहिं जेहि संता॥
अस तव रूप बखानउँ जानउँ। फिरि फिरि सगुन ब्रह्म रति मानउँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संतत दासन्ह देहु बड़ाई। तातें मोहि पूँछेहु रघुराई।
हैं प्रभु परम मनोहर ठाऊँ। पावन पंचवटी तेहि नाऊँ॥
दंडक वन पुनीत प्रभु करहू। उग्र साप मुनिवर कर हरहू॥
बास करहु तहँ रघुकुल राया। कीजै सकल मुनिन्ह पर दाया॥
चले राम मुनि आयसु पाई। तुरतहिं पंचवटी निअराई॥

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग : भगवान राम पंचवटी पहुँचकर गृद्धराज जटायु को घायल अवस्था में देखते हैं। श्रीराम जटायु को अपने हाथ से उठाते हैं तथा सहलाते हैं। राम की कृपा से जटायुजी सारूप्य एवं सालोक्य मुक्ति पाते हैं एवं भगवान की स्तुति करते हैं।

इस स्तुति में "हस्त नक्षत्र" है। इसमें रामभद्र ने अपने ही हाथ से जटायु का स्पर्श किया एवं सारे उर्ध्व कर्म भी किए हैं। इसमें पाँच तारे हैं। इस स्तुति के देवता सूर्य हैं जो राम स्वयं हैं। कथन भी इसी प्रकार है, "राम सच्चिदानन्द दिनेशा"। "काम क्रोह कलिमल करिगन के केहरि शावक जन मन बनके" इस स्तुति की फलश्रुति इस प्रकार है। "पाँचों नक्षत्रों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं अंगुष्ठा निर्गुण का एक तर्जनी मध्यमादि क्रमशः सगुण रूप महिमा, नामः, एवं गुण के प्रतीक है।
अरण्य काण्ड दोहा ३१

स्तुति संख्या-१३

—चौपाई—

गीध देह तजि धरि हरि रूपा। भूषन बहु पट पीत अनूपा॥
श्याम गात बिसाल भुज चारी। अस्तुति करत नयन भरि बारी॥

—: छन्द :—

जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुन प्रेरक सही।
दससीस बाहु प्रचंड खंडन चंड सर मंडन मही॥
पाथोदगात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं।
नित नौमि रामु कृपालु बाहु बिसाल भव भय मोचनं॥
बलमप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचरं।
गोबिंद गोपर द्वंद्वहर बिग्यानघन धरनीधरं।
जे राम मन्त्र जपंत संत अनन्त जन मन रंजन।
नित नौमि राम अकाम प्रिय कामादि खल दल गंजनं॥
जेहि श्रुति निरंजन ब्रह्म व्यापक बिरज अज कहि गावहीं।
करि ध्यान ग्यान बिराग जोग अनेक मुनि जेहि पावहीं॥
सो प्रगट करूणा कंद सोभा वृंद अग जग मोहई॥
मम हृदय पंकज भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहई॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो अगम सुगम सुभाव निर्मल असम सम सीतल सदा।
पस्यंति जं जोगी जतन करि करत मन गो बस सदा॥
सो राम रमा निवास संतत दास बस त्रिभुवन धनी।
मम उर बसउ सो समन संसृति जासु कीरति पावनी॥

दो० :-अबिरल भगति मांगि बर गीध गयउ हरिधाम।
तेहि की क्रिया जथोचित निज कर कीन्ही राम॥

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग :—भगवान राम अपने अनुज लक्ष्मण के साथ जानकी को खोजते हुए ऋष्यमूक पर्वत पर पहुँचते हैं। यह पर्वत मुनि से इस प्रकार शापित था कि यदि बालि जाएगा तो उसके जीवन का अन्त हो जायेगा।" अतः सुग्रीव बालि त्रास से भयभीत होकर अपने हनुमानजी आदि चार मन्त्रियों सहित इसी पर्वत पर निवास करते थे। सुग्रीव ने राम एवं लक्ष्मण दोनों वीरों को आते हुए देखा तथा यह आशंका कर कि कहीं ये बालि के द्वारा प्रेषित तो नहीं हैं हनुमानजी को गुप्तचर रूप में भेजा है। हनुमानजी विप्र रूप धारण कर रामभद्र का परिचय प्राप्त करते हैं और अन्त में लोकनायक भगवान राम को पहचान जाते हैं। पहचानते ही उनके चरण पकड़ लेते हैं और स्तुति करते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस स्तुति में "चित्रा नक्षत्र" हैं। इसमें दोनों का चरित्र चित्रण है। इसमें एक ही तारा "सबको छोड़ कर प्रभु का एक मात्र आश्रय लेना" है। आशय इस प्रकार है, 'सेवक सुत पति मातु भरोसे। रहे अशोच बने प्रभु पोसे।" इसके देवता महावीर हैं श्रीराम कार्य पूर्ति में है ही। इस स्तुति का पाठ करने वाले रामजी के प्रिय बन जाते हैं। इस स्तुति की फलश्रुति "परम पूज्य प्रियतम पुरारि के हैं।" भक्त "हनुमान लंकापुरी के अरि हैं तथा राम के प्रियतम भक्तों में उनकी गणना है, यही इस स्तुति के गठन का परिणाम है।

किष्किन्धा काण्ड दोहा २

स्तुति संख्या १४

—: चौपाई :—

मोर न्याउ मैं पूछा साईं। तुम्ह पूछहू कस नर की नाईं॥
तव माया वस फिरउँ भुलाना। ताते मैं नहिं प्रभु पहिचाना॥

दोहा :—एकु मैं मंद मोहबस कुटिल हृदय अग्यान।
पुनि प्रभु मोहि विसारेउ दीनवन्धु भगवान॥

चौपाई

जदपि नाथ बहु अवगुन मोरे। सेवक प्रभुहि परै जनि भोरे॥
नाथ जीव तव मायां मोहा। सो निस्तरइ तुम्हारेहिं छोहा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ता पर मैं रघुबीर दोहाई। जानउँ नहिं कछु भजन उपाई॥
सेवक सुत पति मातु भरोसें। रहइ असोच बनइ प्रभु पोसें॥
अस कहि परेउ चरण अकुलाई। निज तनु प्रगटि प्रीति उर छाई॥
तब रघुपति उठाइ उर लावा। निज लोचन जल सींचि जुड़ावा।
सुनु कपि जियँ मानसि जनि ऊना। तैं मम प्रिय लछिमन ते दूना।
समदरसी मोहि कह सब कोऊ। सेवक प्रिय अनन्यगति सोऊ॥

दोहा :—सो अनन्य जाकें असि मति न टरइ हनुमंत।
मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत॥

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग :—अत्याचारी, धर्म-विहीन एवं विपथगामी रावण को त्यागकर विभीषणजी सबके सामने भगवान राम के शरणागत होने की घोषणा कर लंका से चल दिये। वानरों ने विभीषण को बाहर ही रोक दिया। सुग्रीव द्वारा भगवान राम को विभीषण का आगमन ज्ञात हुआ व सुग्रीव ने शत्रु का भाई जानकर उसे बन्दी बना लेने का परामर्श दिया परन्तु हनुमान इस पक्ष में नहीं थे क्योंकि भक्त प्रवर हनुमानजी लंका में विभीषण को इस प्रकार समझा चुके थे—'सुनहु विभीषण प्रभु की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रीती। करहिं सदा सेवक पर प्रीती"। अन्त में श्री रामजी शरणागत रक्षा का विशेष महत्व सभी को बतलाकर विभीषण को सामने लाने का आदेश देते हैं। इस आदेश से हनुमानजी बहुत प्रसन्न होते हैं। विभीषणजी दूर से ही दोनों बन्धुओं को देखते हैं और दीनता भरी स्तुति करते हैं।

इस स्तुति का नक्षत्र "स्वाती" है। राम को विभषणजी अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय है। "तुरत विभिषण पाछे मेला सनमुख राम सहेऊ सो सैला' से शरणागत का भाव स्पष्ट ही हो जाता है। इसमें एक मात्र शरणागत की ही प्रधानता है। इसके देवता वायु है। "कामद घन दारिद दवारिके"—इस स्तुति का फल समझना चाहिए। विभीषणजी इसके प्रत्यक्ष प्रमाण है। "कि दीन को भगवान" ने भूवरूप में बसा दिया। सुन्दर का० दोहा ४४

स्तुति संख्या-१५

चौपाई

सादर तेहि आगे करि बानर। चले जहाँ रघुपति करुनाकर।
दूरिहि ते देखे द्वौं भ्राता। नयनानंद दान के दाता॥
बहुरि राम छबिधाम बिलोकी। रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी॥
भुज प्रलंब कंजारुन लोचन। श्यामल गात प्रनत भय मोचन॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिंह कंध आयत उर सोहा । आनन अमित मदन मन मोहा ॥
नयन नीर पुलकित अति गाता । मन धरि धीर कही मृदु बाता ॥

× × × × ×

नाथ दसानन कर मैं भ्राता । निसिचर बंस जनम सुरत्राता ॥
सहज पापप्रिय तामस देहा । जथा उलूकहिं तम पर नेहा ॥

दोहा—श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर ।
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर ॥

चौ०—अस कहि करत दंडवत देखा । तुरत उठे प्रभु हरष विसेषा।

श्री रामः शरणं मम

प्रसंग—रावण बध के पश्चात् मन्दोदरी विलाप, विभीषण के राज्य-तिलक का औपचारिक निर्वाह, जानकी के आगमन एवं परिशुद्धि कार्य के बाद, देवतागण आते हैं। भगवान राम की स्तुति करते हैं। देवता स्वार्थी तो होते ही हैं।

इस स्तुति का नक्षत्र "विशाखा" है। सामान्यतया देवताओं की कई शाखाएँ हैं। इस स्तुति में रघुनाथ एवं प्रभु पद आये हैं जो इसके चार तारे माने गए हैं। देवता लोग रावण के उत्पात-विष से व्याकुल थे जो अब समाप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो चुका था। अतः स्तुति का फल "मंत्र महामणि विषय व्याल के"—उचित ही है। विशाखा एवं अनुराधा समीपवर्ती है अतः देव एवं ब्रह्म स्तुति भी जुड़ी हुई है। लं० का० दोहा—१०६।

स्तुति संख्या-१६

चौपाई

आए देव सदा स्वारथी। वचन कहहिं जनु परमारथी॥
दीन बंधु दयाल रघुराया। देव कीन्हि देवन्ह पर दाया॥
विश्व द्रोह रत यह खल कामी। निज अघ गयउ कुमारगगामी॥
तुम्ह सम रूप ब्रह्म अबिनासी। सदा एकरस सहज उदासी॥
अकल अगुन अज अनघ अनामय। अजित अमोघसक्ति करुनामय॥
मोन कमठ सूकर नरहरी। बामन परसुराम बपु धरी॥
जब जब नाथ सुरन्ह दुखु पायो नाना तनु धरि तुम्हइँ नसायो।
यह खल मलिन सदा सुरद्रोही। काम लोभ मद रत अति कोही॥
अधम सिरोमनि तव पद पावा। यह हमरे मन बिसमय आवा॥
हम देवता परम अधिकारी। स्वारथ रत प्रभु भगति बिसारी॥
भव प्रवाह संतत हम परे। अब प्रभु पाहि सरन अनुसरे॥

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग :—विश्व प्रतापी रावण के बध उपरान्त देवगणों ने भगवान राम की स्तुति की और वहीं पास ही बद्धांजलि होकर खड़े हो गए। इसके बाद सृष्टिकर्त्ता भगवान ब्रह्माजी आए और प्रेम पुलकित होकर राघवेन्द्र सरकार की स्तुति करने लगे।

इस स्तुति का नक्षत्र "अनुराधा है।" स्तुति के भीतर नाम, रूप लीला एवं धाम का वर्णन है। इस नक्षत्र के यही चार तारे हैं। "रवि आतप भिन्न न भिन्न यथा" के अनुसार इसके देवता सूर्य, ब्रह्मा, देव, रुद्रादि जिस ब्रह्म-लेख को मेट नहीं सकते वह विधि का लेख भी भगवान राम की कृपा से मिट सकता है। अतः मेटत कठिन कुअंक भालके" यही इस स्तुति का फलश्रुति है। लं० का० दोहा ११०

स्तुति संख्या १७

दोहा—करि विनती सुर सिद्ध सब, रहे जहँ तहँ कर जोरि।
अति सप्रेम तन पुलकि बिधि अस्तुति करत बहोरि॥

छन्द

जय राम सदा सुखधाम हरे। रघुनायक सायक चाप धरे॥
भव वारन दारन सिंह प्रभो। गुन सागर नागर नाथ विभो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तन काम अनेक अनूप छवी। गुन गावत सिद्ध मुनीन्द्र कवी॥
जस पावन रावण नाग महा। खगनाथ यथा करि कोप गहा॥
जन रंजन भंजन सोक भयं। गत क्रोध सदा प्रभु बोधमयं॥
अवतार उदार अपार गुनं। महि भार विभंजन ग्यान घनं॥
अजव्यापक मेकमनादि सदा। करुणाकर राम नमामि मुदा॥
रघुवंश विभूषण दूषण हा। कृत भूप विभीषण दीन रहा॥
गुन ज्ञान निधान अमान अजं। नित राम नमामि बिभुं बिरजं॥
भुजदण्ड प्रचण्ड प्रताप बलं। खलवृन्द निकंद महा कुसलं॥
बिनु कारण दीन दयाल हितं। छवि धाम नमामि रमा सहितं॥
भव तारन कारन काजपरं। मन संभव दारुन दोष हरं॥
सर चाप मनोहर त्रोन धरं। जलजारुन लोचन भूपबरं॥
सुख मंदिर सुन्दर श्रीरमनं। मद मार मुधा ममता समनं॥
अनवद्य अखण्ड न गोचर गो। सब रूप सदा सब होइ न गो॥
इति वेद बदंति न दन्त कथा। रबि आतप भिन्न न भिन्न यथा॥
कृतकृत्य बिभो सब बानर ए। निरखंति तवानन सादर ए॥
धिग जीवन देव शरीर हरे। तब भक्ति बिना भव भूलि परे॥
अब दीनदयाल दया करिए। मति मोरि बिभेदकरी हरिए॥
जेहि ते बिपरीत क्रिया करिए। दुख सो सुख मानिसुखी चरिए॥
खल खंडन मंडन रम्य छमा। पद पंकज सेवित संभु उमा॥
नृपनायक दे बरदान मिदं। चरनाम्बुज प्रेम सदा सुभदं॥

दोहा—बिनय कीन्हि चतुरानन, प्रेम पुलकि अति गात।
सोभासिंधु बिलोकत, लोचन नहीं अघात॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग—ब्रह्म स्तुति के बाद भगवान राम के सामने दशरथजी आते हैं। राघवेन्द्र सरकार ने चरण वन्दना की एवं कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा "पिताजी। आपके पुण्य से मैंने रावण को जीता है।' इस औपचारिकता के बाद रामजी ने पिताजी को दृढ़ज्ञान एवं भक्ति का वरदान दिया। भगवान के सगुणोपासक भक्तिपूर्ण जन्म स्वीकार करते हैं एवं मुक्ति भी नहीं चाहते हैं क्योंकि देह के अभाव में उपासना एवं भजन नहीं हो सकता है। कहा भी गया है—"विनु तन भजन वेद नहीं बरना।" अन्त में दशरथ चले जाते हैं और देवनायक इन्द्र आते हैं तथा प्रसन्नतापूर्वक सरकार की स्तुति करते हैं।

इस स्तुति का नक्षत्र "ज्जेष्ठा" है। स्वर्गनायक इन्द्र द्वारा यह स्तुति की गई है जो उचित ही हैं। स्तुति में रुचि, भक्ति एवं कृपा दृष्टि की अधिक मांग है अतः इसमें ये ही तीन तारे है। "मोह सकल व्याधिन कर मूला। तेहिते पुनि उपजई बहुशूला ....मोह से ही सारे रोग पैदा होते हैं और इस स्तुति का फल श्रुति "हरन मोह तम दिनकर कर से" है। हार्दिक मोह का नष्ट हो जाना ही इस स्तुति का फल समझना चाहिए। लं० का० दोहा ११२।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्तुति संख्या-१८

दो०—अनुज जानकी सहित प्रभु, कुशल कोशलाधीश।
सोभा देखि हरषि मन, अस्तुति कर सुर ईस॥

—: छन्द :—

जय राम सोभा धाम। दायक प्रनत बिश्राम॥
धृत त्रोन बर सर चाप। भुजदण्ड प्रबल प्रताप॥
जय दूषनारि खरारि। सदन निसाचर धारि॥
यह दुष्ट मारेउ नाथ। भए देव सकल सनाथ॥
जय हरन धरनी भार। महिमा उदार अपार॥
जय रावनारि कृपाल। किए जातुधान बिहाल॥
लंकेस अति बल गर्ब। किए बस्य सुर गन्धर्ब॥
मुनि सिद्ध नर खग नाग। हठि पंथ सब कें लाग॥
परद्रोह रत अति दुष्ट। पायो सो फलु पापिष्ठ॥
अब सुनहु दीन दयाल। राजीव नयन बिसाल॥
मोहि रहा अति अभिमान। नहिं कोउ मोहि समान॥
अब देखि प्रभु पद कंज। गत मान प्रद दुख पुंज॥
कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव। अव्यक्त जेहि श्रुति गाव॥
मोहि भाव कोसल भूप। श्रीराम सगुन सरूप॥
बैदेहि अनुज समेत। मम हृदय करहु निकेत॥
मोहि जानिऐ निज दास। दे भक्ति रमानिवास॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छं०:—दे भक्ति रमानिवास त्रास हरन सरन सुखदायकं ॥
सुख धाम राम नमामि काम अनेक छवि रघुनायकं ।
सुर बृंद रंजन द्वंद भंजन मनुजतनु अतुलितबलं ।
ब्रह्मादि संकर सेव्य राम नमामि करुना कोमलं ॥

दो०—अब करि कृपा बिलोकि मोहि, आयसु हेतु कृपाल ।
काह करौं सुनि प्रिय बचन बोले दीनदयाल ॥

———

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग :—देव नायक सुरेश की वन्दना (स्तुति) समाप्त होने पर भगवान राम ने उन्हें अमृत वर्षा कर मृत भालु कपियों को जीवित करने की आज्ञा दी। इन्द्र ने वैसा ही किया हरि इच्छा से ही अमृत से बानरी सेना तो जीवित हो उठी परन्तु मृत राक्षस नहीं। क्योंकि रामाकार होने में सब मुक्त हो चुके थे। इसके बाद पुष्प वर्षा हुई। सभी देवगण चले गये। इसी अवसर पर भूत-भावन भगवान शंकरजी आए और प्रेम से रामजी की स्तुति करने लगे।

इस स्तुति का नक्षत्र "मूला" माना गया है। शंकरजी राम भक्ति में भूल रूप से हैं ही। संसार का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूल रूप 'मोह" का विनाश ही इस प्रार्थना का प्रतिपाद्य विषय है। इसमें विशेषणी भूत ग्यारह तारे है। पचानन शब्द सिंह की आवृति साम्यता का परिचायक है। इस मूल नक्षत्र का देवता निर्ऋति है जो अशुभ है। अतः संसार के मोहादि सभी इसके परिवार है। "सेवक शालि पालि जल धर से" इसकी फल श्रुति है। भक्ति रूपी शाली कृपा वारिधर राम से अपनी रक्षा की याचना करती है। लं० कां० रो० ११४

स्तुति संख्या १६

दो०—सुमन बरषि सब सुर चले चढ़ि चढ़ि रुचिर विमान।
देखि सुअवसर प्रभु पहिं आयउ संभु सुजान॥
परम प्रीति कर जोरि जुग नलिन नयन भरि वारि।
पुलकित तन गदगद गिरौं बिनय करत त्रिपुरारि॥

—छन्द—

मामभिरक्षय रघुकुल नायक। धृत बर चाप रूचिर कर सायक॥
मोह महा घन पटल प्रभंजन। संसय बिपिन अनल सुर रंजन॥
अगुन सगुन गुन मंदिर सुन्दर। भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर॥
काम क्रोध मद गज पंचानन। बसहु निरंतर जन मन कानन॥
विषय मनोरथ पुंज कंज वन। प्रबल तुषार उदार पार मन॥
भव वारिधि मंदर परमंदर। बारय तारय संसृति दुस्तर॥
स्याम गात राजीव बिलोचन। दीन बंधु प्रनतारति मोचन॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुज जानकी सहित निरंतर। बसहु राम नृप मम उर अंतर॥
मुनि रंजन महि मंडल मंडन। तुलसिदास प्रभु त्रास विखंडन॥
दो०—नाथ अवहिं कोसलपुरीं होइहि तिलक तुम्हार।
कृपासिंधु मैं आउब देखन चरित उदार।

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग—भगवान राम एवं जगज्जननी जानकी दोनों राज सिंहासन पर विराजमान है। सारी अयोध्या की प्रजा आनन्द समुद्र में अवगाहन कर रही है। भरतादिक सभी बन्धु अपनी-अपनी सेवा कर रहे हैं। रामजी राजकीय मुकुटादि एवं समस्त भूषणों से सुशोभित हैं। इसी अवसर पर वेद भगवान राम की स्तुति करने राज सभा में पधारते हैं।

इस स्तुति का नक्षत्र "पूर्वाषाढ़" है। इसमें चार तारे—नमः स्मरण, भजन एवं अनुराग देदीप्यमान हैं। देवता, देवगण, भी है। 'अभिमत दानि देवतरुवर से इस प्रार्थना का फल है। स्तुति करने वाला अभिमत फल पाता है। वेद त्रिगुणात्मक है, अतः त्रिगुणात्मकतापूर्ण समस्त वस्तुएँ वह देता है पर भक्ति भगवान देते हैं। अतः सगुण रूप के माध्यम से ही भक्ति की प्राप्ति का प्रतीक यह स्तुति है। उ० का० दोहा १०।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्तुति संख्या २०

दो० :—यह सोभा समाज सुख कहत न बनइ खगेस।
बरनहिं सारद सेष श्रुति सो रस जान महेस॥
भिन्न-भिन्न अस्तुति करि गए सुर निज-निज धाम।
बंदी बेष बेद तब आए जहँ श्रीराम॥
प्रभु सबग्य कीन्ह अति आदर कृपानिधान।
लखेउ न काहूँ मरम कछु लगे करन गुन गान॥

छं० :—जय सगुन निर्गुन रूप रूप-अनूप भूप सिरोमने।
दसकंधरादि प्रचंड निसिचर प्रबल खल भुज बल हने।
अवतार नर संसार भार बिभंजि दारुन दुख दहे।
जय प्रनतपाल दयाल प्रभु संयुक्त सक्ति नमामहे॥
तव बिषम माया बस सुरासुर नाग नर अग जग हरे।
भव पंथ भ्रमत अमित दिवस निसि काल कर्म गुननि भरे॥
जे नाथ करि करुना बिलोके त्रिबिधि दुख ते निर्बहे।
भव खेद छेदन दच्छ हम कहुँ रच्छ राम नमामहे॥
जे ग्यान मान बिमत्त तव भव हरनि भक्ति न आदरी।
ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी॥
बिस्वास करि सब आस परिहरि दास तव जे होइ रहे।
जपि नाम तव बिनु श्रम तरहिं भव नाथ सो समरामहे॥
जे चरन सिव अज पूज्य रज सुभ परसि मुनि पतिनीतरी
नख निर्गता मुनि बंदिता त्रैलोक्य पावनि सुरसरी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ध्वज कुलिस अंकुस कंज जुत बन फिरत कंटक किन लहे।
पद कंज द्वंद्व मुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे॥
अव्यक्तमूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने।
षट कंध साखा पंच बीस अनेक पर्न सुमन घने॥
फल जुगल विधि कटुमधुर बेलि अकेलि जेहि आश्रित रहे।
पल्लवत फूलत नवल नित संसार बिटप नमामहे॥
जे ब्रह्म अजमद्वैतमनुभवगम्य मनपर ध्यावहीं॥
ते कहहुं जानहुं नाथ हम तव सगुन जस नित गावहीं॥
करुनायतन प्रभु सदगुनाकर देव यह वर मागहीं।
मन बचन कर्म बिकार तजि तव चरन हम अनुरागहीं॥

दो०—सबके देखत वेदन्ह बिनती कीन्ह उदार।
अंतर्धान भए पुनि गए ब्रह्म आगार॥

—o—

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग :—भगवान राम का राज्याभिषेक होने के बाद जब वेदों ने भगवान की हर्षातिरेक से स्तुति कर ली, तब भगवान शंकर वहाँ आते हैं और बड़े प्रेम पूर्वक राघवेन्द्र सरकार की स्तुति करते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस स्तुति का नक्षत्र "उत्तराषाढ़" है। इसमें तीन तारे परिलक्षित हैं। भजे नमामि एवं भजामि के रूप में इस नक्षत्र के देवता विश्वेदेव है। सेवत सुलभ सुखद हरि हर से' इस स्तुति का फल है। उ० का० दोहा १३

स्तुति संख्या-२१

दोहा—बैनतेय सुनु संभु तब आए जहँ रघुवीर।
विनय करत गदगद गिरा पूरित पुलक शरीर॥

—: छन्द :—

जय राम रमारमनं समनं। भव ताप भयाकुल पाहि जनं॥
अवधेस सुरेस रमेस बिभो। सरनागत मांगत पाहि प्रभो॥
दससीस बिनासन बीस भुजा। कृत दूरि महा महि भूरि रूजा॥
रजनीचर बृन्द पतंग रहे। सर पावक तेज प्रचंड दहे॥
महि मंडल मंडन चारूतरं। धृत सायक चाप निषंग बरं॥
मद मोह महा ममता रजनी। तम पुंज दिवाकर तेज अनी॥
मनजात किरात निपात किए। मृग लोग कुभोग सरेन हिए॥
हति नाथ अनाथनि पाहि हरे। विषया बन पावँर भूलि परे॥
बहु रोग बियोगन्हि लोग हए। भवदंघ्रि निरादर के फल ए॥
भव सिन्धु अगाध परे नर ते। पद पंकज प्रेम न जे करते।
अति दीन मलीन दुखी नितहीं। जिन्ह कें पद पंकज प्रीति नहीं।
अवलंब भवंत कथा जिन्ह के। प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह के॥
नहिं राग न लोभ न मान मदा। तिन्ह के सम बैभव वा बिपदा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एहि ते तव सेवक होत मुदा। मुनि त्यागत जोग भरोस सदा॥
करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ। पद पंकज सेवत सुद्ध हिएँ॥
सम मानि निरादर आदरही। सब संत सुखी बिचरंति मही॥
मुनि मानस पंकज भृंग भजे। रघुबीर महा रनधीर अजे॥
तव नाम जपामि नमामि हरी। भव रोग महागद मान अरी॥
गुन सील कृपा परमायतनं। प्रनमामि निरन्तर श्रीरमनं॥
रघुनन्द निकन्दय द्वंद्वघनं। महिपाल बिलोकय दीन जनं।

दोहा—बार बार बर मागउँ हरषि देहु श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग॥

—०—

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग :—भगवान राम का राज्याभिषेक अयोध्या की प्रजा की उत्कट अभिलाषानुसार पूर्ण हुआ। भगवान भोलेशंकर भी स्तुति करके चले गये। एक दिन राघवेन्द्र सरकार ने सभी प्रिय बानरों, अंगद इत्यादि को बुलाया और कृतज्ञता व्यक्त करने के बाद सभी को उचित परामर्श देते हुए कहा, अब गृह जाहु सखा सब भजेहु मोहि दृढ़ नेम। सदा सर्वगत सर्वहित जानि करहु अति प्रेम॥ भगवान का ऐसा विचार देखकर सभी वानर अत्यधिक प्रेम में डूब गये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस स्तुति नक्षत्र का "अभिजित" माना गया है। यह नक्षत्र अव्यवहारिक होता है। हुआ भी ज्योतिष शास्त्र में सत्तावान है। यह नक्षत्र उत्तराषाढ़ का तीन अंश, बीस कल्प एवं श्रावणारम्भ का ८°०।१५ (१३) कलाएँ मिलकर २५-२३ कलात्मक माना जाता है। इस नक्षत्र में तीन तारे हैं जो सुग्रीव विभीषण एवं जाम्बबान के रूप में विद्यमान है।

ब्रह्म इसके देवता हैं "सुकवि शरद नभ मन उडुगन से" इस मौन स्तुति को फलश्रुति है। इस प्रकार प्रसंग है जब रामचन्द्र ने वानरों से कहा —

अब गृह जाहु सखा सब, भजेहु मोहि दृढ़ नेम।
सदा सर्वगत सबहित, जानि करहु अति प्रेम॥
(उ० का० दोहा१६)

स्तुति संख्या-२२

चौपाई

सुनि प्रभु बचन मगन सब भए। को हम कहाँ बिसरि तन गए॥
एकटक रहे जोरि कर आगे। सकहिं न कछु कहि अति अनुरागे॥
परम प्रेम तिन्ह कर प्रभु देखा। कहा बिबिधि बिधि ग्यान बिसेषा॥
प्रभु सन्मुख कछु कहन न पारहिं। पुनि पुनि चरन सरोज निहारहिं॥
तब प्रभु भूषन बसन मगाए। नाना रंग अनूप सुहाए॥
सुग्रीवहि प्रथमहिं पहिराए। बसन भरत निज हाथ बनाए॥
प्रभु प्रेरित लछिमन पहिराए। लंकापति रघुपति मन भाए॥
अंगद बैठ रहा नहिं डोला। प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोला॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोहा :—जामवंत नीलादि सब पहिराए रघुनाथ ।
हियँ धरि राम रूप सब चले नाइ पद माथ ॥

———

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग :—जिस समय भगवान राम ने सभी वानरों को सुन्दर वस्त्रादि से अलंकृत कर दिया उस समय अंगद अत्यधिक प्रेम में डूबे हुए थे । उनके प्रेम के आधिक्य को देखकर भगवान राम उस समय कुछ नहीं बोले । श्री जाम्बवान, इत्यादि भगवान राम की चरण वन्दना कर चले जाने के उपरान्त अंगदजी ने राघवेन्द्र सरकार की दीनता के साथ स्तुति की ।

इस स्तुति का नक्षत्र श्रवण है । इसमें रघुपति, प्रभु तथा करुणासींव तीन तारों के रूप से विभूषित है । इस स्तुति के देवता बामन है । "राम भगत जन जीवन धन से" इस स्तुति का फल है:—उ० का० दो० १७ (ख)

स्तुति संख्या-२३

दो०—तब अंगद उठि नाइ सिरु सजल नयन कर जोरि ।
अति बिनीत बोलेउ बचन मनहुँ प्रेम रस बोरि ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

—:चौपाई:—

सुनु सर्बग्य कृपा सुख सिंधो। दीन दयाकर आरत बंधो॥
मरती बेर नाथ मोहि बाली। गयउ तुम्हातेहि कोछें घाली॥
असरन सरन बिरदु संभारी। मोहि जनि तजहु भगत हितकारी॥
मोरें तुम्ह प्रभु गुर पितु माता। जाउँ कहाँ तजि पद जलजाता॥
तुम्हहि बिचारि कहहु नरनाहा। प्रभु तजि भवन काजमम काहा॥
बालक ग्यान बुद्धि बल हीना। राखहु सरन नाथ जन दीना॥
नीचि टहल गृह कै सब करिहउँ। पद पंकज बिलोकि भव तरिहउँ॥
अस कहि चरन परेउ प्रभु पाही। अब जनि नाथ कहहु गृह जाही॥

दो०—अंगद बचन बिनीत सुनि रघुपति करुना सींव।
प्रभु उठाइ उर लायउ सजल नयन राजीव॥

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग : भगवान राम के राज्य में समस्त प्रजा सभी प्रकार से सुखी एवं आनन्दित है। किसी को भी दैहिक दैविक एवं भौतिक दुख नहीं है। सब अपने अपने धर्म का पालन करते हैं अतएव सभी सुखी हैं। भगवान राम के प्रति इतना प्रेम है कि सभी बड़े लोग छोटे बच्चों को यही शिक्षा देते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस स्तुति का नक्षत्र "धनिष्ठा" है। इसमें चार तारे हैं जो शोभा, शील, रूप एवं गुण धाम के रूप में चमकते हैं। इसके देवता वसु है। राम राज्य में सम्पदा का क्या कमी है? 'सकल सुकृति फल भूरि भोग से' इस स्तुति का फल समझना चाहिए। तभी तो कहा है :— हम सब पुण्य पुञ्ज जग थोरे।
जिनहि राम जानत करि भोरे॥
उ० का० दोहा २६

स्तुतिः स्था-२४

दो०—रमानाथ जहं राजा सो पुर बरनि कि जाइ।
अनिमादिक सुख संपदा रहीं अवध सब छाइ॥

:— चौपाई:—

जहँ तहँ नर रघुपति गुन गावहिं। बैठि परसपर इहइ सिखावहिं॥
भजहु प्रनत प्रतिपालक रामहि। सोभा सील रूप गुन धामहि॥
जलज बिलोचन स्यामल गातहि। पलक नयन इव सेवक त्रातहि॥
धृत सर रुचिर चाप तूनीरहि। संत कंज बन रबि रनधीरहि॥
काल कराल ब्याल खगराजहि। नमत राम अकाम ममता जहि॥
लोभ मोह मृगजूथ किरातहि। मनसिज करि हरि जन-सुखदातहि॥
संसय सोक निबिड़तम भानुहि। दनुज गहन घन दहन कृसानुहि॥
जनकसुता समेत रघुबीरहि। कस न भजहु भंजन भव भीरहि॥
बहु बासना मसक हिम रासिहि। सदा एकरस अज अबिनासिहि॥
मुनि रंजन भंजन महि भारहि। तुलसिदास के प्रभुहि उदारहि॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोहा : एहि बिधि नगर नारि नर करहिं राम गुन गान।
सानुकूल सब पर रहहिं संतत कृपानिधान॥

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंगः—एक बार भगवान राम हनुमान एवं सभी बन्धुओं सहित उपवन देखने गये। वहाँ पर अगस्त्यजी के आश्रम से राम की कथा सुनकर लौटते हुए एवं अयोध्या की ओर आते हुए सनकादि को भगवान राम ने देखा। अति तेजस्वी चारों कुमारों को देखकर प्रभु ने प्रणाम किया तथा बैठने के लिए अपना दिव्य उत्तरीय बिछा दिया। परन्तु सनकादि तो राम के अलौकिक सौन्दर्य को देखकर बैठना ही भूल गये और अपलक दृष्टि से राम के रूपामृत का पान करने लगे। भगवान राम ने अपने हाथों से उन्हें आसीन किया। इस प्रकार कृतज्ञता व्यक्त करते हुए भगवान राम ने सन्त-संग को मोक्ष० का द्वार बतलाया। चारों सनकादि प्रसन्नता से प्रभु की स्तुति करने लगे।

इस स्तुति में "शतभिषाक" नक्षत्र है। इस नक्षत्र के देवता "वरुण" है जो स्तुति में सागरादि शब्दों से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यञ्जित है तथा शत तारिकाओं से देदीप्यमान है। "जगहित निरुपधि साधु लोग से" इसकी फलश्रुति है। उ० का० दोहा ३३

स्तुति संख्या-२५

चौपाई

जय भगवंत अनंत अनामय। अनघ अनेक एक करुनामय॥
जय निर्गुन जय जय गुन सागर। सुख मंदिर सुन्दर अति नागर॥
जय इन्दिरा रमन जय भूधर। अनुपम अज अनादि सोभाकर॥
ग्यान निधान अमान मानप्रद। पावन सुजस पुरान वेद बद॥
तग्य कृतग्य अग्यता भंजन। नाम अनेक अनाम निरंजन॥
सर्ब सर्वगत सर्व उरालय। बससि सदा हम कहुँ परिपालय॥
द्वंद्व बिपति भव फंद बिभंजय। हृदि बसि राम काम मद गंजय॥

दोहा :—परमानंद कृपायनतन परिपूरन काम।
प्रेम भगति अनपायनो देहु हमहि श्रीराम॥

चौपाई

देहु भगति रघुपति अति पावनि। त्रिविध ताप भव दाप नसावनि॥
प्रनत काम सुरधेनु कलपतरु। होइ प्रसन्न दीजै प्रभु यह बरु॥
भव बारिधि कुंभज रघुनायक। सेवत सुलभ सकल सुखदायक॥
मन संभव दारुन दुखदारय। दीनबन्धु समता बिस्तारय॥
आस त्रास इरिषादि निवारक। बिनय बिबेक बिरति बिस्तारक॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूप मौलि मनि मंडन धरनी। देहि भगति संसृति सरि तरनी॥
मुनि मन मानस हंस निरंतर। चरन कमल बंदित अज संकर॥
रघुकुल केतु सेतु श्रुति रच्छक। काल करम सुभाउ गुन भच्छक॥
तारन तरन हरन सब दूषन। तुलसिदास प्रभु त्रिभुवन भूषन॥

दोहा :—बार बार अस्तुति करि प्रेम सहित सिरु नाइ।
ब्रह्म भवन सनकादि गे अति अभीष्ट बर पाइ॥

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग—एक बार भगवान राम ने अयोध्यावासियों-गुरुजनों, द्विजों, साधकों, भक्तों इत्यादि को बुलवाकर उनकी सभा में राम ने अपने स्वभाव, मानवजीवन का लक्ष्य, भक्ति तत्व की विशेषता एवं सन्त स्वरूप का निरूपण किया। भगवान राम के उपदेश को सुन कर सभी प्रसन्न हुए और भगवान की स्तुति करने लगे।

इस स्तुति का नक्षत्र "पूर्व भाद्रपद" है। इसमें भगवान राम एवं रामभक्त—"जो हेतुरहित जग जुग उपकारी है" दो तारे हैं इसके देवता अजैकपाद है जो शिव-स्वरूप है। "सेवक मन मानस मराल से" इस स्तुति का फल है। स्तुतिकर्ता के मानस सर में भगवान आकर स्वयं विराजमान होते हैं। उ० का० दोहा-४६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्तुति संख्या २६

चौपाई

जननि जनक गुरु बंधु हमारे। कृपा निधान प्रान ते प्यारे॥
तनु धनु धाम राम हितकारी। सब बिधि तुम्ह प्रनतारति हारी॥
असि सिख तुम्ह बिनु देइ न कोऊ। मातु पिता स्वारथ रत ओऊ॥
हेतु रहित जग जुग उपकारी। तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी॥
स्वारथ मीत सकल जग माहीं। सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाहीं॥
सबके बचन प्रेम रस साने। सुनि रघुनाथ हृदयँ हरषाने॥
निज निज गृह गए आयसु पाई। बरनत प्रभु बतकही सुहाई॥

दोहा :—उमा :अवधबासी नर नारि कृतारथ रूप।
ब्रह्म सच्चिदानन्द घन रघुनायक जहँ भूप॥

श्री राम शरणं मम

भगवान रामचन्द्र ने जब अवध वासियों को भक्ति एवं अपने स्वरूप का उपदेश दिया तो लोग बहुत ही कृपकृत्य हुए तथा भगवान राम को प्रेम पूरित हृदय से स्तुति की। इसके बाद एक बार गुरु वशिष्ठजी आए। तथा उन्होंने भी राम की स्तुति की।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस स्तुति का नक्षत्र "उत्तरा भाद्रपदा" है। इसके देवता "अहिर्बुधन्य" है। इस स्तुति का फल "पावन गंग तरंग भाल से" है। प्रेम जल से हृदय साफ तो होता ही है। उ० का० दोहा ४७

स्तुति संख्या-२७

—: चौपाई :—

राम सुनहु मुनि कह कर जोरी। कृपासिंध बिनती कछु मोरी॥
देखि देखि आचरन तुम्हारा होत मोह मम हृदयँ अपारा॥
महिमा अमिति बेद नहिं जाना। मैं केहि भाँति कहउँ भगवाना॥
उपरोहित्य कर्म अति मन्दा। वेद पुरान सुमृति कर निंदा॥
जब न लेउँ मैं तब बिधि मोही। कहा लाभ आगें सुत तोही॥
परमात्मा ब्रह्म नर रूपा। होइहि रघुकुल भूषन भूपा॥

दोहा :—तब मैं हृदयँ बिचारा जोग जग्य ब्रत दान।
जा कहुँ करिअ सो पैहउँ धर्म न एहि सम आन॥

चौपाई

जप तप नियम जोग निज धर्मा। श्रुति संभव नाना सुभकर्मा॥
ग्यान दया दमतीरथ मज्जन। जहं लगि धर्म कहत श्रुति सज्जन॥
आगम निगम पुरान अनेका। पढ़े सुने कर फल प्रभु एका॥
तव पद पंकज प्रीति निरंतर। सब साधन कर यह फल सुंदर॥
छूटइ मल कि मलहि के धोएं। घृत कि पाव कोइ बारि बिलोएं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेम भगति जल बिनु रघुराई। अभिअंतर मल कबहुं न जाई॥
सोइ सर्बग्य तग्य सोइ पंडित। सोइ गुनगृह बिग्यान अखंडित॥
दच्छ सकल लच्छन जुत सोई। जाकें पद सरोज रति होई॥

दोहा :—नाथ एक बर मागउँ राम कृपा करि देहु।
जन्म जन्म प्रभु पद कमल कबहुँ घटै जनि नेहु॥

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग :—एक बार भगवान राम हनुमान सहित सभी भाइयों के साथ भ्रमण के लिए उपवन गए। वहाँ भरतजी ने देने हेतु पंखा डुलाने लगे। बल-बुद्धि श्रेष्ठ हनुमान से बढ़कर कौन भाग्यशाली होगा जिनकी भक्ति मिश्रित प्रेम पूर्ण सेवा की सराहना भगवान राम ने स्वयं अपने ही श्री मुख से की है। इसी अवसर पर भक्त नारद का आगमन होता है तथा वह भगवान रामभद्र की भावपूर्ण हृदय से स्तुति करते हैं।

इस प्रार्थना का नक्षत्र "रेवती" है। इसमें ३२ तारे हैं जो मन्डन आदि ,शब्दों से व्यक्जित है। इस नक्षत्र आकार मृदंग के समान है। इसके देवता सूर्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है "कुपथ कुतर्क कुचालि कलि कपट दम्भ पाखण्ड। दहन राम गुन ग्राम जिमि इन्धन अनल प्रचण्ड ॥"

यह उपर्युक्त दोहा ही इस प्रार्थना का फल है। उ० का० दोहा ५०।

स्तुति संख्या-२८

दोहा :—तेहिं अवसर मुनि नारद आए करतल बीन।
गावन लागे राम कल कीरति सदा नवीन॥

चौपाई

मामव लोकय पंकज लोचन। कृपा बिलोकनि सोच बिमोचन॥
नील तामरस स्याम काम अरि। हृदय कंज मकरंद मधुप हरि॥
जातुधान बरूथ बल भंजन। मुनि सज्जन रंजन अघ गंजन॥
भूसुर ससि नव वृन्द बलाहक। असरन सरन दीन जन गाहक॥
भुजबल बिपुल भार महि खंडित। खर दूषन बिराध बध पंडित॥
रावनारि सुखरूप भूपवर। जय दशरथ कुल कुमुद सुधाकर॥
सुजस पुरान बिदित निगमागम। गावत सुर मुनि सन्त समागम॥
करुनीक व्यलीक मद खंडन। सब बिधि कुसल कौसला मंडन॥
कलि मल मथन नाम ममताहन। तुलसीदास प्रभु पाहि प्रनत जन॥

दोहा :—प्रेम सहित मुनि नारद बरनि राम गुन ग्राम।
सोभासिंधु हृदयँ धरि गए जहाँ बिधि धाम॥

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीरामः शरणं मम

प्रसंग :—काग भुसुण्डी जी खगेश को अपनी अतीत जन्म की बात सुनाते हुए कहते हैं कि एक बार जब मैं, अवध का शूद्र था, अकाल पीड़ित होकर अर्थार्जन के हेतु परदेश गया और उज्जन नामक नगर में रहने लगा। वहाँ पर एक वेदनिष्ठ विद्वान् ब्राह्मणने मेरी बाहरी विनम्रता को देखकर यथाधिकार विद्या अध्ययन कराया तथा शिवजी का मन्त्र भी दे दिया जिसका मैं जप किया करता था। मैं शिवजी की तो भक्ति करता था परन्तु विष्णु से और उनके भक्तों से बड़ा द्वेष करता था। इस दुर्भावना को दूर करने के लिए मेरे गुरुदेव मुझे खूब समझाया करते थे और कहते थे कि हरि से दुर्भावना मत करो। श्री शिव तो हरि के सेवक है। हरि शंकर जी का स्वामी है। गुरुदेव की यह बात मुझे अच्छी नहीं लगी और दिल में चुभने लगी।

एक दिन मैं महाकालेश्वर के मन्दिर में शिवजी का नाम जप कर रहा था कि इतने में वहीं पर हमारे गुरुदेव का आगमन हुआ। मैंने अभिमान वश उठकर उनको प्रणाम नहीं किया। दयालुता के कारण गुरु देव तो मुझे कुछ भी नहीं कहा परन्तु शंकर जीने इस गुरु अपमान को मर्यादा की हीनता कहकर मुझे अजगर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदि अनेक अधम योनियों में भटकता हुआ दुःख भोगने का दारुण दण्ड रूप शाप दे दिया। परम दयालु गुरु देव इस दारुण शिव शापको सुनकर अत्यधिक दुःखी हो गए वहीं पर इसकी निवृत्ति के लिए भगवान् शंकर से प्रार्थना करने लगे। मेरे गुरुदेव की प्रार्थना से शंकर जी प्रसन्न हो गए और कहा कि यह अनायास ही सारे योनियों का भोग करलेगा और सभी जन्मों का ज्ञान इसे बना रहेगा। इस प्रकार मेरा उद्धार करा कर गुरु देव वहाँ से चले गए। अन्ततः सभी योनियों से गुजर कर मैं अवध में ही चरम द्विज-देह प्राप्त कर शिव की कृपा, अवध का प्रभाव और रामभक्ति से वर्तमान दशा में रह रहा हूँ।

यह शिव स्तुति उत्तर काण्ड के दोहा नम्बर १०७ के बाद प्रारम्भ होती है।

शिव-स्तुति

नमामीशमीशान, निर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरुपं॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं। गिराग्यान गोतीतमीशं गिरीशं॥
करालं महाकालकालं कृपालं। गुणागार संसारपारं नतोऽहं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं। मनोभूत कोटि प्रभाश्रीशरीरं॥
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारुगंगा। लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा॥
चलत्कुण्डलं सु भ्रू नेत्रं विशालं। प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालुं॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं। प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि॥
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखंडं अजं भानु कोटिप्रकाशं॥
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं। भजेऽहं भवानी पतिं भावगम्यं॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदासज्जनानन्ददाता पुरारी॥
चिदानंद संताप मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं। भजंतीह लोके परे वा नराणाम्॥
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां। नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं॥
जरा जन्म दुःखोघ तातप्यमानं। प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शंभुः प्रसीदति॥

श्री जानकी जी की स्तुति

जय जनकनंदिनि जगत वन्दिनि जन अनंदिनि जानकी॥
रघुवीर नयन चकोर चंदिनि बल्लभा प्रिय प्रान की॥
तव कंज पद मकरंद स्वादित योगिजन-मन-अलि किये।
करि पान गनत न आनहीं निर्वाण सुख मानत हिये॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मादि शिव सनकादि सुरपति आदि निजमुख भाषहीं।
तव कृपा नयन कटाक्ष चितवनि दिवसनिसि अभिलाषहीं॥
तनुपाय तुमहि बिहाय जड़मति आननमानहिं देवहीं।
हत भाग्य सुरतरू त्यागिकरि अनुराग रेड़हिं सेवहीं॥
सुखखानि मंगल दानि जन जिय जानि शरण जो जात है।
तवनाथ सब सुख साथ करि तेहिं हाथ रीझ बिकात हैं।
यह आस "रघुवरदास" की सुखराशि पूरन कीजिये।
निज चरण कमल सनेह मंजू विदेहजा मोहि दीजिये॥

रामजी की स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भजुमन हरण भयभवदारूणं।
नवकंज-लोचन कंज-मुख कर - कंज पद - कंजारूणं॥
कंदर्प अगनित अमित छबि नवनील नीरद सुंदरं।
पट पीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि नौमिजनक सुतावरं॥
भजु दीन बंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश निकंदनं।
रघुनंद आनन्द कंद कौसलचंद दशरथ नंदनं॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारू उदारु अंग विभूषणं॥
आजानुभुज शर-चाप-धर संग्राम - जित - खरदूषणं।
इति वदति तुलसीदास शंकर - शेष - मुनि - मनरंजनं॥
ममहृदय कंज निवास करु कामादि खलदल गंजनं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो बरू सहज सुन्दर साँवरो।
करुणानिधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो॥
ऐहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हरषित अली।
तुलसी भवानिहि पुजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली॥
जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥

॥ श्री हनूमते नमः ॥

श्री हनुमान् चालीसा

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन - कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि - पुत्र पवनसुत नामा॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुण्डल कुञ्चित केसा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हाथ बज्र ओ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै॥
संकर सुवन केसरी नन्दन। तेज प्रताप महा जग बंदन॥
विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिवे को आतुर॥
प्रभु चरित्र सुनिवे को रसिया। राम लषन सीता मन बसिया॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचन्द्र के काज सँवारे॥
लाय सजीवन लखन जियाये। श्री रघुबीर हरषि उर लाये॥
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सकै कहाँ ते॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा॥
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना। लंकेश्वर भए सब जग जाना॥
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥
सब सुख लहै तुम्हारि सरना। तुम रक्षक काहू को डरना॥
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक तें काँपै॥
भूत पिशाच निकट नहिं आवै महाबीर जब नाम सुनावै।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरन्तर हनुमत बीरा॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और मनोरथ जो कोई लावै। सोइ अमित जीवन फल पावै॥
चारों युग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा॥
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकन्दन राम दुलारे॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता॥
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा॥
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै॥
अन्त काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई॥
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्व सुख करई॥
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥
जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरु देव की नाईं॥
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई॥
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥

दोहा

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लषन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥

॥ इति ॥

संकटमोचन हनुमानाष्टक मत्तगयन्द छन्द

बाल समय रबि भक्षि लियो तब तिनहुँ लोक भयो अँधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को यह संकट काहु सों जात न टारो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवन आनि करी विनती तव छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो॥
बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब चाहिये कौन बिचार बिचारो॥
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के सोक निवारो। को-२
अंगद के सँग लेन गये सिय खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौं हम सों जु बिना सुधि लाए इहाँ प्रभु धारो॥
हेरि थके तट सिन्धु सबै तब लाय सिया-सुधि प्रान उबारो॥ को-३
रावन त्रास दई सिय को सब राक्षसि सों कहि शोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो॥
चाहत सीय असोक सों आगि सु दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो। को-४
बान लग्यो उर लछिमन के तब प्रान तजे सुत रावन मारो।
ल गृह बैद्य सुषेन समेत तबै गिरी द्रोन सु बीर उपारो।
आनि सजीवन हाथ दई तब लछिमन के तुम प्रान उबारो॥ को-५
रावन जुद्ध अजान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह संकट भारो॥
आनि खगेस तबै हनुमान जु बंधन काटि सुत्रास निवारो॥ को-६
बन्धु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पताल सिधारो।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो॥
जाय सहाय भयो तब ही अहिरावन सैन्य समेत सँहारो॥ को-७
काज किये बड़ देवन के तुम बीर महाप्रभु देखि बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को जो तुमसों नहिं जात है टारो॥
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो। को-८।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो० :--लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर॥

॥ इति संकट मोचन हनुमानष्टक सम्पूर्ण॥

आरती

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्।
आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

आरती क्या है और कैसे करनी चाहिये ?

पूजा के अन्त में आरती की जाती है। पूजन में जो त्रुटि रह जाती है आरती से उसकी पूर्ति होती है। पूजन मन्त्रहीन, क्रियाहीन होने पर भी आरती कर लेने से उसमें सारी पूर्णता आ जाती है। ॥ स्कन्द पुराण॥

साधारणतः पाँच बतियों से आरती की जाती है। प्रथम दीप माला के द्वारा, दूसरे जलयुक्त, तीसरे घुले हुए वस्त्र से, चौथे आम और पीपल आदि के पतों से, और पाँचवे साष्टांग दण्डवत् से आरती करें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आरती उतारते समय चरणों में चार बार, नाभी देश में दो बार मुख मण्डल पर एक बार और सात बार समस्त अंगों पर घुमायें।

श्री गिरराज भगवान की आरती

॥ जय श्रीकृष्ण ॥

आरती श्रीगिरिराज धरन की।
अद्भुत छबि घनश्याम बरन की॥

मोर चन्द्रिका मुकुट बिराजें।
माथे तिलक अधिक छबि छाजें॥
अनुपम छबि मन काम हरन की॥ आरती०

नासा मंजुल मुक्ता सोहै।
कुण्डल हलन चलन मन मोहै॥
अलक कुटिल हिय बसीकरन की॥ आरती०

खन्जन नैन बैन रस माते।
रुप सुधा रस मृदु मुसकाते॥
कहत थकित मति गति अधरन की॥ आरती०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भक्ति भाव रस घृत करि थाती।
सकल काम कर्पूर की बाती॥
तन मन प्राण माल पुष्पन की॥ आरती०

परम मनोहर नूपुर धारे।
कटि पट पीत निरखि बुध हारे॥
'कुमर" दास नित आस चरन की॥ आरती०

श्री रघुवर की आरती

आरती कीजै श्री रघुवर की, दशरथ नन्दन जानकी वर की॥
भक्ती का दीपक प्रेम की बाती, साधु संग करै दिन राती॥
आरती हनुमत के मन भावे, राम कथा निज शिवजी गावे।
जानकी बल्लभ सीतावर की, आरती कीजै श्री रघुवर की॥

श्री रामायणजी की आरती

आरति श्रीरामायणजी की। कीरति कलित ललित सिय पीकी॥
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बालमीक बिग्यान बिसारद॥
सुक सनकादि सेष अरु सारद। बरनि पवनसुत कीरति नीकी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गावत वेद पुरान अष्टदस। छहो सास्त्र सब ग्रंथन को रस॥
मुनि जन धन संतत को सरबस। सार अंस संमत सबही की॥
गावत संतत संभु भवानी। अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी॥
व्यास आदि कबिबर्ज बखानी। काग भुसुण्डि गरुड़ के ही की॥
कलि मल हरनि विषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबतीकी॥
दलन रोग भव मूरि अमी की। तात मात सब बिधि तुलसी की॥

श्री गंगाजी की आरती

जय गंगा मैया-माँ जय सुर सरि मैया।
भव वारिधि उद्धारिणो अतिहि सुदृढ़ नैया॥ जय

हरि-पद-पद्म-प्रसूता बिमल वारि धारा।
ब्रह्मद्रव भागीरथि शुचि पुण्या गारा॥ जय

शंकर जटा विहारिणी हारिणि त्रय तापा।
सगर-पुत्र-गण-तारिणि हरिणि सकल पापा॥ जय

गंगा-गंगा जो जन उच्चारित मुख सों।
दूर देश में स्थिति, तुरत तरत सुख सों॥ जय

मातु दयामयि कीजै, दीनन पर दाया।
प्रभु पद पद्म मिलाकर हरि लीजै माया॥ जय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री गणेशजी की आरती

जै गणेश जै गणेश जै गणेश देवा । टेक॥

माता तेरी पारवती पिता महादेवा ।
लड्डुवन के भोग लगत संत करे सेवा ॥जै॥

एक दंत दयाबन चार भुजा धारी ।
मस्त पर तिलक सोहे मूसे की सवारी ॥जै॥

अन्धन को आंख देत कोढ़िन को काया ।
बांझत को पुत्र देत निर्दन को माया ॥जै॥

पान चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा ।
सूर श्याम शरण आये सफल कीजै सेवा ॥जै॥

श्री यमुनाजी की आरती

जय कालिन्दी हरि प्रियाजय, जय रवि तनया तपोमयो जय ।
जय श्यामा अति अभिरामा जय, जय सुखदा श्रीहरि रामा जय ।
जय-ब्रजमण्डल वासिनी जय जय, जय द्वारिका निवासिनि जयजय ।
जय कलि-कलुष नसावनि जय जय, नय यमुने जय पावनि जयजय ।
जय निर्वाण-प्रदायिनी जय जय, जय हरि प्रेम दायिनी जय जय ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री भगवान् जानकीनाथ की आरती

जय जानकी नाथा, (प्रभु) जय श्री रघुनाथा।
दोउ कर जोरें विनवौं प्रभु सुनिये बाता ।।जय०।।
तुम रघुनाथ हमारे प्रान पिता - माता।
तुम ही सज्जन संगी भक्ति-मुक्ति-दाता ।।जय०।।
लख चौरासी काटो मेटो यम - त्रासा।
निसदिन प्रभु मोहि रखिये अपने ही पासा ।।जय०।।
राम भरत लछिमन संग शत्रुहन भैया।
जगमग ज्योति विराजै शोभा अति लहिया ।।जय०।।
हनुमत नाद बजावत नेवर झमकाता।
स्वर्ण थाल कर आरति कौसल्या माता ।जय०।।
सुभग मुकुट सिर धनु सर कर शोभा भारी।
मनिराम दर्शन करि पल-पल बलिहारी ।जय०।।

श्री जानकीजी की आरती

आरती जनक-लली की कीजै।
सुवरन-थार बारि घृत-बाती, तन निज बारि रूप-रस पीजै ।।
गौर बरन सुन्दर तन सोभा, नख सिख छबि नैननि भरि लीजै।
सरस-माधुरी स्वामिनि मेरी, चरन कमल में चितनित दीजै ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री भगवान श्यामसुन्दर की आरती

आरति कीजै स्याम सुन्दर की, नंद कुमार राधिका वरकी ॥
भक्ति दीप कर प्रेम सुबाती, सतसंगति कर अनुदिन राती ॥
आरति व्रजजुवती मन भावै, स्यामलीला हितहरिवंस गावै ॥

गुरुदेव की आरती एवं अरदास

जय गुरुदेव दयानिधि, दीनन हितकारी, स्वामी दीनन हितकारी ।
जय जय मोह विनाशक, भव-बंधन हारी, ॐ जय-जय-जय गुरुदेव ।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव गुरु मूर्तिधारी, स्वामी गुरु मूर्तिधारी ।
वेद पुराण बखानत गुरु महिमा भारी, ॐ जय-जय-जय गुरुदेव ॥
जप, तप, तीरथ, संजम, दान बिबिध दीन्हें,
गुरु बिन ज्ञान न होवे, कोटि जतन कीन्हें, ॐ जय-जय-जय गुरुदेव ॥
माया, मोह, नदी जल जीव बहे सारे ।
नाम जहाज बिठाकर, गुरु पल में तारे ॐ जय-जय-जय गुरुदेव ।
काम, क्रोध, मद, मत्सर चोर बड़े भारे,
ज्ञान-खड्ग दे कर में, गुरु सब संहारे, ॐ जय-जय-जय गुरुदेव ॥
नाना पंथ जगत में, निज निज गुण गावें,
सबका सार बताकर गुरु सारग लावें ॐ जय-जय-जय गुरुदेव ।
गुरु चरणामृत निर्मल, सब पातक हारी,
बचन सुनत तम नाशे, सब संशय हारी, ॐ जय-जय-जय गुरुदेव ॥
तन, मन, धन सब अर्पण, गुरु चरणन कीजै,
ब्रह्मानन्द परमपद, मोक्ष गति लीजै, ॐ जय-जय-जय गुरुदेव ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री महालक्ष्मीजी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता (मैया) जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसिदिन सेवत हर-विष्णु धाता ॥ॐ॥

उमा, रमा, ब्रह्माणी तुम ही जग-माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ॐ॥

दुर्गा रूप निरंजनि सुख सम्पति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि-धन पाता ॥ॐ॥

तुम पाताल-निवासिनी, तुम ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव प्रकाशिनी भवनिधि की त्राता ॥ॐ॥

जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता।
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता ॥ॐ॥

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान-पान का वैभव सब तुम से आता ॥ॐ॥

शुभ - गुण - मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिनु, कोई नहिं पाता ॥ॐ॥

महालक्ष्मी (जी) की आरति, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द न समाता, पाप उतर जाता ॥ॐ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री भगवान् कुंज बिहारी की आरती

आरती कुंजबिहारी की, श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ॥टेक॥
गलेमें वैजन्तीमाला, बजावें मुरलि मधुर वाला
श्रवणमें कुण्डल झलकाला।

नंदके आनन्द नंदलाला, श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ॥आरती॥
गगन सम अँग कांति काली, राधिका चमक रही आली,
लतनमें ठाढ़े बनमाली।

कस्तूरी-तिलक चँद्र-सी झलक, भ्रमर-सी-अलक,
ललित छबि श्यामा प्यारीकी ॥श्रीगिरधर॥

कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवत दरसन कों तरसै,
गगन सों सुमन रासि बरसै।

बाज रहे चंग मधुर मिरदंग, ग्वालनो संग,
अतुलरति गोपकुमारीकी ॥श्रीगिरधर॥

जहाँ से प्रगट भई गंगा, कलुष कलि हारिणी श्रीगंगा,
स्मरण से होत मोह - भंगा।

बसी सिव सीस जटा के बीच, हरैं अघ कीच-
चरन छबि श्रीबनवारीकी ॥श्री गिरधर॥

बज रही वृन्दावन बेणू, चमक रही यमुना तट रेणू,
चहूं दिसि गोपि ग्वाल धेनू।

हँसत मृदु मंद, पूर्ण ब्रजचन्द, कटत भव-फन्द,
टेर सुनु दीन भिखारी को ॥श्री गिरधर॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री युगल स्वरूप की आरती

आरति युगल किशोर की कीजै, तन मन धन न्यौछावर कीजै ॥
गौर श्याम मुख निरखत जीजै, प्रभु को स्वरूप नयन भर पीजै ॥
रवि शशि कोटि बदन की शोभा, हरष निरख मेरो मन लोभा ॥
कंचन थाल कपूर की बाती, हरि आये शीतल भई छाती ॥
मोर मुकुट कर मुरली सोहै, नटवर वेष देख मन मोहै ॥
फूलन की सेज फूलन गल माला, रतन सिंगासन बैठे नंदलाला ॥
श्री पुरुषोत्तम गिरिवर धारी, आरति करत सकल नर-नारी ॥
नन्दनन्दन वृषभानु किशोरी, परमानन्द स्वामी अविचल जोरी ॥

श्री तुलसीकी की आरती

ॐ जय तुलसी माता मैया जय तुलसी माता।
विष्णु प्रिये। जग जननी सुख सम्पत्ति दाता। ॐ
जिस घर वास तिहारे रोग नहीं आता।
मंगल मोद बढ़े नित भव भय कट जाता। ॐ
दरश परस नित सिंचन पूजन बन जाता।
भाव सहित परिक्रमा सब दुःख मिट जाता। ॐ
छप्पन भोग छतीसों व्यञ्जन मन भाता।
बिन तुलसी हरि कबहुँ भोग नहीं पाता। ॐ
बिनय करूँ कर जोर के सुन मेरी बाता।
ईश भक्ति दे मुझको छूटे जग नाता। ॐ
प्रेम सहित यह आरती जोजन नित गाता।
'सन्त' सदा वह निश्चय मन वांछित पाता। ॐ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री भगवान जगदीश्वर की आरती

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, छिन में दूर करे ॥ॐ॥
जो ध्यावे फल पावै, दुख बिनसै मनका।
सुख - सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तनका ॥ॐ॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।
तुम बिनु और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ॐ॥
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ॐ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन - कर्ता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ॐ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती।
किस विधि मिलूँ, दयामय तुम को मैं कुमती ॥ॐ॥

दीन बन्धु दुखहर्ता, तुक ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ॐ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ संतन की सेवा ॥ॐ॥
पारब्रह्म की आरति जो कोइ नर गावें।
भणत शिवानन्द स्वामी वांछित फल पावें ॥ओऽम्॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री भगवान सत्यनारायणजी की आरती

जय लक्ष्मी रमणा (प्रभु) श्री लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी जन-पातक-हरणा ॥ जय० ॥
रत्नजड़ित सिंघासन अद्भुत छबि राजै।
नारद करत निराजन घण्टा ध्वनि बाजै ॥ जय० ॥
प्रकट भए कलि कारण द्विज को दरस दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बन के कंचन महल कियो ॥जय०॥
दुर्बल भील किरातन जिन पर कृपा करी॥
चन्द्रचूड़ एक राजा जिनकी बिपति हरी ॥जय०॥
वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धातज दीन्ही॥
सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर अस्तुति कीन्ही॥
भाव भक्ति के कारण छिन-छिन रूप धर्‌यो।
श्रद्धा धारण कीनी, उनको काज सर्‌यो ॥जय०॥
ग्वाल बाल संग राजा वन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीना दीन दयालू हरी ॥जय०॥
चढ़त प्रसाद सवायो कदलीफल मेवा।
धूप-दीप-तुलसी से राजी सत्यदेवा ॥जय०॥
सत्यनारायण स्वामी की आरति जो कोई नर गावै।
'भगतदास' सुख सम्पति बांछित फल पावै। जय०॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवती दुर्गा की आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत हर ब्रह्मा शिवरी ॥जय॥
माँग सिन्दूर विराजत टीको मृगमद को।
उज्जवल से दोउ नैना चन्द बदन नीको ॥जय॥
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प वनमाला कण्ठन पर साजै ॥जय॥
केहरि वाहन राजत खड्ग खपर धारी।
सुरनर-मुनिजन सेवत तिनके दुखहारी ॥जय॥
कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत समज्योति ॥जय॥
शुम्भ निशुम्भ बिदारे महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना दिसदिन मदमाती ॥जय॥
चौसठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृदंगा अरु बाजत डमरूँ ॥जय॥
भुजाचार अति शोभित बर-मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत सेवत नर नारी ॥जय॥
कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती।
श्री माल केतु में राजत कोटिरतन ज्योति ॥जय॥
या अम्बेजी की आरति जो, कोई नर गावै।
भणत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पति पावै ॥जय॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री भगवान् शिव-ब्रह्मा-विष्णु की आरती

जय शिव ओंकारा, प्रभु भज शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव, अर्धङ्गीधारा ॥जय॥
एकानन, चतुरानन, पंचानन, राजे।
हंसासन. गरुड़ासन, वृषवाहन, साजे ॥जय॥

दोय भुज चार चतुर्भुज दसभुज शिव सोहे।
तीनो रूप निरखता त्रिभुवन मन मोहे ॥जय॥

अक्षमाला. बनमाला, रुण्डमाला, धारी।
चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभ कारी ॥जय॥
श्वेताम्बर पीताम्बर वाघम्बर अंगे।
सनकादिक प्रभुतादिक भूतादिक संगे ॥जय॥
कर मध्ये च कमण्डल चक्र त्रिशुल धरता।
जगकर्ता जगभर्ता जग-संहार कर्ता ॥जय॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणव अक्षर के मध्ये यह तीनो ऐका ॥जय॥

काशी में विश्वनाथ विराजत नन्दीब्रह्मचारी।
नितउठ भोग लगावत सेवत नर नारी ॥जय॥

त्रिगुणास्वामी की आरति जो कोई नरगावे।
भणतशिवानन्दस्वामीवांक्षितफलपावे ॥जय॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवान शालिग्राम की आरती

शालिग्राम सुनो विनती मेरी यह वरदान दया कर पाऊँ ॥
प्रात समय उठ मज्जन करके, प्रेम सहित अस्नान कराऊँ ।
धूप दीप तुलसी की माला, वरण वरण का पुष्प चढ़ाऊँ ॥
आप विराजो प्रभु रतन सिंघासन झालर शंख मृदंग बजाऊँ ।
एक बूँद चरणामृत लेकर, कुटुम्ब सहित बैकुण्ठ पठाऊँ ॥
छप्पन भोग छतीसो व्यंजन, प्रेम सहित प्रभु आपको जिमाऊँ ।
पनबाड़ो भक्तों ने दीजो भोग लगाकर भोजन पाऊँ ॥
जो कुछ पाप कर्म किया काया से, दे परिकरमा तांहि नसाऊँ ।
माधव दास आस रघुवर की, हरष निरष तेरो गुण गाऊँ ॥

श्री साँवलशाह की आरती

साँवलशाह गिरधारी भलाहो, रामा साँवल साह गिरधारी ।
हो हरि बिना मोरी गोपाल, बिना मोरी कौन खबर ले ॥टेक०॥
मोर मुकुट शिर छत्र विराजे, कुण्डल की छवि न्यारी ।
भलाहो रामा कुण्डल की, शोभा न्यारी हो हरि·····॥
पञ्च रंग पाग केसरिया बागो, हिबड़े हार हजारी ।
भला हो रामा गल बिच हार हजारी हो हरि·····॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वृन्दावन में धेनु चरावे वंशी बजावे गिरवर धारी।
भला हो रामा मुरली बजावे कुञ्ज विहारी हो हरि..... ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर चरण कमल बलिहारी।
भला हो रामा हरि के चरण उपर वारी हो हरि..... ॥

श्री काली जी की आरती

मंगल को सेवा सुन, मेरी देवा, हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारी ध्वजा नारियल ले ज्वाला तेरी भेंट धरे॥
सुन जगदम्बे न कर विलम्बे, संतन का भंडार भरे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जै काली कल्याण करे ॥टेक॥
'बुद्ध' विधाता तू जग-माता, मेरा कारज सिद्ध करे।
चरण-कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन परे॥
जब जब भीड़ पड़े संतन पर, तब तब आय सहाय करे।
संतन प्रतिपाली ॥२॥

'गुरूवार' से तब जग मोह्यो तरुणी रूप अनूप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावे, कहीं भार्या भोग करे॥
तेरी महिमा कब तक बरणूँ बैठी कोट कल्याण करे।
संतन प्रतिपाली० ॥३॥

'शुक्र' सुखदाई सदा सहाई, संत खड़े जयकार करे।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शेष सब लिए भेंट तेरे द्वार खड़े॥
अटल सिंघासन बैठी माता सिर सोने का छत्र फिरे।
संतन प्रतिपाली०॥४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'बार शनिश्चर' कुंकुम बरणी, जब लड़कन पर हुकुम करे।
खड्ग खप्पर, त्रिशूल, हाथ लिए रक्त बीज कूँ भस्म करे॥
शुंभ निशुंभ क्षणहि में मारे, महिषासुर को पकड़ दले।
संतन प्रतिपाली० ॥५॥

'आदित' बारी आदि भवानी, जन अपने का कष्ट हरे।
कुपित होय कर दानव मारे, चण्ड मुण्ड सब चूर करे॥
जब तुम देखो दया रूप हो, पल में संकट दूर करे।
संतन प्रतिपाली ॥६॥

'सोम' स्वभाव धरयो मेरी माता जन की अर्ज कबूल करे।
सिंघपीठ पर चढ़ो भवानी, अटल भवन में राज्य करे॥
दुनिया आवे दर्शन पावे, सिद्ध साधक तेरी भेंट धरे।
संतन प्रतिपाली० ॥७॥

सात बार की महिमा बरनी सब गुण कौन बखान करें।
चाँद सूरज दोउ तपे तेज से, तेरे तेज का गान करे॥
चरण कमल का लिया सहारा आनन्दी आनन्द करे।
संतन प्रतिपाली० ॥८॥

ब्रह्मावेद पढ़े तेरे द्वारा, शिवशंकर हरि ध्यान करे॥
इन्द्र वरूण तेरो करे आरती, चमर कुबेर डुलाया करे॥
जय जननी जय मातु भवानी, अचल भवन में राज्य करे।
संतन प्रतिपाली० ॥९॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री गीता जी की आरती

जय भगवद् गीते मैया जय भगवद् गीते।
हरि हिय कमल विहारिणि सुन्दर सुपुनीते॥

कर्म सुमर्म प्रकाशिनि कामाशक्तिहरा।
तत्व ज्ञान विकाशिनि विद्या ब्रह्म परा॥

निश्चल भक्ति विधायनि निर्मल मलहारी।
शरण रहस्य प्रदायिनि सब विधि सुखकारी॥

राग द्वेष विदारिणि, कारिणि मोद सदा।
भव भय हारिणि तारिणि परमानन्द प्रदा।

आसुर भाव विनाशिनि नाशिनितमरजनी।
दैवी सद्गुणदायिनि हरि रसिका सजनी॥

समता त्याग सिखावनि हरि मुख की बानी।
सकल शास्त्रों की स्वामिनि श्रुतियों की रानी॥

दया सुधा बरसावनि मातु कृपा कीजै।
हरि पद प्रेम दान कर अपनो कर लीजै॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीमद्भागवत पुराण की आरती

आरती अति पावन पुरान की धर्म भक्ति विज्ञान ज्ञान की ॥
महापुराण भागवत निर्मल शुक मुख विगलित निगम कल्प फल।
परमानन्द सुधा रसमय कल लीला रति रस रसनिधान की ॥आ०

कलि मल मथनि त्रिताप निवारिनि जन्म-मृत्युमय भव भय हारिनि।
सेवत सतत सकल सुख कारिनि सुमहौषधि हरि चरित गानकी॥आ०

विषय विलास विमोह विनाशिनि विमल विराग विवेक विकाशिनि।
भगवत्तत्व रहस्य प्रकाशिनि परम ज्योति परमात्म ज्ञान की ॥आ०

परमहंस मुनि मन उल्लासिनि रसिक हृदय रसरास विलासिनि।
भुक्ति, मुक्ति, रति प्रेम सुदासिनि कथा अकिंचन प्रिय सुजानकी॥आ०

कैलाशपति शंकरजी की आरती.

शीश गंग अर्धंग पार्वती सदा विराजत कैलासी।
नन्दी भृंगी नृत्य करत है गुण भक्तन शिव की दासी॥

शीतल मन्द सुगन्ध पवन वहै बैठे हैं शिव अविनाशी।
करत गान गन्धर्व सप्तस्वर रागरागिनि अति गासी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यक्ष रक्ष भैरव जहाँ डोलत बोलत हैं बन के वासी।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर भ्रमर करत हैं गुंजासी॥
कल्पद्रुम अरु पारिजात तरु लाग रहे हैं लक्षासी।
काम धेनु कोटिक जहाँ डोलत करत फिरत हैं भिक्षासी॥
सूर्यकान्ति सम पर्वत शोभित चन्द्रकान्ति भव मीवासी।
छहों तो ऋतु नित फलत रहत हैं पुष्प चढ़त हैं वर्षासी॥
देव मुनि जिनकी भीड़ पड़त हैं निगम रहत जो नित गासी।
ब्रह्मा विष्णु जाको ध्यान धरत हैं कछु शिव हमको फर्मासी॥
ऋद्धि सिद्धि के दाता शंकर सदा अनन्दित सुख रासी।
जिनका सुमरण सेवा करतां टूट जाय यम की फाँसी।
त्रिशूल धरजी को ध्यान निरंतर मन लगाय कर जो गासी।
दूर करो विपदा शिव तन की जन्म जन्म शिव पद पासी॥
कैलाशी काशी के वासी अविनाशी मेरो सुध लीजो।
सेवक जान सदा चर नन को अपनी जान कृपा कीजो॥
आपतो प्रभुजी सदा सयाने बाबा अवगुण मेरा सब ढकियो।
सब अपराध क्षमाकर शंकर किंकर की विनती सुनियो॥
अभयदान दीजो प्रभु मोरे सकल सृष्टि के हितकारी।
भोलेनाथ बाबा भक्त निरंजन भव मंजन भव शुभकारी॥
काल हरो हर कष्ट हरो हर दुःख हरो दारिद्र हरो।
नमामि शंकर भवानी भोले हर हर शंकर तुम शरणा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री हनुमानजी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की॥
जाके बल से गिरिवर काँपै। रोग दोष जाके निकट न झाँपै॥
अंजनिपुत्र महा बल दाई। संतन के प्रभु सदा सहाई॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंकाजारि सोय सुधि लाये॥
लंका सो कोट संमुद्र सी खाई। जात पवन सुत वारन लाई॥
लंका जारि असुर संहारे। सियारामजी के काज सँवारे॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सजीवन प्राण उवारे॥
पैठि पताल तोरि जम कारे। अहिरावन के भुजा उखारे॥
बाँये भुजा असुर दल मारे। दहिने भुजा संतजन तारे॥
दुए नर मुनि आरती उतारे। जै जै जै हनूमान उचारे॥
कंचनथार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना भाई॥
जो हनुमानजी कीआरती गावै। बसि बैकुंठ परमपद पावै॥

आरति श्री राधिकाजी की

आरती श्री वृषभानु लली की सतचित आनन्द कन्द कली की।
भय भंजिनि भव सागर तारिणि पाप ताप कलि कलमष हारिणी॥
दिव्य धाम गोलोक विहारिणी जन पालिनि जग जननी भली की।
अखिल विश्व आनन्द विधायिनि मंगलमयी सुमंगल दायिनी॥
नंद नंदन पद प्रेम प्रदायिनी अमिय राग रस रंग रली की॥
नित्यानन्दमयी-आह्लादिनी आनन्द घन आनन्द प्रसाधिनि।
रसमयी रसमय मन उन्मादिनि सरस कमलिनि कृष्ण अली की॥
नित्य निकुञ्जेश्वरि राजेश्वरि परम प्रेम रूपा परमेश्वरि।
गोपि-गणाश्रयि गोपि जनेश्वरि विमल विचित्र भाव, अवलीकी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भक्त भजनावलि

कृतेयद्ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः।
द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरिकीर्तनात्॥

इस भाग में भारतीय सन्तों के कुछ चुने हुए भजन प्रेमी भक्तों की सेवा में समर्पित है। ये मीरा सूर, तुलसी, नानक कबीर, तथा अन्य महान सन्तों की वाणी से लिये गये हैं। सन्त सभी का कल्याण ही करते हैं तथा दूसरों के दुख से सन्त का मक्खन रूपी हृदय स्वतः ही द्रवित हो जाता है। फिर उनकी वाणी तो हरि चिन्तन में लीन रहने के कारण और भी अधिक पवित्र होती है जिससे सांसारिक जीवों का कल्याण निश्चित ही होता है। इन भजनों के सादर एवं श्रद्धापूर्वक गायन मात्र से ही व्यक्ति को बड़ी ही अपूर्व शान्ति मिलती है। तुलसीदास का तो यहाँ तक कथन है :—

सादर सुमिरन जे नर करहीं, भवसागर गोपद इव तरहीं।

भारतीय संगीत शास्त्र के अनुसार स्वरों की साधना कर मधुमय संगीत के रूप में प्रस्तुत करना ही नादयोग है। कहा भी गया है :—

नादानुसन्धान नमोस्तु तुभ्यं त्वत्साधनं तत्वपदसु जाने।
भवत्प्रसादात्यवनेन साकं विलीयते विष्णुपदे मनो मे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसका तात्पर्य यह है कि परमेश्वर की प्राप्ति का संगीत सुलभ साधन है। जिसे पंचम वेद कहा गया है। गायन के अभ्यास से प्राण रुकता है जिससे आयु बल, बुद्धि बढ़ती है। व्यवहार में जन्म से मरण तक संगीत का उपयोग जीवन के सभी प्रसंगों में होता है। भगवान शंकर के हाथ में डमरू माँ सरस्वती के हाथ में वीणा तथा श्रीकृष्ण के हाथ में मुरली भी संगीतमय भगवत नाम उच्चारण तथा संकीर्तन के प्रतीक हैं।

भगवान के चरणों का चिन्तन करना, समस्त संसार को भगवान का ही रूप मानकर उसकी सेवा करना, मन को सदा उच्च संकल्पों का श्रोत बनाकर लोकोपकारी कार्यों को करना तथा शुद्धतापूर्वक अपने परिश्रम से अर्जित किए गये धन को दान एवं लोकसेवा में लगाना ही मुख्य रूप से भक्ति है। भारतीय ऋषियों के अनुसार नवधा भक्ति ही जीवन का मुख्य ध्येय है जो निम्नलिखित रूप से है।

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्॥

श्रद्धा भक्ति के प्रत्येक अंग में निष्णान्त भक्तों के चरित्रगान से जीवन में पवित्रता एवं आनन्द की प्राप्ति होती है। भारतीय ऋषियों के अनुसार श्रवण के प्रतीक राजा परीक्षित तथा कीर्तन में श्री शुकदेवजी तथा नारदजी आदर्श हैं जबकि स्मरण में गजेन्द्र ध्रुव एवं प्रह्लादजी सर्वश्रेष्ठ तथा सेवन में श्री लक्ष्मीजी सर्वोत्तम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतीक के रूप में है। पूजन के आदर्श रूप में राजा पृथु, वंदना भक्ति के प्रतीक रूप में अक्रूरजी एवं व्रज के गोप बालक तथा दास भाव के प्रतीक श्री हनुमन्तलालजी, सुग्रीव तथा गोपियाँ हैं। इसी प्रकार अर्जुन सख्य भाव के तथा राजा बलि आत्म-निवेदन अंग के प्रतीक हैं।

यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि नवधा भक्ति के सभी अंगों में कीर्तन अंग को प्रमुखता दी गई है। चैतन्य महाप्रभु के अनुसार संकीर्तन से प्राणवायु नियंत्रित होती है जिससे व्यक्ति को बड़े आनन्द की प्राप्ति निर्बाध गति से होती है। आत्मा में आनन्द का संचार होता है तथा पाप करने की प्रवृत्ति, दुष्कृतियों एवं पूर्व पापों का क्षय होता है। आत्मा पूर्णानन्द से भर जाती है तथा हृदय को अन्धकार-रूपी ग्रन्थि (काम क्रोध मद लोभ, मोह तथा मत्सर नष्ट हो जाते हैं) खुल जाती है, साथ ही महाभाव (भगवत चिन्तन में तन्मयता) जागृत होता है तथा मानव हृदय में राधा एवं कृष्ण प्रतिष्ठित होकर नित्य विहार करते हैं। इस नित्य विहार में सर्वत्र आनन्द ही आनन्द है। अतः कीर्तन जीवन को पवित्र बनाने तथा उसे भगवान की ओर अग्रसर करने का प्रमुख साधन है। नाम संकीर्तन के समय नामब्रह्म भगवान के परब्रह्म स्वरूप का ध्यान मनुष्य को अपने हृदय में करना चाहिए। मन को भगवान के चरणों में लगाकर हाथ से ताली बजाते हुए तथा नादब्रह्म शब्द मुख से संगीतमय स्वरों से सारे सांसारिक सम्बन्धों को विस्मृति कर भगवान के नाम शब्द ब्रह्म नाम का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उच्चारण करते रहें। यही पूर्व एवं पूर्ण शान्ति की प्राप्ति का साधन है।

भारतीय आचार्यों के अनुसार सतयुग में जो सिद्धि एवं फल ध्यान से, त्रेता युग में यज्ञ जप तप से द्वापर में पूजा एवं अर्चना से प्राप्त होता था, वही सिद्धि कलियुग में केवल संकीर्तन मात्र से प्राप्त हो जाती है। एक सन्त का कितना सुन्दर भाव है।

हरे र्नामैव नामैव नामैव मम जीवनम्।
कलौ, नास्त्यथैव नास्त्यैव नास्त्यैव गतिरन्यथा॥

कलियुग सम युग आन नहि जो नर कर विश्वास।
गाय रामगुण गन विमल भवतर बिनहिं प्रयास॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भजनारम्भ

(१)

गाईये गणपति जग बंदन।
संकर - सुवन भवानी - नंदन॥
सिद्धि-सदन गज-बदन विनायक।
कृपा-सिंधु सुन्दर सब लायक॥
मोदक - प्रिय मुद - मंगल-दाता।
विद्या - वारिधि बुद्धि - विधाता॥
माँगत तुलसिदास कर जोरे।
बसहिं रामसिय मानस मोरे॥

(२)

रुनक झुनक पग नेवर बाजे गजानन्द नाचै।
गजानन्द नाचै बिनायक, गणपत जी नाचै॥
मूसक वाहन सूण्ड सूण्डाला, एक दन्त साजै।
गल पुष्पन का हार विराजै, कोटि काम लाजै॥
पिता तुम्हारे हैं शिवशंकर, नंदीश्वर साजै।
माता तुम्हारी है श्री गिरिजा सिंघ चढ़ी गाजै॥
विघ्न निवारण मंगल कारन राजन पति राजै।
तुलसिदास गणपति ने सुमर्‌या दुःख दारिद भाजै॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(३)

मंगल-मूरति मारुत-नंदन, सकल-अमंगल मूल-निकंदन ॥
पवन तनय संतन हितकारी हृदय विराजत अवध बिहारी ॥
मातु-पिता-गुरु, गनपति, सारद सिवा-समेत संभु सुक-नारद ।
चरन बंदि विनवौं सब काहू देहु राम पद-नेह निबाहू ॥
बंदौ राम - लखन - बैदेही जे तुलसी के परम सनेही ॥

(४)

जागिये रघुनाथ कुँवर पंक्षी बन बोले ॥
चन्द्रकिरण शीतल भई चकई पिय मिलन गई ।
त्रिविध मंद चलत पवन पल्लव द्रुम डोले ॥
प्रात भानु प्रकट भयो रजनी को तिमिर गयो ।
भृँग करत गुँज गान कमलन दल खोले ॥
ब्रह्मादिक धरत ध्यान सुरनर मुनि करत गान ।
जागन की बेर भई नयन पलक खोले ।
तुलसिदास अति आनन्द निरखि के मुखारविन्द
दीनन को देत दान भूषण बहु मोले ॥

(५)

ऐसी मूढ़ता या मन की ॥
परिहरि राम-भगति-सुर-सरिता आस करत ओसकन की ॥
धूम-समूह निरखि चातक ज्यों तृषित जानि मति घन की ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहिं तहँ शीतलता न वारि पुनिहानि होति लोचन की ॥
ज्यों गज-काँच विलोकि सेन जड़ छाँह आपने तनकी ।
टूटत अति आतुर अहारबस छति बिसारि आनन की ॥
कहँ लौं कहौं कुचाल कृपानिधि जानत हौ गति जनकी ।
तुलसिदास प्रभु हरहु दुसह दुख करहु लाज निजपन की ॥

(६)

ठुमक चलत रामचन्द्र बाजत पैजनियाँ ॥
किलक किलक उठत धाय गिरत भूमि लटपटाय ।
धाय मात गोदी लेत दशरथ के रनियाँ ॥ ठुमक० ॥
अञ्चल रज अंग झाड़ि विविध भाँति को दुलारि ।
तन मन धन वारि वारि कहत मधु बचनियाँ ॥
विद्रुम से अरुण अधर बोलत मुख मधुर मधुर ।
सुभग नासिका में चारु लटकत लटकनियाँ ॥
तुलसिदास अति आनन्द निरखि के मुखारविन्द ।
रघुवर छवि के समान रघुवर छवि बनियाँ ॥

(७)

रहनारे नैना बाँके यह मुनि संग बालक काँके ।
कौन नगर में जनम लियो है को है नाम पिता के ॥
रवि सशि कोटि वदन की शोभा श्याम गौर तन जाके ।
राम लखन कौशल्या जाये दशरथ नाम पिताके ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीत वस्त्र बैजन्तीमाला क्रीट मुकुट सिर जाके।
गोतमऋषि की नारि अहिल्या तारी चरण छुवाके॥
मुनि को यज्ञ पूरन करवायो आये गृह राजा के।
आय विपद सब हरि रामने काज सारे सियाके॥
सभी सखी सीतावर माँगन पूजन चली उमा के।
तुलसिदास विधि आय बनी है लेख लिखे विधना के।

(८)

बंदौं रघुपति करुना - निधान जाते छूटै भव - भेद - ग्यान।
रघुवंस कुमुद - सुखप्रद निसेस सेवत पद - पंकज अज - महेस।
निज भक्त - हृदय - पाथोज-भृंग, लावन्य वपुष अगनित अनंग॥
अति प्रबल मोह - तम - मारतंड अग्यान - गहन-पावक प्रचण्ड।
अभिमान सिंधु कुम्भज उदार सुररंजन भंजन भूमिभार॥
रागादि - सर्पगन - पन्नगारि कंदर्प - नाग - मृगपति मुरारि।
भव - जलधि - पोत चरनारबिंद जानकी - रमन आनंद - कंद॥
हनुमंत - प्रेमवापी - मराल निष्काम कामधुक गोदयाल।
त्रैलोक - तिलक गुनगहन राम कह तुलसिदास विश्राम - धाम॥

(९)

जाके गति है हनुमान की।
ताकी पैज पूजि आई यह रेखा कुलिस पषान की।
अघटित-घटन-सुघट-विघटन ऐसी विरुदावली नहिं आनकी।
सुमिरत संकट - सोच - विमोचन मूरती मोद - निधान की॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तापर सानुकूल गिरजाहर लखन राम अरू जानकी।
तुलसी कपि की कृपा विलोकनि खानि सकल कल्यान की॥

(१०)

तू दयालु दीनहौं तू दानि हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी तू पाप-पुँज-हारी॥
नाथ तू अनाथ को अनाथ कौन मोसो।
मो समान आरत नहिं आरति हर तोसो॥
ब्रह्म तू हौं जीव तू है ठाकुर हौं चेरो।
तात मात गुरु सखा तू सब बिधि हितु मेरो॥
तोहिं मोहिं नाते अनेक मानियै जो भावै।
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु चरन सरण पावै॥

(११)

जय रघुकुल मंडन राम लला जय दशरथ नंदन रामलला।
जय मातु सुकृत फल राम लला जय त्रिभुवन भूषन रामलला॥
जय परिजन रंजन रामलला जय भव भय भंजन रामलला।
जय सहज सोहावनो रामलला जय भक्त कलतरु रामलला॥
जय शिव मन मानस रामलला जय हनुमान प्रिय रामलला।
जय जन सुखदायक रामलला जय कोटि काम छवि रामलला॥
जय जानकी जीवन रामलला जय जय तुलसी के रामलला॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१२)

मैं भरोसे अपने राम के और नहीं कोइ काम के।
जो माँगू सो देत पदारथ अन्त देत निजधाम के॥
दोऊ अक्षर सब कुल तारे वारि जाउँ उस नाम के।
तुलसीदास आस रघुवर की और देव सब दाम के॥

(१३)

रघुवर तुमको मेरी लाज।
सदा सदा मैं शरण तिहारी तुम हो गरीब निवाज।
पतित उधारण विरद तुम्हारो श्रवनन सुनि आवाज।
हौं तो पतित पुरातन कहिये पार उतारो जहाज॥
अघ खंडन दुःख भंजन जनके यही तिहारो काज।
तुलसिदास पर किरपा कीजै भगति दान देहु आज॥

[१४]

जाउँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे।
काको नाम पतित-पावन जग केहि अति दीन पियारे॥
कौने देव बराइ बिरद-हित हठि हठि अधम उधारे।
खग-मृग व्याध पषान बिटप जड़ जवन कवन सुर तारे॥
देव दनुज मुनि नाग मनुज सब माया-विवस विचारे।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपौ हारे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१५)

अस कछु समुझि परत रघुराया।
बिनु तव कृपा दयालु दास-हित मोह न छूटै माया॥
बाक्य-ग्यान अत्यंत निपुन भव पार न पावै कोई।
निसि गृहमध्य दीप की बातन्ह तम निवृत्त नहिं होई॥
जैसे कोइ इक दीन दुखित अति असन[1] हीन दुख पावै।
चिंत्र कलपतरु कामधेनु गृह लिखे न बिपति नसावै॥
षटरस बहु प्रकार भोजन कोउ दिन अरु रैन बखानै।
बिनु बोले संतोष जनित सुख खाइ सोइ पै जानै॥
जब लगि नहिं निजहृदि प्रकास अरु विषय-आस मनमाहीं।
तुलसिदास तब लगि जग-जोनि भ्रमत सपनेहुँ सुख नाहीं॥

(१६)

राम जपु, राम जपु, राम जपु बावरे।
घोर भव-नीर-निधि नाम निज नावरे॥
एक ही साधन सब रिद्धि-सिद्धि साधि रे।
प्रबे कलिजोग जोग-संजम समाधि रे॥
भलो जो है पोच जो है दाहिनो जो बाम रे।
राम-नाम ही सों अंत सब ही को काम रे॥
जग नभ-बाटिका रही है फलि फूलि रे।
धुवाँ कैसे धौरहर देखि तू न भूलि रे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राम - नाम छाड़ि जो भरासो कर और रे।
तुलसी परोसो त्यागि माँगै कूर कौर रे॥

(१७)

मेरो मन हरिजू हठ न तजै।

निसिदिन नाथ देउँ सिख बहु बिधि करत सुभाउ निजै॥
ज्यों जुबती अनुभवति प्रसव अति दारून दुख उपजै।
है अनुकूल बिसारि सूल सठ पुनि खल पतिहिं भजै॥
लोलुप भ्रम गृह ससु ज्यों जहँ तहँ सिर पद त्राण बजै।
तदपि अधम बिचरत तेहि मारग कबहुं न मूढ़ लजै।
हौं हार्‌यो करि जतन बिबिध बिधि अति सै प्रबल अजै।
तुलसिदास बस होइ तबहिं जब प्रेरक प्रभु बरजै॥

(१८

कलि नाम काम तरु राम को।
दलनिहार दारिद दुकाल दुख दोष घोर घन घामको॥
नाम लेत दाहिनो होत मन बाम बिधाता बाम को।
कहत मुनीस महेस महातम उलटे सूधे नाम को॥
भलो लोक-परलोक तासु जाके बल ललित-ललाम को।
तुलसी जग जानियत नामते सोच न कूच मुकामको॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१९)

मन माधव को नेकु निहारहि।
सुनु सठ सदा रंक के धन ज्यों छिन-छिन प्रभुहि सँभारहि॥
सोभा सील-ग्यान-गुण-मन्दिर सुन्दर परम उदारहि।
रंजन-संत अखिल अघ-गंजन भंजन विषय-विकारहि॥
जोबिनु जोग जग्य - व्रत - संयम गयो चहै भव पारहि।
तौ जनि तुलसिदास निसि-बासर हरि पद-कमल-बिसारहि॥

(२०)

नाहिंन आवत आन भरोसो।
यह कलिकाल सकल साधन तरु है श्रम फलनि फरोसो॥
तप तीरथ उपवास दान मख जेहि जो रूचै करोसो।
पायेहि पै जानिबो करम-फल भरि भरि वेद परोसो॥
आगम-बिधि जप जाग करत नर सरत न काज खरोसो।
सुख सपनेहु न जोग सिधि साधन रोग बियोग धरोसो॥
काम क्रोध मद लोभ मोह मिलि ग्यान बिराग हरोसो।
बिगरत मन सन्यास लेत जल नावत आम धरोसो॥
बहुमतमुनि बहुपंथ पुरानन जहाँ तहाँ झगरो सो।
गुरू कह्यो राम भजन नीको मोहि लगत राजडगरोसो॥
तुलसी बिनु परतीति-प्रीति फिरि-फिरि पचिमरै मरो सो।
राम नाम बोहित भवसागर चाहै तरन तरोसो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(२१)

भरोसो जाहि दुसरो सो करो ।

मोको तो राम को नाम कल्पतरू कलि कल्याण फरो ॥
करम उपासन ग्यान बेदमत सो सब भाँति खरो ।
मोहि तो सावन के अंधहि ज्यों सूझत रंग हरो ॥
चाटत रहो स्वान पातरि ज्यों कबहुँन पेट भरो ।
सो हौं सुमिरत नाम-सुधारस पेखत परूसि धरो ॥
स्वारथ औ परमारथ हू को नहि कुँजरो - नरो ।
सुनियत सेतु पयोधि पषाननि करि कपि-कटक तरो ॥
प्रीति-प्रतीति जहाँ जाकी तहँ ताको काज सरो ।
मेरे तो माय-बाप दोउ आखर हौं सिसु-अरनि अरो ॥
संकर साखि जो राखि कहौं कछु तौ जरि जीह गरो ।
अपनो भलो राम-नामहि ते तुलसिहि समुझि परो ।

(२२)

मैं हरि पतित पावन सुने ।

मैं पतित तुम पतित-पावन दोउ बानक बने ॥
ब्याध गनिका गज अजामिल साखि निगमनि भने ।
और अधम अनेक तारे जात कापै गने ॥
जानि नाम अजानि लीन्हें नरक सुरपुरवने ।
दास तुलसी सरन आयो राखिये अपने ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(२३)

सुनहु राम रघुबीर गुसाईं मन अनीति-रत मेरो।
चरन-सरोज बिसारि तिहारे निसदिन फिरत अनेरो॥
मानत नाहिं निगम-अनुसासन त्रास न काहू केरो।
भूल्यो सूल करम-कोलुन्ह कर तिल ज्यों बारिनि पेरो॥
जहँ सतसंग कथा माधव की सपनेहुँ करत न फेरो।
लोभ-मोह-मद-काम-कोहरत तिन्हसों प्रेम घनेरो।
परगुन सुनत दाह पर-दूषण सुनत हरख बहु तेरो।
आप आप को नगर बसावत सहि न सकत पर खेरो॥
साधन-फल श्रुति-सार नाम तव भव सरिता कहँ बेरो।
सो पर-कर काँकिनी लागि सठ बेंचि होत हठि चेरो॥
कबहुँक हौं संगति-प्रभाव तें जाऊँ सुमारग नेरो।
तब करि क्रोध संग कुमनोरथ देत कठिन भटभेरो॥
इक हौं दीन मलीन हीन मति बिपति जाल अति घेरो।
तापर सहि न जाय करुना निधि मन को दुसह दरेरो॥
हारि पर्‌यो करि जतन बहुत बिधि तातें कहत सबेरो।
तुलसिदास यह त्रास मिटै जब हृदय करहु तुम डेरो॥

(२४)

मन पछितैहै अवसर बीते।
दुरलभ देह पाइ हरिपद भजु करम बचन अरु हीते॥
सहसबाहु दसबदन आदि नृप बचे न काल बलीते।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हम-हम करि धन-धाम संवारे अंत चले उठि रीते ॥
सुत-बनितादि जानि स्वारथरत न करू नेह सबहीते ।
अंतहु तोहिं तजेंगे पामर तू न तजै अबहीं ते ॥
अब नाथहिं अनुराग जागुजड़ त्यागु दुरासा जीते ।
बुझ न काम अगिनि तुलसी कहुँ विषय भोग बहु घीते ॥

(२५)

ममता तू न गई मेरे मन तें ।

पाके केस जनम के साथी लाज गई लोकन के ।
तन थांके कर कंपन लागे ज्योति गई नैनन तें ॥
श्रवन वचन नहिं सुनत काहु के बल गये सबइंद्रिन के ।
टूटे दसन बचन नहिं आवत शोभा गई मुखन तें ॥
कफ पित बात कंठ पर बैठे सुतहि बुलावत घर तें ।
भाई-बंधु सब परम पियारे नारि निकारत घर तें ।
जैसे ससि-मंडल बिच स्याही छुटै न कोटि जतन तें ।
तुलसिदास बलि जाउँ चरन तें लोभ पराये धनतें ॥

(२६)

कबहुंक हौं यहि रहनि रहौंगो ।
श्री रघुनाथ कृपालु कृपाते संत सुभाव गहौंगो ॥
जथालाभ सन्तोष सदा काहू सों कछु न चहौंगो ।
परहित-निरत निरंतर मन क्रम बचन नेम निबहौंगो ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परुष बचन अति दुसह श्रवन सुनि तेहि पावक न दहौंगो ।
बिगत मान समसीतल मन पर-गुन नहिं दोष कहौंगो ॥
परहरि देह-जनित चिंता दुःख-सुख सम बुद्धि सहौंगो ।
तुलसिदास प्रभु यहि पथ रहि अबिचल हरि-भगति लहौंगो ॥

(२७)

सुनु मन मूढ़ सिखावन मेरो ।
हरि-पद-बिमुख लह्यो न काहु सुख सठ यह समुझ सबेरो ॥
बिछुरे ससि-रबि मन-नैननि तें पावत दुख बहु तेरो ।
भ्रमत श्रमित निसि-दिवस गगन महँ तहँ रिपु राहु बड़ेरो ॥
जद्यपि अति पुनीत सुर सरिता तिहुं पुर सुजस घनेरो ।
तजे चरन अजहूं न मिटत नित बहिबो ताहू केरो ॥
छुटै न बिपति भजे बिनु रघुपति श्रुति संदेहु निबेरो ।
तुलसिदास सब आस छाँड़ि करि होहु राम को चेरो ॥

(२८)

बिहरत अवध बीथिन राम ।
संग अनुज अनेक सिसु नव नील नीरद-श्याम ॥
तरुण अरुण सरोज चन्द-बनि कनक सम पद पान ।
पीत पट कटि तून वर कर ललित लघु धनु-बान ॥
लोचननि को लहत फल छबि निरखि पुर नर नारि ।
बसत तुलसीदास उर अवधेश के सुत चारि ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(२६)

केशव कहि न जाइ का कहिये ।
देखत तव रचना बिचित्र हरि समुझि मनहिं मन रहिये ।
सून्य भीति पर चित्र रंग नहिं तनु बिनु लिखा चितेरे ।
धोये मिटइ न मरइ भीति दुख पाइअ एहि तनु हेरे ॥
रविकर-नीर बसै अति दारून मकर रूप तेहि माहीं ।
बदन-हीन सो ग्रसै चराचर पान करन जे जाहीं ॥
कोउ कह सत्य झूठ कह कोऊ जुगल प्रबल कोउ मानै ।
तुलसिदास परिहरै तीन भ्रम सो आपुन पहिचाने ॥

(३०)

अबलौं नसानी अब न नसैहौं ।
राम-कृपा भव-निसा सिरानी जागे फिरि न डसैहौं ॥
पायेउ नाम चारू चिंतामनि उर कर तें न खसैहौं ।
स्यामरूप सुचि रूचिर कसौटी चित कंचनहिं कसैहौं ॥
परवस जानि हँस्यो इन इंद्रिन निज बस ह्वै न हँसैहौं ।
मन-मधुकर प्रनकरि तुलसी रघुपति-पद-कमल बसैहौं ॥

(३१)

एसेहि जनम-समूह सिराने ।
प्रान नाथ रघुनाथ से प्रभु तजि सेवत चरन बिराने ॥
जे जड़ जीव कुटिल कायर खल केवल कलि मल साने ।
सूखत बदन प्रसंसत तिन्ह कहँ हरितें अधिक करि माने ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुख हित कोटि उपाय निरंतर करत न पायँ पिराने।
सदा मलीन पंथ के जल ज्यों कबहुँ न हृदय थिराने॥
यह दीनता दूर करिवे को अमित जतन उर आने।
तुलसी चित-चिंता न मिटै बिनु चिंतामणि पहिचाने॥

(३२)

जाके प्रिय न राम बैदेही।
तजिये ताहि कोटि बैरी सम यद्यपि परम सनेही॥
तज्यो पिता प्रहलाद विभीषण बंधु भरत महतारी।
बलिगुरू तज्यो कंत ब्रज बनितन्हि भये मुद मंगलकारी॥
नाते नेह राम के मनियत सुहृद सुसेव्य जहाँ लौं।
अंजन कहा आँखि जेहि फूटै बहुतक कहौं कहाँ लौं॥
तुलसी सो सब भाति परम हित पूज्य प्रानते प्यारो।
जासों होय सनेह राम पद एतो मतो हमारो॥

(३३)

जानकी नाथ सहाय करे तब कौन बिगाड़ करे नर तेरो॥
सूरज सोम मँगल बुध गुरू भृगु सबहि होय बरदायक तेरो।
राहुकेतु को गम्य नहीं तहँ सदा शनिश्चर को सुख फेरो॥
गर्भ काल में राख्यो परिक्षित अश्वथामा को शस्त्र निवेरो।
भारत में भरदुल का अंडा राख लिये गज घंट तरेरो॥
दुबल द्रोपदि दुष्ट दुशासन चीर हरण को मंत्र करेरो।
कीन्हि कृपा हरि आपुहि आयो बाढयो चीरअनन्त घनेरो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाकि सहाय करे करुणा निधि ताको जग में नाम बड़ेरो ।
रघुनायक सन्तन सुखदायक जन तुलसी चरनन को चेरो ॥

(३४)

कबहुँक अंब अवसर पाइ ।
मेरिओ सुधि द्याइबो कछु करुन कथा चलाइ ॥
दीन, सब अंग हीन, छीन, मलीन, अघी अघाइ ।
नाम लै भरै उदर एक प्रभु दासी दास कहाइ ॥
बूझिहैं 'सो है कौन' कहिबो नाम दसा जनाइ ।
सुनत राम कृपालु के मेरी बिगरिओ बनि जाइ ॥
जानकी जगजननि जनकी किये बचन सहाइ ।
तरै तुलसीदास भव तव नाथ गुन गन गाइ ॥

(३५)

शंकर महादेव देव सेवक सुर जाँके ॥
भस्मी अंग शीश गंग बाहन बैल अति प्रचंड ।
रहत नित गिरजा संग रंग भंग छाँके ॥
लपट झपट जात व्याल ओढ़े तन मृग छाल ।
रुण्डमाल चन्द्रभाल दृग विशाल, जाँके ॥
पावत नहिं पार शेष ध्यावत सुर नर मुनेस ।
गावत गिरिजा गणेश ब्रह्मादिक थाँके ॥
बरणत यश तुलसिदास गिरजापति विश्वनाथ ।
दीनबन्धु दीनानाथ भक्त टेक राखे ॥ शंकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(३६)

ऐसो को उदार जगमाहीं ।
बिनु सेवा सो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं ।।
जो गति जोग बिराग जतन करि नहिं पावत मुनि ग्यानी ।
सो गति देत गीध सबरी कहँ प्रभु न बहुत जिय जानी ।।
जो संपति दससीस अरपि करि रावन शिव पहँ लीन्हीं ।
सो संपदा विभीषण कहुँ अति सकुच सहित हरि दीन्हीं ।।
तुलसीदास सब भाँति सकल सुख जो चाहसिमन मेरो ।
तौ भजु राम काम सब पूरन करैं कृपा निधि तेरो ।।

सन्त सूरदास

(३७)

जागिये ब्रजराज कुँवर कमल कुसुम फूले ।
कुमुद वृन्द सकुचत भये भृङ्ग लता भूले ।।
नभ चर खग शोर सुनहु बोलत बनराई ।
रँभति गौ खरिकन में बछराहित धाई ।।
विधु मलीन रविप्रकाश गावत नर नारी ।
'सूर श्याम' प्रात उठो अँबुज कर धारी ।।

(३८)

सबसों ऊँची प्रेम सगाई ।
दुरयोधन के मेवा त्यागे साग विदुर घर खाई ।।
जुठे फल शबरी के खाये बहुविधि स्वाद बताई ।
प्रेम के बस नृप सेवा कीन्हीं आप बने हरि नाई ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजसु जग्य युधिष्ठिर कीन्हों तामें जूंठ उठाई।
प्रेम के बस पारथरथ हाँक्यों भूलि गये ठकुराई॥
ऐसी प्रीत बढ़ी वृन्दावन गोपिन नाच नचाई।
सूर कूर एहि लायक नाहीं कहँ लगि करौं बड़ाई॥

(३९)

शोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरून चलत, रेणु तनु मंडित, मुख दधि लेप किए।
चारू कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक किए।
लट लटकनि मनोमत्त मधुपगन मादक मदहि पिए॥
कठुला कंठ बज्र केहरि-नख राजत रूचिर हिये।
धन्य सूर एको पल या सुख का शत कल्प जिये॥

(४०)

झुनक श्याम की पैंजनियाँ॥
जसुमति सुत को चलन सिखावत अँगुरी गहि गहि दोउ जनियाँ।
स्याम बरन पर पीत झंगुलिया सीस कुलहिया चौतनियाँ॥
जाको ब्रह्मा पार न पावत ताहि खिलावति ग्वालनियाँ।
सूरदास जसुमति बलिहारी सुतहिं खिलावति लै कनियाँ॥

(४१)

चरण कमल बन्दौं हरि राई।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे अन्धे को सब कछु दरसाई॥
बहिरो सुने मूक पुनि बोले रंक चले सिर छत्र धराई।
सूरदास स्वामी करूणामय बार बार बन्दौं तेहि पाई॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(४२)

बड़ी है राम नाम की ओट।
सरन गये को काढ़ि देत नहिं करत कृपा की कोट॥
बैठत सबै सभा हरि जू की कौन बड़ो को छोट।
सूरदास पारस के परसे मिटत लोह की खोट॥

(४३)

जो सुख होत गोपालहिं गाये।
सो नहिं होत किये जप तप के कोटिक तीर्थ नहाये॥
दिये लेत नहीं चारि पदारथ चरन कमल चित लाये।
तीनि लोक तृन सम करि लेखत नँद नंदन उर आये॥
वंशीवट वृन्दावन जमुना तजि बैकुण्ठ को जाये।
सूरदास हरि को सुमिरन करि बहुरि न भव जल आये॥

(४४)

तुम मेरी राखो लाज हरि।
तुम जानो सब अन्तर्यामी करनी कछु न करी॥
अवगुण मोसे बिछुरत नाहीं पलछिन घरि घरि।
सब प्रपंच की पोट बाँधकर अपने सीस धरी॥
दारा सुत धन मोह लिया है सुध बुध सब बिसरी।
सूर पतित को बेगि उबारो अब यह नाव भरी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(४५)

अँखियां हरि दर्शन की प्यासी ।
देख्यो चाहत कमल नैनको निसदिन रहत उदासी ॥
केसर तिलक मोतिन की माला वृन्दाबन के वासी ।
नेह लगाय त्यागि गये तृन सम डारि गये गल-फाँसी ॥
काहू के मन की को जानत लोगन के मन हाँसी ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु लैहौं करवट कासी ॥

(४६)

हे गोविन्द राखो शरण अब तो जीवन हारे ॥
नीर पिवन हेतु गयो सिन्धु के किनारे ।
सिन्धु बीच बसत ग्राह चरण धर पछारे ॥
चार पहर युद्ध भयो ले गयो मझधारे ।
नाक कान डुबन लागे कृष्ण को पुकारे ।
द्वारिका मैं शब्द भयो शोर भयो भारे ।
शंख चक्र गदा पद्म गरुड़ तजि सिधारे ॥
सूर कहे श्याम सुनो शरण हौं तिहारे ।
अब की वेर पार करो नन्द के दुलारे ॥

(४७)

प्रभु मेरे अवगुण चित न धरो ।
समदर्शी है नाम तिहारो चाहे तो पार करो ॥
एक लोहा पूजा में राखे एक घर बधिक परो ।
पारस गुण अवगुण नहिं चितवत कंचन करत खरो ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक नदिया एक नाल कहावे मैलो नीर भरो।
दोनों मिल जब एक वर्ण भये सुरसरि नाम परो॥
एक माया एक ब्रह्म कहावै सूर श्याम झगरो।
अबकि बेर मोहे पार उतारो नहिं प्रण जात टरो॥

४८)

दीनन दुखहरण देव संतन हितकारी॥
अजामील गीध व्याध इनमें कहो कौन साध।
पक्षी हूं पद पढ़ात गणिकासि तारी॥
ध्रुव के सिर क्षत्रदेत प्रहलाद को उबार लेत।
भक्त हेत बाँधि सेत लंक पुरी जारी॥ दीनन॥
तन्दुल देत रीझ जात साग पात सो अघात।
गिनत नाहिं जूटे बेर खाटे मीठे खारी॥
गजको जब ग्राह ग्रस्यो दुशासन चीर खस्यो।
सभा बीच कृष्ण कृष्ण द्रौपदी पुकारी।
इतने में हरि आई गये वसनन आरूढ़ भये।
सूरदास द्वारे ठारो आंधरो भिखारी॥

(४९)

भरोसो दृढ़ इन चरनन केरो।
श्री वल्लभ नख चन्द्र छटा बिन सब जग माँझ अँधेरो॥
साधन और नहीं या कलि में जासों होत निबेरो।
सूर कहा कहों द्विविध आँधरो बिना मोल को चेरो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(५०)

छाड़ि मन हरि विमुखन को संग।
जिनके संग कुबुधि उपजत है पड़त भजन में भंग॥
कहा होत पय पान कराये विष नहिं तजत भुजंग।
कागहि कहाँ कपूर चुगाये स्वान नहाये गंग॥
खर को कहा अरगजा लेपन मरकट भूषण अंग।
गज को कहा नहाये सरिता बहुरि धरै खहि छंग॥
पाहन पतित बाँस नहिं बेंधत रीतो करत निषंग।
सूरदास खल कारी कामरि चढत न दूजो रंग॥

(५१)

सुवा चलि ता बन को रस पीजै।
जा बन राम नाम अमृत रस श्रवन पात्र भरि लीजै॥
को तेरो पुत्र पिता तुँ काको घरनी घर का तेरो।
काग शृगाल स्वान को भोजन तूँ कहै मेरो मेरो॥
बन बारानसि मुक्ति क्षेत्र है चलि तोकौं दिखराऊँ।
सूरदास साधुन की संगति बड़े भाग्य जो पाऊँ॥

(५२)

है हरि नाम को आधार।
और एहि कलिकाल नाहीं रह्यो विधि व्यवहार।
नारदादि शुकादि मुनि मिलि कियो बहुत विचार।
सकल श्रुति दधि मथत पायो इतोही घृत सार॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दसोदिसि ते कर्म रोक्यो मीन को ज्यौं जोर।
सूर हरि को भजन करले उतर भव निधि पार ॥

(५३)

सोइ रसना जो हरि गुण गावै।
नैननि की छवि यहै चतुरता जो मुकुन्द मकरन्दहि ध्यावै ॥
निर्मल चित तो सोई साँचो कृष्ण बिना जेहि और न भावे।
श्रवणन की जो यहै अधिकाई सुनि हरि कथा सुधारस पावै ॥
कर तेई जो श्यामहि सेवे चरननि चलि वृन्दावन जावे।
सूरदास जैहो बलि बाँको जो हरि जू सों प्रीति बढ़ावे।

(५४)

सोई भलो जो रामहि गावे।
स्वपचहु श्रेष्ठ होत पद सेवत बिनु गोपाल द्विज जन्म न भावे ॥
बाद विवाद यज्ञ व्रत साधन जहाँ जाहि जनम डहकावे।
होय अटल जगदीश भजन में अनायास चारिहुँ फल पावे ॥
कहूँ ठौर नहिं चरन कमल बिनु भृंगी ज्यों दसहूं दिसि धावे।
सूरदास हरि सन्त समागम आनन्द अभय निसान बजावे ॥

(५५)

कहा कमी जाके राम धनी।
मनसानाथ मनोरथ पूरन सुख निधान जाके मौज धणी ॥
अर्थ धर्म अरू काम मोक्ष फल चार पदारथ देत क्षणी।
इन्द्र समान है सेवक जाके नर बपुरे की कहा गणी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहौ कृपन की माया कितनी करत फिरत अपनी अपणी।
खाय न सकै खरच नहिं जाने ज्यों भुजंग सिर रहत मणी॥
आनन्द मगन राम गुण गावे, दुःख संताप की काट तणी।
सूर कहत जे भजत राम को तिन सो हरि सों सदा बणी॥

(५६)

मुनेरी मैंने निर्बल के बलराम।
पिछली साख भरू संतन की अड़ सँवारे काम॥
जबलगि गजबल अपनो बरत्यों नेक सरयोनहिं काम।
निबल ह्वै बलराम पुकारे आये आधे नाम॥
द्रुपदसुता निर्बलहोय ठाढ़ी तजिआये निज धाम।
दुःशासनकी भुजाथकित भइ वसन रूप भये श्याम॥
जपबल तपबल और बाहुबल चौथो बल है दाम।
सूर किशोर कृपाते सब बल हारे को हरि नाम॥

(५७)

मेरो मन अनत कहाँ सुख पावे।
जैसे उड़ि जहाज को पंक्षी फिर जहाज पै आवे॥
कमल नयन को छाड़ि महातम और देव को ध्यावे।
परम गंग को छोड़ि पियासो दुर्मति कूप खनावे॥
जो मधु कर अम्बुजरस चाख्यो क्यों करील फल खावे।
सूरदास प्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(५८)

मो सम कौन कुटिल खल कामी ।
जिन तनु दियो ताहि विसरायो ऐसो नमक हरामी ॥
भरि भरि उदर विषय को धायो जैसे सूकर ग्रामी ।
हरिजन छाड़ि हरीबिमुखन की निसिदन करत गुलामी ॥
पापी कौन बड़ो जग मोते सब पतितन में नामी ।
सूर पतित को ठौर कहाँ प्रभु नु तुम बिन श्रीपति स्वामी ॥

(५६)

करी गोपाल की सब होय ।
जो अपनी पुरुषारथ मानत अति झूठो है सोय ॥
साधन मन्त्र यन्त्र उद्यम बल यह सब डारहु धोय ।
जो कछु लिख राख्यो नँदनन्दन मेटि सकै नहिं कोय ।
दुखसुख लाभ अलाभ समुझि तुम कतहिं मरत हौं रोय ।
सूरदास स्वामी करूणामय स्याम चरण चित पोय ॥

(६०)

दयानिधि तेरी गति लखि न परै ।
सोइ कुलीन बड़ो सुन्दर जा पर तूँ कृपा करै ॥
राजा कौन बड़ो रावण ते गर्व ही गर्व मरै ।
रंक सु कौन सुदामा हूंते आप समान करै ॥
रूपति कौन अधिक सीता ते जन्म वियोग भरै ।
अधिक कुरूप कौन कुब्जा ते हरिपति प्रेम करै ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योगी कौन बड़ो शंकर ते ताको काम छरै।
कौन विरक्त अधिक नारद ते निशदिन भ्रमत फिरै॥
धर्मी कौन युधिष्ठिर ते बड़ सो हिम माहिं गरै।
अधम अधिक को तेहि विप्रन ते यम तहँ जात डरै॥
निमक हराम बड़ो को मो ते छिनहु न भजन करै।
सूर कूर हरि भजन बिना शठ क्यों भव सिंधु तरै॥

संत कबीर

(६१)

भजन बिना बावरे तूने हीरा जनम गँवायो॥
कभी न आया संत शरण में कभी न हरि गुण गायो।
पच पच मरै बैल की नांई सोय रह्यो उठि खायो॥
यह संसार हाट बनिये की सब जग सौदे आयो।
चतुर माल चौगुनो कीनो मूरख मूल गवायो॥
यह संसार फूल सेमल का सूवा देख लुभायो।
मारी चोंच निकल गइ रूई सिर धुनि धुनि पछितायो॥
यह संसार माया का लोभी ममता महल चिणायो।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो हाथ कछू नहिं आयो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(६२)

प्रभु साँचे मन के मीता ।।

कब सबरी कासी कर आई कब पढ़ आई गीता ।
जूठे बेर विशम्भर चाखे कीन्हीं प्रेम पुनीता ।।
कब करमाबाई भोर सुमिरिया जप तप संयम कीता ।
नन्दलाल गोपाल प्रभु को खिचड़ी भोग धरीता ।।
यज्ञ दान गणिका कब, कीनों कब तीरथ जल पीता ।
बाँह पकड़ हरि पार उतारी मनहीं के परतीता ।।
साँच समान और जग नाहीं जुग जुग संत भणीता ।
कहत कबीर साँच घट जाँके सकल जगत तिन जीता ।।

---

(६३)

अब मैं अपना राम रिझाऊँ भव भंजन गुण गाऊँ ।।
गंगा जाऊँ न जमुना जाऊँ ना कोई तीरथ जाऊँ ।
अड़सठ तीरथ घट के भीतर वाहि में मल मल न्हाऊँ ।।
डाली तोडु न पाती तोड़ूँ ना कोइ जीव सताऊँ ।
पात पात में प्रभू बसत हैं वाहि को सीस नवाऊँ ।।
औषधि खाऊँ न बूटी खाऊँ ना कोइ बैद बुलाऊँ ।
पूरन ब्रह्म बैद अविनाशी वाहि को नवज दिखाऊँ ।।
ज्ञान कुठारा कसकर बाँधू सब्द कमान चढ़ाऊँ ।
पाँचो चोर बसे घट भीतर वाहि को मार भगाऊँ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जोगी होय न जटा बढ़ाऊँ ना अंग विभूति रमाऊँ ।
जो रंग रंगे आप बिधाता सोई रंग चढ़ाऊँ ॥
चाँद सूरज दोउ सम करि मानूँ प्रेम की ज्योति जगाऊँ ।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो आवागमन मिटाऊँ ।

(६४)

साधो सो सतगुरु मोहि भावे ।
राम नाम का भर भर प्याला आप पिये मोहि पावे ।
मेला करे न महन्त कहावे पूजा भेंट न चाहवे ।
परदा दूर करे आँखिन का ब्रह्म दरस दिखलावे ॥
जाही विधि साहिब घट दरसे सो मोहि शब्द सुनावे ।
माया के सुख दुख करि माने आतम सुख उपजावे ॥
निसदिन राम भजन में राता शब्द में सुरत समावे ।
कह कबीर त्वको भय नाहीं निरभय पद दरसावे ॥

——

(६५)

खबर नहिं या जग में पलकी ।
नाम सुमिरले सुकृती करले को जाने कल की ॥
झूठ कपट कर माया जोड़ी बात करै छल की ।
पाप की पोट धरैसिर ऊपर किस विध है हलकी ॥
यह मन तो है हस्ती मस्ती काया माटी की ।
साँस-साँस में नाम सुमिरिले अवधि घटै तनकी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काया अन्दर हंसा बोले खुसियाँ कर दिलकी।
जब यह हंसा निकरि जाहिंगे माटी जंगल की॥
काम क्रोध मद लोभ निवारो बात ये अस्सल की।
ज्ञान विराग दया मन राखो कह कबीर दिल की॥

(६६)

मन मस्त हुआ फिर क्या बोले॥
हल्की थी तब चढ़ी तराजू पूरी हुई फिर क्यों डोले।
सुरत कलाली भई मतवाली मदवा पी गई बिन तोले॥
हंसा पाया मान-सरोवर ताल तलैया क्यों डोले।
हीरा पाया गाँठ लगाई बार बार वाको क्यों खोले॥
अपना साहिब है घट भीतर बाहर नैना क्यों खोले।
कहत कबीर सुनो भाई साधो साहब मिल गया तिल ओले।

(६७)

पानी में मीन पियासी मोहे सुन सुन आवे हाँसी॥
आतम ज्ञान बिना नर भटकत कोइ मथुरा कोइ काशी।
कस्तूरी मृग-नाभी माँही वन वन फिरत उदासी॥
जल बिच कमल कमल बिच कलियाँ तापर भँवर लुभासी।
विषियन बस तिरलोक भयो सब जती सती संन्यासी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाको ध्यान धरत विधि हरिहर मुनिजन सहस अठासी।
सो तेरे घट मांहि विराजे परमपुरुष अविनासी॥
भीतर को प्रभु जान्यो नाहीं बाहर खोजन जासी।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो जो खोजे सो पासी॥

(६८)

सुमिरन करले मेरे मना तेरी बीति आयु हरिनाम बिना।
पंक्षि पंख बिन हस्ती दंत बिन नारी पुरुष बिना॥
वेश्या पुत्र पिता बिन हीना ज्यों प्राणी हरिनाम बिना॥
देह नैन बिन रैन चन्द बिन धरती मेह बिना।
जैसे तरुवर फल बिन हीना ज्यों प्राणी हरिनाम बिना॥
कूप नीर बिन धेनु क्षीर बिन मन्दिर दीप बिना।
जैसे पण्डित वेद बिहीना ज्यों प्राणी हरिनाम बिना॥
काम क्रोध मद लोभ निवारो भजन करो सब संत जना।
कह नानक एक हरि गुण गाले या जग में नहिं कोइ अपना॥

(६६)

प्रभुजी तू मेरे प्राण अधारै।
नमस्कार डंड उति वन्दना अनिक वार जाऊँ वारै॥
ऊठत बैठत सोवत जागत इहु मनु तुझहि चितारै।
सुख दुःख इसु मन की विरथा तुझे ही आगे सारै॥
तू मेरी-ओर बलु-बुध धनु तुमही तुमहि मेरे परिवारै।
जो तुम करहु सोई भलो हमरे देख 'नानक' सुख चरनारै॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(७०)

साधो गोविन्द के गुण गावउ ।
मानस जनम अमोलक पाइओ विरथा काहि गवावउ ॥
पतित पुनीत दीनबन्धु हरि सरनि ताहि तुम आवउ ।
गज को त्रासु मिटिओ जिह सिमरत तुम काहे बिसरावउ ॥
तजि अभिमान मोह माया पुनि भजन राम चित लावउ ।
"नानक" कहत मुकति पंथ इहु गुर मुखि होइ तुम पावउ ॥

(७१)

हरि को नाम सदा सुखदाई ।
जा कहुं सिमरि अजामिल उधरियो गनकाहू गत पाई ॥
पंचाली कहुँ राज सभा में राम नाम सुधि आई ।
ताको दुख हरिओ करुणामय अपनी पैज बढ़ाई ॥
जिह नर जस किरपानिधि गाइयो ता कउ भयो सहाई ।
कहु "नानक" मैं उन्हों भरोसे आन गही सरनाई ।

(७२)

नाम जपन क्यों छोड़ दिया ॥
क्रोध न छोड़ा झूठ न छोड़ा सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ॥
झूठे जग में दिल ललचाकर असल वतन क्यों छोड़ दिया ।
कौड़ी को तूँ खूब संभाला लाल रतन क्यों छोड़ दिया ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिहि सुमिरन ते अति सुख पावे सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया।
नानक इक भगवान भरोसे तन मन क्यों नहिं छोड़ दिया॥

(७३)

रे मन राम सों कर प्रीति।
स्रवन गोविन्द गुण सुनो गावो रसना गीति।
करि साधु संगति सुमर माधो होहि पतित पुनीति।
काल-व्याल जिउ परियो डोले मुख पसारे मीति॥
आजु कालि पुनि तोहि ग्रसिहै समझि राखउ चीति।
कहै नानक राम भजलै जात अवसर बीति॥

(७४)

जीवन को मैंने सौंप दिया सब भार तुम्हारे हाथों में।
उद्धार पतन अब मेरा है सरकार तुम्हारे हाथों में॥
हम तुमको कभी नहीं भजते फिर भी तुम हमें नहीं तजते।
अपकार हमारे हाथों में उपकार तुम्हारे हाथों में॥
हममें तुममें है भेद यही हम नर हैं तुम नारायण हो।
हम हैं संसार के हाथों में संसार, तुम्हारे हाथों में॥
कल्पना बनाया करती है इक सेतु विरह के सागर पर।
जिससे हम पहुँचा करते हैं उस पार तुम्हारे हाथों में॥
हग 'विन्दु' कह रहे हैं भगवन दृढ़ नाव विरह के सागर में।
मझधार हमारे हाथों में पतवार तुम्हारे हाथों में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(७५)

हिंडोरे झूलत दोउ सरकार ॥
श्री अवधेश लली संग राजत श्री अवधेश कुमार।
दामिनि गरजि गरजि घन बरसत रिमझिम पड़त फुहार ॥
झुकि झुकि लाल लली मुख निरखत मानत मोद अपार।
मानहुँ करुण 'विन्दु' पंकज पर भ्रमर करत गुँजार ॥

(७६)

यदि नाथ का नाम दयानिधि है तो दया भी करेंगे कभी न कभी
दुखहारि हरि दुखिया जनके दुख क्लेश हरेंगे कभी न कभी
जिस अङ्ग की शोभा सुहावनि है जिस श्यामल रंग में मोहनी है
उस रूप सुधा से सनेहियों के दृग प्याले भरेंगे कभी न कभी
जहाँ गीध निषाद का आदर है जहाँ व्याध अजामिल का घर है
वहीं वेश बनाके उसी घर में हम जा ठहरेंगे कभी न कभी
करुणानिधि नाम सुनाया जिन्हें कर्णामृत पान कराया जिन्हें
सरकार अदालत में ये गवाह भी आ गुजरेंगे कभी न कभी
हम द्वार पै आपके आके खड़े मुद्दत से इसी जिद पर है अड़े
अब सिन्धु तरे जो बड़े से बड़े तो ये 'विन्दु' तरेंगे कभी न कभी

१

(७७)

दशा मुझ दीन की भगवन संभालोगे तो क्या होगा।
अगर चरणों की सेवा में लगालोगे तो क्या होगा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं नामी पातकी हूँ और नामी पाप हर तुम हो।
जो लज्जा दोनों नामों की निभालोगे तो क्या होगा॥
जिन्होंने तुझको करुणा कर पतित पावन बनाया है।
उन्हीं पतितों को तुम पावन बनालोगे तो क्या होगा॥
यह सब मुझसे कहते हैं तू मेरा है तू मेरा है।
मैं किसका हूँ ये झगड़ा तुम चुकालोगे तो क्या होगा॥
अजामिल गीध गज गणिका जिस दया गंगा में तरते हैं।
उसी में 'विन्दु' सा पापी मिलालोगे तो क्या होगा॥

(७८)

मुझसे अधम अधीर उबारे न जायेंगे।
तो आप दिन - बन्धु पुकारे न जायेंगे॥

जो बिक चुके हैं नाथ खरीदा है आपने।
अब वह गुलाम गैर के द्वारे न जायेंगे॥

पृथ्वी के भार आपने सौ बार उतारे।
क्या मेरे पाप भार उतारे न जायेंगे॥

खामोश हूंगा मैं भी अगर आप यह कह दें।
अब मुझसे पातकी कभी तारें न जायेंगे॥

तब तक न चरण आपके संतोष पायेंगे।
दृग 'विन्दु' से जबतक ये पखारे न जायेंगे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(७६)

कैद दुनियाँ। किस अजब जादू की है टोने की है।
जिससे कैदी जीव को नफरत नहीं होने की है॥
मोह के हाते में काली कोठरी अज्ञान की।
जिस अँधेरे में ही सारी जिन्दगी खोने की है॥
शाह मुल्जिम पैर में दोनों ने पहनी बेड़िया।
फर्क इतना है कि एक लोहे की एक सोने की है॥
काल पहरेदार ने कैसा किया है सख्त काम।
टोकरी कर्मों की सर पर रात दिन ढोने की है।
मौत की झौंकों ने फेंका 'विन्दु' को सागर से दूर।
बस यही एक बात पछताने की है रोने की है॥

(८०)

प्रबल प्रेम के पाले पड़कर प्रभु को नियम बदलते देखा।
अपना मान भले टल जाये जन का मान न टलते देखा॥
जिनकी केवल कृपा दृष्टि से सकल सृष्टि को पलते देखा।
उनको गोकुल के गोरस पर सौ सौ बार मचलते देखा॥
जिनके चरण कमल कमलाके करतल से न निकलते देखा।
उनको ब्रज करील कुंजन में कंटक पथ पर चलते देखा॥
जिनका ध्यान विरंचि शम्भु सनकादिक से न संभलते देखा।
उनको ग्वाल सखा मंडल में लेकर गेंद उछलते देखा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिनकी बंक भृकुटि के भय से सागर सप्त उबलते देखा।
उनको भी यसुदा के भय से अश्रु 'विन्दु' दृग ढलते देखा॥

(८१)

हरि बोल मेरी रसना घड़ी घड़ी॥
व्यर्थ बिताती है क्यों जीवन मुख मन्दिर में पड़ी पड़ी।
नित्य निकाल गोविन्द नाम की स्वाँस-स्वाँस से लड़ी लड़ी॥
जाग उठे तेरी ध्वनि सुनकर इस काया की कड़ी कड़ी॥
बरसादे प्रभु नाम सुधारस 'विन्दु' विन्दु से झड़ी-झड़ी॥

(८२)

न जाने कौन से गुण पर दयानिधि रीझ जाते हैं।
यही हरि भक्त कहते हैं यही सद् ग्रन्थ गाते हैं॥
नहीं स्वीकार करते हैं नियन्त्रण नृप सुयोधन का।
विदुर के घर पहुँच कर भोग छिलकों का लगाते हैं॥
न आये मधुपुरी से गोपियों की दुःख कथा सुनकर।
द्रौपदि की लाज रखने को द्वारिका छोड़ आते हैं॥
न रोये बन गमन में श्री पिता की वेदनाओं पर॥
उठाकर गिद्ध को निज गोद में आँसू बहाते हैं॥
कठिनता से चरण धोकर मिले कछु 'विन्दु' विधि हर को।
वो चरणोदक स्वयं केवट के घर जाकर लुटाते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(८३)

सदा श्याम श्यामा पुकारा करेंगे
नवल रूप निसदिन निहारा करेंगे ॥
यमुना तट लता कुञ्ज वृज विथियों में
विचरकर यह जीवन गुजारा करेंगे ॥
मिलेगी जो रसिकों की जूठन प्रसादी ।
वही जीविका का सहारा करेंगे ॥
बसेंगे करीलों के काँटों में हरदम
जगत कंटकों से किनारा करेंगे ॥
जो दृग "विन्दु" से धाम धोया करेंगे
तो पलको से पथ को बुहारा करेंगे ॥

(८४)

ऐसि करी गुरुदेव दया मेरा मोह का बन्धन तोड़ दिया ॥
दौड़ रहा दिन रात सदा जगके सब कार विहारण में ।
स्वप्ने सम विश्व दिखाय मुझे मेरे चंचल चित को मोड़ दिया ॥
कोइ शेष महेश गणेश रटे कोइ पूजत पीर पगम्बर को ।
सब पंथ गरंथ छुड़ा करके इक आतम में मन जोड़ दिया ॥
कोइ ढूंढत है मथुरा नगरी कोइ जाय बनारस वास करै ।
जब व्यापक रूप पिछान लिया सब भर्म का भंडा फोड़ दिया ॥
कौन करू गुरुदेव की भेंट न वस्तु दिखे तिन-लोकन में ।
ब्रह्मानन्द समान न होय कमी धन माणिक लाख करोड़ दिया ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varahasi Collection. Digitized by eGangotri

(८५)

जिसने श्रीरामका नाम लिया तिन और का नाम लिया न लिया ॥
पशु पक्षी सभी जगजीवन को जिसने अपने सम जान सदा ।
सबका परिपालन नित्य किया तिन विप्र को दान दिया न दिया ॥
जिनके घर में प्रभु की चर्चा नित होवत है दिन रात सदा ।
सतसंग कथा मृत पान किया तिन तीरथ नीर पिया न पिथा ॥
जिन काम किये परमारथ के तन से धन से मन से करसे ।
जग अन्दर कीरति छाय रही दिन चार विशेष जिया न जिया ॥
गुरू के उपदेश समागम से जिसने अपने घट भीतर में ।
ब्रह्मानन्द स्वरूप को जान लिया तिन साधन योग किया न किया ॥

(८६)

जय दुर्गे दुर्गति परिहारिणि ।
शुभु विदारिणि मातु भवानी ॥
आदि शक्ति परब्रह्म स्वरूपिणी जगजननी चहुं वेद वखानी ।
ब्रह्मा शिव हरि पूजन कीनो ध्यान धरत सुर नर मुनि ज्ञानी ॥
अष्ट भुजाकर खड्ग विराजे सिंघ सवार सकल वरदानी ।
ब्रह्मानन्द शरण मैं आयो भवभय नास करौ महारानी ॥

(८७)

बिना कृष्ण दर्शन के शान्ति नहीं है
उधो ज्ञानचर्चा सुहाती नहीं है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या तुम सुनाते हो निर्गुण कहानी
हमारी समझ बीच आती नहीं है ।।
बसी दिल के अन्दर में मोहन की मूरत
घड़ी पल कभी दूर जाती नहीं है ।
नहीं योग साधन की हमको जरूरत
बिना प्रेम की बात भाती नहीं है ।।
जपे नाम माधव का हम तो निरंतर
ब्रह्मानन्द दिल से भुलाता नहीं है ।।

(८८)

भज रे नर राम चरण निशिदिन सुखदाई ।।
नर तन यह बार बार जग में नहि मिलनहार ।
थोड़े दिन की बहार पीछे पछताई ।।
नारी सुत तात मात चार दिवस की जमात ।
कोई नहीं संग जात नरक में सहाई ।।
धन का क्या करतमान पंकजजल लव समान ।
करले कुछ करसे दान बहत नदी जाई ।।
बार बार राम नाम भजले तज सकल काम ।
ब्रह्मानन्द परम धाम अंत काल पाई ।।

(८९)

देख सखी कृष्ण चन्द्र की छवि सुहावनी ।।
सिरपे मुकुट अलक भाल श्रवण कुण्डल दृग रसाल ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गल में माल भुज बिशाल पीत पट धरावनी ॥
बाजु बंध कंगन हाथ कमर मणी तिलक माथ।
वंशी अधर मधुर-मधुर सरस राग गावनी ॥
चन्द वदन मंद-हास सखियन संग करत रास।
पग में छनन-छनन नूपरों की धुन बजावनी ॥
सजल मेघ श्याम रंग संग राधिका उसंग।
ब्रह्मानन्द श्री मुकुन्द चरण-रति लगावनी ॥

(६०)

(साधो) संत परम हितकारी

प्रभु पद प्रगट करावत प्रीति भरम मिटावत भारी।
परम कृपालु सकल जीवन पर हरि सम सब दुखहारी।
त्रिगुणातीत फिरत तन त्यागी रीत जगत से न्यारी।
ब्रह्मानन्द संत की संगत मिलत है प्रगट मुरारी ॥

(६१)

मन को तरंगें मार लो बस हो गया भजन।
आदत बुरी सम्हाल लो बस हो गया भजन ॥ मन०
आया कहाँ से कौन तूँ फिर जायेगा कहाँ।
इतना दिल में विचार लो बस हो गया भजन ॥ मन०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है दोष तेरी दृष्टि में दुनियाँ निहारती।
समता का अंजन आँजलो बस हो गया भजन ॥ मन०
दुनियाँ मुझे बुरा कहे तू वीर, कर क्षमा।
वाणी का स्वर सम्हाल लो बस हो गया भजन ॥ मन०
अनमोल 'ब्रह्मानन्द' को तूँ ढूँढ़ता फिरे।
कण कण में उसे निहारलो बस हो गया भजन ॥ मन०

भक्तीमती मीराबाई

(६२)

जागो बंशीवारे ललना जागो मोहन प्यारे।
रजनी बीती भोर भयो है घर घर खुले किवारे॥
गोपी दही मथत सुनियत है कंगना के झनकारे।
उठो लाल जी भोर भयो है सुर नर ठाढ़े द्वारे।
ग्वाल बाल सब करत कुलाहल जय जय शब्द उचारे॥
माखन रोटी हाथ में लीनी गउवन के रखवारे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर शरण आये कूँ बारे॥

(६३)

राणाजी रूठे तो म्हारो कांई करसी म्हें तो गोविन्द का
गुण गास्या हे माय॥
राणाजी रूठे सु अपनो देस रखासी हरि रूठ्या
कित जास्या हे माय।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोक लाज की कान न माना निरभै निसान बजाय्या हे माय ॥
राम नाम की जहाज चलाय्या अब सागर तरजाय्या हे माय।
मीरा शरण साँवल गिरधर की चरण कमल लपटाय्या हे माय ॥

(६४)

मन रे परसि हरि के चरण।
सुभग सीतल कँवल कोमल त्रिविध ज्वाला हरण ॥
जिण चरण प्रह्लाद परसे इन्द्र पदवी धरण।
जिण चरण ध्रुव अटल कीन्हें राख अपनी शरण ॥
जिण चरण प्रभु परसि लीने तरी गौतम घरण।
जिण चरण काली हि नाथ्यो गोप लीला करण ॥
जिण चरण धारयो गोवरधन गर्व मघवा हरण।
दासि मीराँ लाल गिरधर अगम तारण तरण ॥

(६५)

नहिं ऐसो जनम बारम्बार।
क्या जानूँ क्या पुण्य प्रगटे मानुसा अवतार ॥
बढ़त पल पल घटत छिन छिन चलत लागेन बार।
विरछ के ज्यों पात टूटे नहिं लगे पुनि डार ॥
भव सागर अति घोर कहिये अगम ऊँडी धार।
सुरत का नर बाँध बेड़ा वेगि उतरो पार ॥
साधु संता जे महन्ता चलत करत पुकार।
दासि मीराँ लाल गिरधर जीवना दिन चार ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(६६)

आली म्हाने लागै बृन्दावन नीको ।
घर घर तुलसी ठाकुर पूजा दरसन गोविन्दजी को ॥
निरमल नीर बहत यमुना में भोजन दूध दही को ।
रतन सिंहासन कृष्ण विराजै मुकुट धर्‌यो तुलसी को ॥
कुँजन कुँजन फिरत राधिका शब्द सुनै मुरली को ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर भजन बिना नर फीको ॥

(६७)

आली रे मेरे नैणा बाण पड़ी ।
चित्त चढ़ी मेरे साँवरी सूरत उर बिच आन अड़ी ।
कबकी ठाड़ी (मैं पंथ निहारू अपने भवन खड़ी ।
कैसे प्राण पिया बिनु राखूँ जीवन मूर जड़ी ।
मीरा गिरधर हाथ बिकानी लोग कहै बिगड़ी ॥

(६८)

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई ।
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई ॥
शंख चक्र गदा पद्म कंठ माल होई ।
संतन ढिग बैठि बैठि लोक लाज खोई ॥
छाड़ि दई कुल की कानि कहा करिहै कोई ।
अँसुवन जल सींचि सींचि प्रेम बेलि बोई ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अबतो वेल फैल गई आनन्द फल होई।
चुनरी उतार धरी ओढ़ लीनी लोई॥
मोती माल दूर धरी वनमाला पोई।
दधि की मटकियाँ बड़े प्रेम से बिलोई॥
अमृत घृत काढ़ लिन्हों छाछ पिये कोई।
राज छोड़या महल छोड़या आपणा न कोई।
मीराँ के गिरधर गोपाल होनी है सो होई॥

(९९)

चलो मन गंगा जमुना तीर॥
गंगा जमुना निरमल पाणी सीतल होत शरीर।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे कुण्डल झलकत हीर॥
वंशी बजावत गावत कान्हा संग लिए बलवीर।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर चरण कमल पर सीर॥

(१००)

मैं तो साँवर के संग रांची।
सजि सिंगार बाँधि पग घूँघुरू लोक लाज तजि नांची।
गई कुमति लई साधु की संगति भगत रूप भई सांची॥
गाय गाय हरि के गुण निसदिन काल-व्याल सूँ बांची।
मीरां श्री गिरधरन लाल सूँ भगति रसीली जाँची॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१०१)

पग घुंघरू बाँध मीरा नाची रे ॥
मैं तो अपने नारायण की आपहि हो गई दासी रे।
लोग कहे मीरा भई बावरी सास कहै कुल नासी रे ॥
विष का प्याला राणा भेज्या पीवत मीरा हाँसी रे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर सहज मिलै अविनासी रे ॥

(१०२)

मोहे लागि लगन गुरु चरणन की।
चरण बिना मोहि कछु नहि भावे, जग माया सब सपनन की ॥
भव सागर सब सूख गयो है, फिकर नहीं मोहे तरनन की।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आस वही गुरु सरनन की ॥

(१०३)

हरि तुम हरो जनकी भीर।
द्रौपदी की लाज राखी तुम बढ़ायो चीर ॥
भक्त कारण रूप नर हरि धर्‌यो आप शरीर।
हिरणाकश्यप मार लीनो रह्यो नाहिन धीर ॥
डूबतो गजराज राख्यो कियो बाहर नीर।
दासि मीरा लाल गिरधर चरण कमल पै सीर ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१०४)

मेरो मन रामहि राम रटै रे ॥
राम नाम जप लीजै प्राणी कोटिक पाप कटै रे ।
जनम जनम के खत जो पुराने नामहि लेत फटै रे ॥
कनक कटोरे अमृत भरियो पीवत कौन नटै रे ।
मीरा कहे प्रभु हरि अविनासी तन मन ताँहि पटै रे ॥

(१०५)

पायोजी मैंने राम रतन धन पायो ।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु करि किरपा अपनायो ॥
जनम जनम की पूंजी पाई जग में सभी खोवायो ।
खाय न खूटै चोर न लूटै दिन दिन बढ़त सवायो ॥
सत की नाव खेवैया सतगुरु भव सागर तिर जायो ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर हरख निरख जस गायो ॥

(१०६)

हमने सुना है हरि अधम उधारण ।
गज की टेर सुनत उठ धाये भीड़ पड़े के कष्ट निवारण ॥
द्रुपद सुता को चीर बढ़ायो दुशासन को मान घटायो ।
परतिज्ञा प्रह्लाद की राखी हिरणाकुश को उदर विदारण ॥
रिषिपतनी पर किरपा कीन्हीं विपति सुदामा की हर लीन्हीं ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर इती अवेर भई किस कारण ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१०७)

श्याम म्हानै चाकर राखोजी ॥
चाकर रहस्याँ भोग लगास्याँ नित उठ दरसण पास्याँ।
वृन्दावन की कुँजगलिन में तेरी लीला गास्याँ॥
चाकरी में दरसन पाऊँ सुमिरन पाऊँ खरची।
भाव भगति जागीरी पाऊँ तीनू बाताँ सरसी॥
मोरमुकुट पीताम्बर सोहे गल बैजंती माला।
वृन्दावन में धेनु चरावे मोहन मुरली वाला॥
ऊँचा ऊँचा महल बनाऊँ बिच बिच राखू बारी।
साँवरिया के दर्शन पाऊँ पहन कसुंबी सारी।
जोगी आया जोग करन कूँ तप करने संन्यासी।
हरी भजन कूँ साधू आये वृन्दावन के बासी॥
मीराँ के प्रभु गहर गँभीरा हृदय रहोजी धीरा।
आधि रात प्रभु दरसण दीन्हा जमुनाजी के तीरा॥

(१०८)

हे री मैं तो प्रेम दिवानी मेरो दरद न जाणे कोय॥
घायल की गति घायल जाणे जो कोई घायल होय।
जौहरि की गति जौहरि जाणे की जिन जौहर होय॥
सूली ऊपर सेज हमारी सोवण किस विध होय।
गगन मण्डल पर सेज पिया की किस विध मिलना होय॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दरद की मारी बन बन डोलू वैद मिला नहिं कोय।
मीरा की प्रभु पीर मिटै जब वैद सांवलिया होय॥

(१०६)

बाजे बाजे रे श्याम तोरी पैजनियाँ॥
मात यशोदा चलन सिखावे उँगलि पकड़ कर दोउ जनियाँ।
पैजनि बाजे सुहावनि लागे मगन भये सब मुनि जनियाँ॥
चलत घुटरुअनि बाजत किंकनि होत मधुर धुनि रिनझिनियाँ।
मीरा के प्रभू गिरधर नागर तीन लोक के तुम धनियाँ॥

(११०)

होरी खेलत है गिरधारी।
मुरली चंग बजत डफ न्यारो संग जुवति ब्रजनारी॥
चंदन केसर छिड़कत मोहन अपने हाथ बिहारी।
भरि भरि मूठ गुलाल लाल चहुँ देत सबन पै डारी।
छैल छबीले नवल कान्ह संग स्यामा प्राण पियारी॥
गावत चार धमार राग तहँ दे दे कल कर तारी।
फाग जु खेलत रसिक सांवरो बाढ़यो रस ब्रजभारी।
मीरा कूँ प्रभु गिरधर मिलिया मोहनलाल बिहारी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१११)

बसो मेरे नैनन में नंदलाल ॥
मोहनि मूरति साँवरि सूरति नैना बने विसाल।
अधर सुधा रस मुरली राजत उर बैजन्ती माल ॥
छुद्र घंटिका कटि तट सोहे नुपुर शब्द रसाल।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर भक्त बछल गोपाल ॥

विविध भक्त

(११२)

किशोरी राधे चरणन की रज पाऊँ।
जा रज को ब्रह्मादिक तरसत सो रज शीश चढ़ाऊँ ॥
पड़ी रहूँ कुँजन के कोने श्याम-राधिका गाऊँ।
वृन्दावन की कुँज गलिन में मोर पपैया बन जाऊँ ॥
और कछु माँगो नहिं तुमसे ब्रजरज अंग लगाऊँ।
'व्यास' स्वामिनी की छबि निरखत वेद विमल यश गाऊँ ॥

(११३)

अनुपम माधुरी जोड़ी हमारे श्याम श्यामा की।
रसीली मदभरी अखियाँ हमारे श्याम श्यामा की ॥
छबीली है अदा बाँकी सुघर सूरत मधुर बतियाँ।
लटक गरदन की मन बसिया हमारे श्याम श्यामा की ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुकुट और चन्द्रिका माथे अधर पर पान की लाली ॥
अहो ! कैसी बनी छबि है हमारे श्याम श्यामा की ।
परस्पर मिलके जब विहरे श्री वृन्दावन की कुँजन में ।
नहीं वरनत बने शोभा हमारे श्याम श्यामा की ॥
नहीं कछु लालसा धनकी नहीं निरवान की इच्छा ।
सखी 'श्यामा' को दो दर्शन दया हो श्याम श्यामा की ॥

(११४)

एसौ कब करिहौ मन मेरौ ।
कर करुवा कामरि कांधे पे, कुञ्जन माँझ बसेरौ ॥
ब्रज वासिन के टूक भूख में, घर घर छाछ गहेरौ ।
भूख लगै जब मांग खाउगौ, गनौं न साँझ सबेरौं ॥
रास विलास वृत्ति कर पाऊँ मेरे खूट न खेरौं ।
व्यास दास होय वृन्दावन में, रसिक जनन को चेरौ ॥

(११५)

अब मैं वृन्दावन रस पायौ ।
राधा चरण शरण मन दीनो, मोहन लाल रिझायो ।
सूतो हुतो विषय मन्दिर में, हित गुरु देरि जगायो ।
अबतो व्यास बिहार विलोकत, शुक नारद मुनि गायो ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(११६)

किशोरी मोहि अपनो करि लीजै।
और दिये कछु भावत नाहि, वृन्दावन रज दीजै।
खग मृग पशु पक्षी या वन, चरण शरण रख लीजै।
व्यास स्वामिनी की छवि निरखत महल टहलनी कीजै॥

(११७)

धन धन लाडिली के चरण।
अतिहि मृदुल सुगंध सीतल कमल के से वरण॥
नख चन्द चारु अनूप राजत जोत जगमग करन।
कुणित नूपुर कुंज विहरत परम कौतिक करन॥
नंद सुत मन मोद कारी सुरत सागर तरन।
दास परमानन्द छिन छिन श्याम ताकी सरन॥

(११८)

वैष्णव जन तो तेने कहिए पीर पराई जाणे रे।
पर दुःख उपकार करै तोय मन अभिमान न आणे रे॥
सकल लोकमा सहुने बन्दे निन्दा करे न केनी रे।
वाच काछ मन निश्चल राखे धन धन जननी तेनी रे॥
समदृष्टी ने तृष्णा त्यागो पर स्त्री जेने माता रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले परधन नव झाले हाता रे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मोह माया व्यापै नहीं जैने दृढ़ वैराग्य जैना मन मारे।
राम नाम सूं ताली लागी सकल तीर्थ तेना तन मां रे॥
वण लोभी नै कपट रहित है काम क्रोध निर्वार्या रे।
भणै नरसैयो तेनु दरसन करतां कुल एकोतर तार्या रे॥

(११६)

दर्शन दो घनश्याम नाथ मेरी अँखियाँ प्यासी रे।
मन मन्दिर की ज्योति जगादो घट घट बासी रे॥ दर्शन....
मन्दिर मन्दिर मूरति तेरी फिर भी न दीखे सूरत तेरी।
यह शुभ वेला आई मिलन की पूरनमासी रे॥ दर्शन....
द्वार दया का जब तू खोले पंचम स्वर में गूँगा बोले।
अँधा देखे लँगड़ा चलकर पहुँचे काशी रे। दर्शन....
पानी पीकर प्यास बुझाऊँ नैनन को कैसे समझाऊँ।
आँख मिचौनी अब तो छोड़ो मन के बासी रे॥ दर्शन....
लाज न लुट जाये प्रभु मेरी नाथ करो न दया में देरी।
तीनों लोक छोड़ के आवो गगन बिलासी रे॥ दर्शन....
द्वार खड़ा कबसे मतवाला माँगे तुमसे (हार) प्यार तुम्हारा।
नरसी की प्रभु बिनती सुनलो भक्त बिलासी रे॥ दर्शन....

(१२०)

बसो मेरे नैनन में दोउ चन्द।
गौर बरनि वृषभानु नंदिनी श्याम बरन नंदनन्द॥
गोलक रहे लुभाय रूप में निरखत आनंदकन्द।
जय श्री भट्ट प्रेम रस बन्धन क्यों छूटै दृढ़ फन्द॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१२१)

रे मन वृन्दाविपिन विहार।
विपिन राज सीमा के बाहिर हरिहू को न निहार॥
यद्यपि मिलै कोटि चिन्तामनि तदपि न हाथ पसार।
जय श्री भट्ट धूरि-धुसर तनु यह आसा उर धार॥

(१२२)

भगवान मेरी नैया उस पार लगा देना।
अबतक तो निभाया है आगे भी निभा देना॥
छल बल के साथ माया घेरे जो मुझे आकर।
तो देखते न रहना झट आके बचा लेना॥
संभव है झंझटों में मैं तुमको भूल जाऊँ।
पर नाथ कहीं तुम भी मुझको न भुला देना॥
तुम देव मैं पुजारी तुम इष्ट मैं उपासक।
यह बात अगर सच है सच करके दिखा देना॥

(१२३)

साँवरे घनश्याम तुम तो प्रेम के अवतार हो।
संकटों में फँस रहा हूँ तुम ही खेवनहार हो॥
आपका दर्शन मुझे इस भांति बारम्बार हो।
हाथ में मुरली मुकुट सिर पै गले में हार हो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चल रही आँधी भयानक भँवर में नैया पड़ी।
थाम लो पतवार हे भगवन जो बेड़ा पार हो॥
गजराज के शरणापति पर भागने वाले प्रभो।
देखना निष्फल न मेरी आँसुओं की धार हो॥

(१२४)

रसना क्यों न राम रस पीती।
षटरस भोजन पान करेगी फिर रीती की रीती॥
अजहूं छोड़ कुबान आपनी जो बीती सो बीती।
बादिन की तू सुधि बिसराई जा दिन बात कहीं थी॥
जब यमराज द्वार आ अड़िहै खुलिहै सब करतूती।
रूप कुँवरि को मान सिखावन भगवत सन कर प्रीती॥

(१२५)

बस गये नैनन माहिं बिहारी॥
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल बाँम अँग श्री प्यारी।
देखी जबसे साँवरी सूरत टरत न छबि दृग टारी॥
प्रेम भक्ति दीजै मोहि स्वामी अपनी ओर निहारी।
रूप कुँवरि रानी के साधहु कारज सकल मुरारी॥

(१२६)

होरी खेलन आयो श्याम आज याहि रंग में बोरोरी॥
कोरे कोरे कलश मँगावो केसर घोरोरी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुख में केसर मलो करो कारे ते गोरो री ॥
लोक लाज मरजाद सबै फागण में तोरो री ।
हरे बांस की बांसुरिया चाहे तोर मरोरी ॥
हाथ जोड़ जब करै बीनती तब चाहे छोरी ।
चन्द्र सखी यों कहे आज वन बैठ्यो भोरी ॥

(१२७)

नटवर नागर नंदा भजो रे मन गोविन्दा ॥
श्यामसुन्दर मुख चन्दा भजो रे मन गोविन्दा ।
तूँ ही नटवर तूँ ही नागर तूँ ही बाल मुकुन्दा ॥
सब देवन में कृष्ण बड़े हैं ज्यों तारों में चन्दा ।
सब सखियन में राधाजी बड़ी हैं ज्यों नदियों में गंगा ॥
वृन्दावन की कुंजगलिन में नाचत बाल मुकुन्दा ।
चन्द्र सखी भज बालकृष्ण छबि काटो यम का फंदा ।

(१२८)

चतुर भुज झूलत श्याम हिंडोरे ।
कंचन खम्भ लगे मणिमाणिक रेशम की रंग डोरे ।
उमड़ि उमड़ि घन बरसत चहुँ दिसी नदियाँ लेत हिलोरें ।
हरि हरि भूमि लता लपटाई-बोलत कोकिल मोरें ॥
बाजत बीन पखावज वंशी गान होत चहुँ ओरें ।
जाम सुता छबि निरखि अनोखी वारू काम किरोरें ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१२६)

हमारी सबही बात सुधारी ।
कृपा करी श्री कुँज बिहारिनी अरु श्री कुँज बिहारी ॥
राख्यो अपने वृन्दावन में जिहि ठाँ रूप उजारी ।
नित्य केलि आनन्द अखंडित रसिक संग सुखकारी ॥
कलह कलेस न व्यापै इहि ठा ठौर विश्व तें न्यारी ।
नागरिदासहिं जन्म जितायो बलिहारी बलिहारी ॥

(१३०)

स्वामिनि सियाजू हमारी फिकर मोहे काहे की ॥
नैहर मिथिला राज विराजै अवधपुरी राजधानी ।
उपजहिं जासु अंस से अगनित उमा रमा ब्रह्माणी ॥
जिनके ससुर महीपति दशरथ स्वामी श्री अवधबिहारी ।
देवर भरत, लखन, रिपुसूदन खासदास त्रिपुरारी ॥
रिद्धि सिद्धि चरनन पर राजत हनुमत पाँय पुजारी ।
प्रेमलता कलियुग का करिये रखिये स्वामिनि संभारी ॥

(१३१)

आज अवधपुर बजत बधाई ।
कुँवर भयो मातु कौशल्या के कीरति सब जग छाई ॥
कोटि रमापति रूप माधुरी ना वै छबि समताई ।
धन्य भाग्य राजा दशरथ के पुत्र अलौकिक पाई ॥
दधि हरदी कुंकुम से छिरकत सब मिलि मंगल गाई ।
चारु भैया की जोरी निरखत गुरु वशिष्ठ बलिजाई ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१३२)

भोला छाय रहे काशी में गिरिजा महारानी के संग।
गोरे तन पर भस्म विराजे जटाजूट बिच गंग॥
बेल की पतियाँ प्यारी लागै और गल बीच भुजंग।
आक धतूरा भोग लगत है भर भर लोटा भंग॥
नन्दीश्वर असवारी सोहे भूत प्रेत लिए संग।
दास नारायण शरण आपकी चढ़ै नित नया रंग॥

(१३३)

अब तो राम नाम रट लागी।
प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी। जाकी अँग अँग बास समानी॥
प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा। जैसे चितवत चंद चकोरा॥
प्रभुजी तुम दीपक हम बाती। जाकी ज्योति बरै दिन राती॥
प्रभुजी तुम मोती हम धागा। जैसे सोनहि मिलत सुहागा॥
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा। ऐसी भगति करै दासा॥

(१३४)

जन हित राम धरत शरीर॥
भक्तवर प्रहलाद हित नरहरि भये रघुवीर।
द्रोपदी पत राखिबे को बन गये प्रभु चीर॥
सकल भ्रम तजि भजिय रघुबर शांत-दांत-गम्भीर।
भक्त के हित धरे 'केशी' कर कमल धनु-तीर॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१३५)

बटाउ रे चलना आज की काल।
समझ न देखे कहा सुख सोवै रे मन राम संभाल॥
जैसें तरुवर विरख बसेरा पंखी बैठे आइ।
ऐसें यह सब हाट पसारा आप आप कूँ जाइ॥
कोइ नहिं तेरा सजन संगाती मति खोवै मन मूल।
यह संसार देख मत भूलै सबही सेंवल फूल॥
तन नहिं तेरा धन नहिं तेरा कहा रह्यो इहि लागि॥
दादू हरि बिन क्यूँ सुख सोवै काहे न देखै जागि॥

(१३६)

अजहुं न निकसै प्राण कठोर।
दरसन बिना बहुत दिन बीते सुन्दर प्रीतम मोर॥
चारि पहर चारों जुग बीते रैनि गँवाई भोर।
अवधि गई अजहूँ नहि आये कतहुं रहे चित चोर॥
कबहूँ नैन निरखि नहिं देखे मारग चितवत तोर।
दादू ऐसे आतुर बिरहिणि जैसे चन्द चकोर॥

(१३७)

हे मेरे गुरुदेव! करुणा सिन्धु करुणा कीजिये।
हूँ अधम आधीन अशरण अब शरण में लीजिये॥
खा रहा गोता हूँ मैं भवसिन्धु के मझधार में।
आसरा है दूसरा कोई न अब संसार में॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझमें न है जप-तप-न-साधन और नहिं कुछ भी है।
निर्लज्जता है एक बाकी और बस अभिमान है॥
पाप बोझे से लदी नैया भवर में आ रही।
नाथ! दौड़ो अब बचाओ जल्द डूबी जा रही॥
आप ही यदि छोड़ देंगे फिर कहाँ जाऊँगा मैं।
जन्म दुःख से नाव कैसे पार कर पाऊँगा मैं॥
सब जगह 'मंजुल' भटक कर ली शरण अब आप की।
पार करना या न करना दोनों मरजी आपकी॥

(१३८)

मनुआ भजले सीता राम काम तेरे कोइ न आवेगा।
देख सब स्वारथ को संसार
पिता माता भ्राता सुत नार
तू अपने दिल के माँहि बिचार
जा दिन सुवा उडेगो सो पुनि लौट न आवेगो॥ मनुआ
देख सब सपने को जंजाल
लपेटो उपर माया जाल
भजन कर हरि को बारंबार
सब ठाठ धर्‌यो रह जाय हाथ मलि-मलि पछतावेगो॥ मनुआ
करम पिछले कछु करि आयो
देह तैने मानुष को पायो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुणनि गोविन्द का ना गायो
भव सागर में पड़्यो नरक में गोता खावेगो ॥ मनुआ
प्रथम तू काम क्रोध कूँ मार
दया को ले हृदय में धार
मिले तोहे निश्चय कृष्ण मुरार
कहता 'राधेश्याम' लोटि ना जग में आवेगो ॥ मनुआ

(१३६)

बजरंग बली मेरी नाव चली जरा बल्ली कृपा की लगा देना ।
मुझे रोग ने सोक ने घेर लिया मेरे ताप को नाथ मिटा देना ॥
मैं दास तो आपका जन्म से हूँ बालक और शिष्य भी धर्म से हूँ ।
वेशर्म विमुख निज कर्म से हूँ चित से मेरा दोष भुला देना ॥
दुर्बल हूँ गरीबहुँ दीनहुँ मैं निज कर्म क्रिया गते छीण हूँ मैं ।
बलवीर तेरे आधीन हूँ मैं मेरी बिगड़ी हुई को बना देना ॥
बल देके मुझे निर्भय कर दो यश शक्ति मेरी अक्षय कर दो ।
मेरे जीवन को सुखमय कर दो संजीवन लाय पिला देना ॥
करुणानिधि आपका नाम भी है शरणागत 'राधे श्याम' भी है ।
इसके अतिरिक्त यह काम भी है श्री रामजी से मोहे मिला देना ॥

(१४०)

तेरो अवसर बीत्यो जाय बावरे दो दिन का मेहमान ॥
बड़े बड़े बादशाह देखे नूरे नजर बलवान ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काल कराल से कौन बचे है मिट गये नाम निशान ॥
गज घोड़े अरु सेना भारी नारी रूप की खान।
सभी एक दिन न्यारे होकर जाय बसें समसान ॥
संत समागम समझ न जानै रहे विषय गलतान।
पचे रहे दिन रात मंदमति जैसे सूकर स्वान ॥
इक पल साहिब नाम न लीना हाय अभागे जान।
पतीत पावन देख पियारे हो जावे कल्याण ॥
हरिहर छाड़ आन कह भटके रे मन मेरे मान।
'साँइ करीमशा' साहेब जी से अब तो कर पहचान ॥

(१४१)

मेरा सतचित आनन्द रूप कोइ कोइ जानेरे।
द्वैत वचन का मैं हू स्रष्टा मनवाणी का मैं हूं द्रष्टा।
अनुभव सिद्ध अनूप ॥ कोई—

पंच कोष से मैं हूँ न्यारा तीन अवस्था से भी न्यारा
मैं हूं साक्षी भूत ॥ कोइ—

जन्म मरण मेरा धरम नहीं है पाप पुण्य मेरा कर्म नहीं है।
अजनिर्लेपी रूप ॥ कोइ—

सूर्यचन्द्र में तेज है मेरा अग्नि में भी ओज है मेरा।
मैं अद्वैत स्वरूप ॥ कोइ—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीनलोक का मैं हूं स्वामी घट घट व्यापी अन्तर्यामी।
ज्यों माला में सूत ॥ कोई—

राजेश्वर निजरूप) पिछानो जीव ब्रह्म में भेद न मानो
मैं हूँ ब्रह्म स्वरूप ॥ कोई

(१४२)

लाखों पहाड़ पर्वत ढूँढ़े कण कण में ढुँढ़ना भूल गये।
भगवान को ए भोले भक्तों इस तन में ढूँढ़ना भूल गये ॥
ना बादल में ना अम्बर में ना बिजली की चोट में।
वो विराट है छिपा हुआ छोटे से तिलकी ओट में।
अपने स्वासों के इन धीमें तारों में ढूंढ़ना भूल गये ॥
कोई धन मद में लटक गये कोइ खाली हाथों सटक गये।
पर अपने इस चेतन चित के दर्पण में ढूंड़ना भूल गये।
कोई विद्या पढ़कर अटक गये कोई भेष बनाकर भटक गये ॥
सबकी गवाह देता फिरता सबकी सलाह लेता फिरता।
कहीं वाह वाह करता फिरता कहीं आह आह करता फिरता।
पर सबमें चेतन जो खुद है अपने को ढूंढ़ना भूल गये ॥
'अल ग रज' उपाधी जेवर है ये जानरहा जो है सोना।
इस तरह जो खुद को ना ढूंढा तो भर जीवन फिर है रोना।
इस दुनिया दारी में पड़कर अपने को ढूंढ़ना भूल गये ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१४३)

होली खेलत है नन्दलाल।

ग्वाल बाल संग धूम मचावे नटखट मदन गोपाल॥
बाजत ढोलक झाँझ मजीरा नाचत देवे ताल।
भर भर मारे रंग पिचकारी उड़त अबीर-गुलाल।
जमुना तट पर वंशी बजावे संग लिए ब्रज-बाल।
कृष्णदास पर किरपा कीजौ केशव दीनदयाल॥

(१४४)

हमारी भी सुनो हे मात-भवानी।
हम तेरे ही बच्चे हैं जगत महारानी।
तेरा आसरा छोड़ के मैया और कहीं ना जायेंगे।
भूखे प्यासे रहकर के भी तेरे ही गुण गायेंगे॥
पलक उघाड़ो देखो खड़े तेरे द्वारे माँ।
कर दो दया की दृष्टि पड़े तेरे द्वारे माँ।
चरणों में आया 'सत्य' मुसीबत के मारे माँ-२
कैसे हम गुजरान करे माँ नहिं तेरे से छानी॥ हमारी
सिंघ सवारी करती मैया कैसी छटा निराली है॥
तूं ही शारदा तूँ ही लक्ष्मी, तूँ ही महाकाली है।
शुंभ निशुम्भ जैसे तूंने संहारे माँ
रक्तबीज महिषासुर को तूंने ही मारे माँ
देवों के संकट सारे तूंने हां टारे माँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेरायश है उज्ज्वल निरमल ज्यों गंगा का पानी ॥ हमारी
ब्रह्माविष्णु शंकर ने भी आदि शक्ति मानी है।
जै जगदम्बे जै जगदम्बे वेद पुराण बखानी है॥
शक्ती से ही सेबा होवे शक्ती से ही दान है
शक्ती से ही विजय होवे शक्ती से ही मान है
शक्ती से ही सारी रचना शक्ती कल्याण है-२
बिना शक्ति के तीन लोक में बचा न कोइ प्राणी ॥हमारी
कण कण में देखी है मैया तेरी ज्योति समाई है।
भीड़ पड़ी भक्तों में जब तूं दौड़ी दौड़ी आई है॥
हमारी पुकार सुनो दरश दिखावो मां
आशा लगाये बैठे क्यूँ तरसावो मां
अवतो करो ना देरी हिवड़े लगावो मां-२
'देवकी नन्दन' कहे मात अब करदो मेहरवानी ॥हमारी

(१४५)

मन भूल मति जैयो राधा रानी के चरण॥
बृजरानी के चरण सुखदानी के चरण।
बाँके ठाकुर की बाँकी ठकुरानी के चरण॥
वृषभानु की किशोरी सुनि गैया हूँ ते भोरी।
प्रीति जानिके हुँ थोरी तोहिं राखेगी शरण॥
जाँकू श्याम उर हेर राधे राधे राधे टेर।
बाँसुरी में बेर बेर करे नाम से रमण॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भक्त प्रेमिन बखानी जाकी महिका रस खानी।
मिले भीख मनमानी कर प्यार से वरण॥
एरे मन मतवारे छोड़ दुनियाँ के द्वारे।
राधा नाम के सहारे सौंप जीवन मरन॥

(१४६)

ओ मन मंगल मोद मचावती, हँस नचावती धावती आवो।
काव्य के ज्ञान की ज्योति जगावती गावती बीन-बजावती आवो॥
सोम प्रभाकर की प्रभा लावती छंदन में छबि छावती आओ।
भंजी भयंकर भाव भयावने भारती भीति भगावती आवो॥
वरदे वीणावादिनि वरदे।
प्रिय स्वतन्त्र रव अमृत मन्त्र रव
भारत में भरदे॥ वरदे.....
काट अंध उर के बंधन स्तर वहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर
कलुष भेद तमहर प्रकाशभर जगमग जग करदे॥ वरदे.....

(१४७)

जगदम्बे भवानी मैया तेरा त्रिभुवन में छाया राज है।
सौहे वेष कंसुमल नीको तेरे रत्नो का सिर पै ताज है॥
जल पर थल और थल पर सृष्टि अद्भुत तेरी माया है।
सुर-नर-मुनि-जन ध्यान धरे नित पार नहीं कोइ पाया है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेरे हाथों में दास की लाज है लियो शरणों तिहारो आज है।
जब जब भीड़ पड़ी भक्तन पर तब ही आय सहाय करे।
अधम उधारण तारण मैया युग युग रूप अनेक धरे।
चुका करती तू भक्तों के काज है मैया नाम गरीब निवाज तेरो ॥

(१४८)

चारों लाला प्रगठ भये आज अवध में लड़वा बटे
लड़वा बटेरे ढ़ोल घुड़ेरे झीनी झीनी उड़ेरे गुलाल ॥
घानरवाल बन्धावो बहना परदा लगाओ जरीदार।
मोतियन चौक पुरावो सवमिल सुवरन के कलश सजाय ॥
केशर कस्तूरी की-अरदो तलैयाँ वरसादो मूसलधाए।
गैया के दूध की खीर बनावो ब्राह्मण जिमावो अपार ॥
छटी पुजावो गीत सब गावो मोहरों की करदो उछाल ॥

(१४९)

हे गुरुदेव भगवान करो कल्याण।
हमारे स्वामी तुम्हें बारंबार नमामि ॥

हम द्वार आपके आये हैं, कर जोड़े शीश नवाये हैं।
मेरी नैया पड़ी मझधार हमारे स्वामी ॥ तुम्हें—
जो शरण आपकी आता है वह निश्चय मुक्ति पाता है।
अब आप ही खेवनहार हमारे स्वामी ॥ तुम्हें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस दुनियाँ से प्रभु न्यारे हो भक्तों के प्राण अधारे हो।
थाकी महिमा अपरम्पार हमारे स्वामी॥ तुम्हें
हम भाव पुष्प ले आये हैं प्रभु दर्शन करने आये हैं।
मेरी पूजा करो स्वीकार हमारे स्वामी॥ तुम्हें
प्रभु पूरण ब्रह्म कहाते हो और आवागमन छुड़ाते हो।
मुझे भव से करदो पार हमारे स्वामी॥ तुम्हें
सेवक चरणों में पड़ता है कर जोड़ के विनती करता है।
अब करो दीन पें कृपा हमारे स्वामी॥ तुम्हें

(१५०)

वृन्दावन धाम अपार रटे जा राधे राधे
प्यारे ब्रजराज कुमार रटे जा॥
शिर मोर मुकुट अति सोहे मकराकृत कुण्डल मोहे
तेरे गल वैजन्तीमाल रटे जा राधे राधे॥
शिर भाल तिलक अति सोहे घुँघराली अलके सोहे
ठोड़ी पर हीरालाल रटे जा राधे राधे॥
वृन्दावन रास रचायो शिव गोपी रूप बनायो
वंशीवट करे विहार रटे जा राधे राधे॥
यह ब्रज की महिमा भारी नहि जाने अज त्रिपुरारी
जहाँ प्रगटे नंद कुमार रटे जा राधे राधे॥
जहाँ रोहिनी जसुमति मैया दाउ से नेही भैया
नंद बाबा करे दुलार रटे जा राधे राधे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये प्रिया प्रियतम की लीला कोइ समुझे रसिक हठीला
जाको वेद न पायो पार रटे जा राधे राधे ॥
तू वृन्दावन नहि आयो और राधा नाम न गायो
तेरो जीवन है धिक्कार रटे जा राधे राधे ।
यह व्रज की अकथ कहानी क्या जाने जोगी ध्यानी
या को जाने व्रज की नार रटे जा राधे राधे ॥
जो राधा राधा गावे वो अन्त अमर पद पावे
बाँकी हो जाये बेड़ा पार रटे जा राधे राधे ॥

(१५१)

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये ।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ॥
मुख में हो राम नाम राम सेवा हाथ में ।
तू अकेला नाहिं प्यारे राम तेरे साथ में ॥
विधि का विधान जान हानि लाभ सहिये ॥ जाहि....

किया अभिमान तो फिर मान न पायेगा ।
होगा प्यारे वही जो श्रीरामजी को भायेगा ॥
फल आशा त्याग शुभ काम करते रहिये ॥ जाहि....

जिन्दगी की डोर सौंप हाथ दीनानाथ के ।
महलों में राखे चाहे झोपड़ी में बास दे ॥
धन्यवाद निर्विवाद राम राम कहिये ॥ जाहि....

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आशा एक रामजी से दूजी आशा छोड़ दे।
नाता एक रामजी से दूजा नाता तोड़ दे॥
साधु संग कर प्यारे प्रेम भक्ति लहिये॥ जाहि····

(१५२)

सीताराम सीताराम सीताराम बोल
केशव माधव गोविन्द बोल॥
नाम प्रभु का है सुखकारी पाप कटेंगे क्षण में भारी
तेरा कुछ नहीं लगता मोल॥ केशव···
गीध अजामिल मीरा बाई नाम जपन ते मुक्ति पाई
हरि का नाम बड़ा अनमोल॥ केशव····
यह दुनियाँ है गोरख धंधा भेद समझता है कोइ बन्दा
ज्ञान तराजू में लो तोल॥ केशव····
राम नाम के सब अधिकारी बालक युवा वृद्ध नर नारी
नाम की महिमा है वे होल॥ केशव····

(१५३)

प्रेम मुदित मन से कहो राम राम राम।
श्री राम राम राम श्रीराम राम राम॥
पाप मिटै दुःख कटै लेत राम नाम।
भव समुद्र सुखद नाव एक राम नाम॥ श्रीराम····

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परम शान्ति सुख निधान नित्य राम नाम।
निराधार को आधार एक राम नाम।। श्रीराम...

परम गोप्य परम इष्ट मन्त्र राम नाम।
संत हृदय सदा बसत एक राम नाम।। श्रीराम....

महादेव सतत जपत दिव्य राम नाम।
काशी मरत मुक्त करत कहत राम नाम।। श्रीराम....

माता पिता बन्धु सखा सबही राम नाम।
भक्त जनन जीवन धन एक राम नाम।। श्रीराम....

(१५५)

वसाले मन मन्दिर में राम।
छण भंगुर है जीवन तेरा गल जाये माटी का ढेला
माया में तूँ भटक रहा है निसदिन करता मेरा मेरा
साथ में तेरे जायगा बंदे एक प्रभु का नाम।।

राम नाम तू प्रेम से गाले गाकर जीवन सफल बना ले
धर्म कर्म कर पुण्य कमा ले जग में रहकर मुक्ति पाले
बन जायेगा जनम जनम का बिगड़ा हुआ सब काम।

राम नाम है निरमल पाणी उसमें खूब नहाले प्राणी
संत जनो की सेवा कर ले मन की मैल छुड़ा ले प्राणी
हो जायेगा बैठे बैठे घर में चारो धाम।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१५५)

हे राम सहारा बन जावो ॥
यह जीवन नैया डूब रही रघुनाथ किनारा कर जावो ।
घट भीतर घोर अँधेरा है प्रभु ज्ञान उजाला कर जावो ॥
संसार स्वप्न की माया है भव पार हमें अब कर जावो ।
हम महा दुःखी हैं हे स्वामी दुःख दूर हमारा कर जावो ॥

(१५६)

मैं नहीं मेरा नहीं यह तन किसी का है दिया ।
जो भी अपने पास है वह धन किसी का है दिया ॥ मैं
देने वाले ने दिया वह भी दिया किस शान से ।
'यह मेरा है' लेना वाला कह उठा अभिमान से ॥
मैं व मेरा कहने वाला मन किसी का है दिया ॥ मैं
जो मिला है वह हमेशा पास रह सकता नहीं ।
कब बिछुड़ जायेगा कोई राज कह सकता कोई ॥
जिन्दगानी का खिला मधुवन किसी का है दिया ॥ मैं
जग की सेवा खोज अपनो प्रीति उनसे कीजिये ।
जिन्दगी का राज है यह जानकर जी लीजिये ॥
साधना की राह पर साधना किसी का है दिया ॥ मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१५७)

(मेरे) मालिक की दुकान में है सबका खाता।
जितना जिसके भाग्य में होता वह उतना ही पाता॥
क्या साधू क्या संत गृहस्थी क्या राजा क्या रानी,
प्रभु की पुस्तक में लिखा है सब की कर्म कहानी।
वही सभी के जमा खरच का सही हिसाब बताता॥ १
नहीं चले प्रभु के घर रिश्वत नहीं चले चालाकी,
प्रभु की अपनी लेन देन की रीत बड़ी है बाँकी।
पुण्य की नैया पार वो करता पाप की नाव डुबाता॥ २
बड़ा कड़ा कानून है उसका बड़ी कड़ी मर्यादा,
किसी को कौड़ी कम नहिं देता और न दमड़ी ज्यादा।
इसीलिए वो सारे जगत का जगत सेठ कहलाता॥ ३
करता है फैसला जगत का निज आसन पै डटके,
उसका फैसला कभी न पलटे लाख कोई सर पटके।
समझदार तो चुप रहता है मूरख शोर मचाता॥ ४
अच्छी करनी करो रे भैया कभी न करियो काला,
देख रहा है हजार आँख से तुम्हें देखने वाला।
धर्म की खेती करो संत जन समय गुजरता जाता॥५

(१५८)

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरा निश्चय बस एक यहीं इक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं
अर्पण कर दूं सब दुनियाँ का मैं प्यार तुम्हारे हाथों में
जग में रहूं तो ऐसा रहूँ ज्यौं जल में कमल का फूल रहे
मेरे अवगुण तेरे समर्पित हो हे नाथ तुम्हारे चरणों में
मुझमें तुझमें है भेद यही मैं नर हूं तुम नारायण हो।
मैं हूँ संसार के हाथों में संसार तुम्हारे हाथों में

(१५८)

हे निराधार के सर्वधार अधिकार तुम्हारे हाथों में।
सृष्टि कर्त्ता पालनकर्त्ता संहार तुम्हारे हाथों में॥
हे योगेश्वर हे ज्ञानेश्वर हे प्राणेश्वर हे सर्वेश्वर।
भक्ति युक्ति सत्ता सब कुछ दातार तुम्हारे हाथों में॥
हम दीन है तुम दीनन बंधु हम बिन्दु हैं तुम हो सिन्धु।
दुःख दूर करो संताप हरो उपकार तुम्हारे हाथों में॥
जीवन नैया मझधार में है चाहो तो पार लगा देना।
इस पार करो उस पार करो पतवार तुम्हारे हाथों में॥
अब सौंप दिया जीवन हमने सरकार तुम्हारे हाथों में।
उद्धार हमारा निश्चय है करतार तुम्हारे हाथों में॥
गोविन्द तुम्हारे दर्शन को प्राणों की बाजी लगाई है।
तुम जीत गये हम हार गये जीत-हार तुम्हारे हाथों में॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१६०)

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो।
मनको विषयों के विष से बचाते चलो॥
देखना इन्द्रियों के न छोड़े भगे।
इन पै दिन रात संदभं के कोड़े लगे।
अपने रथ को सुमारग चलाते चलो॥
प्राण जाये पर हरिनाम भूलो नहीं।
दुख में तड़को नहीं सुख में फूलों नहीं।
प्रेम भक्ति के आँसू बहाते चलो॥
नाम जपते रहो काम करते रहो।
पाप की वासनाओं से डरते रहो।
नाम धन का खजाना बढ़ाते चलो॥
याद आयेगा उनको कभी न कभी।
दास पायेगा उनको कभी न कभी।
ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो॥

(१६१)

मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल-पल छिन-छिन रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥
चाहे बैरी कुल संसार बने चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चाहे अग्नि में मुझे जलना हो चाहे काँटो पै मुझे चलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥
चाहे संकट ने मुझे घेरा हो चाहे चारों ओर अँधेरा हो।
पर मन नहिं डगमग मेरा हो रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥
जिह्वा पर तेरा नाम रहे तेरा ध्यान सुबह और शाम रहे।
तेरी याद में आठोयाम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥

(१६२)

उसी का जीवन है धन्य जग में जो सेवा व्रत में लगा हुआ है।
सिखाया दुनियाँ को धर्म उसने जो धर्म पै खुब डटा हुआ है॥
उसी का है तेज नभ के उदर उसी का तप भूमि के है भीतर।
सदा जो परमारथ की अनल में सुवर्ण जैसा तपा हुआ है।
जिया है जो दूसरों की खातिर मरा है जो दूसरों की खातिर।
सदा अमर है वह इस जगत में जगत उसी पर टिका हुआ है॥
जहाँ के तख्ते पै नाम उसका सदैव स्वर्णाक्षरों में चमका।
असत पै जिसने कदम न रखा सदा जो सत पर डटा हुआ है॥
उसी ने पाया है उस सुधा को वही रिझाता है देवता को।
मिटाई है जिसने अपनी रंगत अमिर के रंग में रंगा हुआ है॥

(१६३)

अपने दुख में रोने वाले मुस्कुराना सीख ले।
दुसरों के दर्द में आँसू बहाना सीख ले॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो खिलाने में मजा है आप खाने में नहीं।
जिन्दगी में तू किसी के काम आना सीख ले॥
कर गरीबों का भला और बे-नसीबों पर रहम।
बस इसी जीवन में तू जीवन बनाना सीख ले॥
दीन की सेवा हो दिल में मुख में हरि का नाम हो।
लोक-सेवा में निरंजन को परखना सीख ले॥

(१६४)

तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार उदास मन काहे करे।
उदास मन काहे को करे निराश मन काहे को करें॥ तेरा
नैया तू करदे उसके हवाले लहर लहर हरि आप संभाले।
प्रभु आप ही उतारे तेरा पार उदास मन काहे को करें॥
काबू में मझधार उसीके हाथों में पतवार उसी के।
बाजी जीत लेत्रो होवे नही हार उदास मन काहे को करे॥
गर निर्दोष तुझे क्या डर है पग पग पर साथी ईश्वर है।
जरा भावना से करले पुकार उदास मन काहे को करे।
सहज किनारा मिल जायेगा परम सहारा मिल जायेगा।
डोरी सौंप दे उसी के हाथ उदास मन काहे को करे॥

(१६४)

राम से बड़ा राम का नाम—२
सुमरिये राम रूप बिन देखे इसमें लगे न कौड़ी दाम।
नाम की डोरी से बन्ध करके आयेंगे श्रीराम॥ राम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नामी को चिंता यह रहती नाम न हो बदनाम।
द्रौपदी ने जब नाम पुकारा झट आये घनश्याम॥
बिना सेतु के सागर को भी लाँघ सके ना राम।
लाँघ गये हनुमान उसी को लेके राम का नाम॥
वो अभिमानी डूब जायेंगे जा मुख नाहीं राम।
वो पत्थर भी तर जायेंगे लिखा है जिनपे राम॥

(१६६)

हीरा जनम तुझे जो मिला है वह लुटाने के काबिल नहीं है।
तेरा हर स्वांस अनमोल मोती यह गवाने के काबिल नहीं है-२॥
देखो इश्वर की अद्भुत यह माया तेरे खातिर यह सब कुछ बनाया।
ऐसे दाता को तूँने भुलाया जो भुलाने के काबिल नहीं है-२॥
पशु जीते जी सेवा में आते मरकर भी बाद में काम आते।
तेरा जिस्म तो मरकर किसी के काम आने के काबिल नहीं है-२॥
झूठ बोले औ गप्पे उड़ाये पाप कर्ता है शर्म न आये।
तेरी वाणी तो प्यारे प्रभु के गीत गाने के काबिल नहीं है-२॥
रहता माया में तू लीन ऐसा खर्च करता है इस पर तू पैसा।
मिलें बिन मोल अनमोल सतसंग इसमें आने के काबिल नहीं है-२॥
अब ना संभला तो रोना पड़ेगा नर्क में गर्क होना पड़ेगा।
तेरा ऐसा बुरा हाल होगा कि बताने के काबिल नहीं है-२॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहता हूँ कह जात हूँ कहाँ बजाऊँ ढोल।
स्वासा खाली जात है तीन लोक का मोल॥

(१६७)

मैंने मानुष जनम तुमको हीरा दिया
इसको विरथा गँवाये तो मैं क्या करूँ ?
वेद मन्त्रों से सब कुछ बताया तुझे
तू समझ में न लाये तो मैं क्या करूँ ?
मुँह दिया मुँह से खाने को अनजल दिया
मेवा मिष्टान्न फल क्या क्या पैदा किया
जानवर वन के गर स्वाद के वास्ते
तूँ अगर मांस खाये तो मैं क्या करूँ ?
धन दिया बल दिया और बुद्धि भी दी
सोचने और समझने की शक्ति भी दी
किस तरह काम में इसको लाना है यह
तू अगर भूल जाये तो मैं क्या करूँ ?
दीन दुखियों के दिल को सताने लगा
पाप कर्मों में मन को लगाने लगा
तूने जैसा किया वैसा पाने लगा
अब तूँ आँसू बहाये तो मैं क्या करूँ ?
नाम मेरा तेरा पाप भी काट दे
तू अगर दुष्ट कर्मों से मन रोक दे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं तो कहता हूँ आजा तू मेरी शरण
पर तूही न आये तो मैं क्या करूँ ?
छोड़कर छल कपट आजा मेरी शरण
छूट जायेगा तेरा वो आवागमन
छोड़कर ऐसा मौका अरे आदमी
लख चौरासी में जाये तो मैं क्या करूँ ?
जन्म से मृत्यु तक मैं तो देता रहा
पर तू ऐसा उमर भर कि रोता रहा
मैं तो हाथों में दे दी तुम्हारे कलम
फिर भी तू लिख सके ना तो मैं क्या करूँ ?

(१६८)

आदमी में अगर आदमी की तरह
आदमीयत न आये तो मैं क्या करूँ ?
देने वाले ने दुनिया को सब कुछ दिया
पाने वाले न पाये तो मैं क्या करूँ ?
अक्ल दी शक्ल दी और दिया यह जहाँ
मुँह दिया मुँह में दी उसने मीठी जुबां
हर तरीका तनीजा दिया आदमी का
पर समझ में न आये तो मैं क्या करूँ ?
जीना चाहे तो जीने को दी जिन्दगी
बन्दा परवाने बन्दे की, की बन्दगी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बन्दगी बन्द कर आदमी आग से
चूँकि अंगारे लाये तो मैं क्या करूँ ?

लाखों दी नियामतें तेरे अरमान को
कैसा खुद गर्ज भूला तू भगवान को

जर्रे जर्रे में वो है समाया हुआ
देख तुमको न आये तो मैं क्या करूँ ?

(१६६)

जय शंकर कैलासपति शिव पूरन ब्रह्म सदा अविनासी ॥
अंग विभूति गले मुंडमाला शीश जटा जल गंग विलासी ।
चन्द्रकला मस्तक पर सोहे तीन नयन त्रैलोक्य विकासी ॥
कर त्रिशूल पहरे मृगछाला संग बसे गिरिजा नित दासी ।
ब्रह्मानंद करो करूणा प्रभु भव भंजन भक्तन सुखरासी ॥

(१७०)

जय जगदीश्वरी मात सरस्वती शरणागत प्रतिपालन हारी ।
चंद्र बिंबसम वदन बिराजे शीशमुकुट माला गल धारी ।
वीणा वाम अंग में शोभे सामगीत ध्वनि मधुर पियारो ॥
श्वेत वसन कमलासन सुन्दर संग सखी शुभ हंस सवारो ।
ब्रह्मानंद मैं दास तुम्हारो दे दर्शन पर ब्रह्म दुलारी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१७१)

सब तजि भजिये नंदकुमार।
और भजे ते काम सरे नहिं मिटै न भव जंजार॥
जिहिं जिहिं जौनि जनम धारयो बहु जोर्‌यो अघ को भार।
तिहि काटन कौ समरथ हरि कौ तीछन नाम कुठार॥
वेद पुरान भागवत गीता सबको यह मतसार।
भव समुद्र हरिपद नौका बिनु कोउ न उतरै पार॥
यह जिय जानि इहिं छन भजि दिन बीते जात असार।
सूर पाइ यह समौ लाहु लहि दुर्लभ फिरि संसार॥

(१७२)

मुझे तो अपनी बाहों से उठाकर प्यार दो भगवन।
आ गया हूँ पतित-पावन करो स्वीकार हे भगवन॥
तुझे देखूँ तुझे पाऊँ तेरी कुदरत के कण कण में।
जहाँ जाऊँ तुझे पाऊँ भरू आनन्द छण छण में॥
तुम्हीं वीणा तुम्हीं सरगम तुम्हीं लय अपने गायन में।
सुनो तुमही रमो तुमहीं स्वयं विचरों इन भावन में॥
मैं मस्ती मोर की नाचूँ मगन हो तेरि बगियन में॥
कृपा की दृष्टि बरसादो पड़ा हूं तेरे चरणन में॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१७३)

रे मन कृष्ण नाम कह लीजै ।
गुरु के वचन अटल करिमानहु साधु समागम कीजै ॥
पढ़िये गुनिये भक्ति भागवत और कहा कथि कीजै ।
कृष्ण नाम बिन जनम बाद ही विरथा काहे जीजै ॥
कृष्ण नाम रस बह्यो जात है तृषावन्त ह्वै पीजै ।
सूरदास हरि शरण ताकिये जनम सफल कर लीजै ॥

(१७४)

हे राम तुम्हारे चरणों में यह जीवन मेरा अर्पण है ।
ठुकरावो चाहे अपनाओ यह अपनी तुम्हारी मर्जी है ॥
छाया घनघोर अँधेरा है सूझते कोइ किनारा है ।
यह नैया पार लगा देना यह अपनी तुम्हारी मर्जी है ॥
चलते चलते मैं हार गया पर ना भवसिन्धु के पार गया ।
अब एक झलक दिखला देना यह अपनी तुम्हारी मर्जी है ॥
गज गणिका का उद्धार किया व अजामिल को भी तार दिया ।
इस दीन दुःखी पै दया करना यह अपनी तुम्हारी मर्जी है ॥

(१७५)

हे भक्त रंजन हे दुःख भंजन हे श्याम सुन्दर हे श्याम सुन्दर ।
हे हृदय लोचन हे पाप मोचन हे श्याम सुन्दर हे श्याम सुन्दर ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे ज्ञान गीता हे दिव्यगायक हे शान्तिदायक हे रासनायक।
हे राधिकापति हे रंक के धन हे श्याम सुन्दर हे श्याम सुन्दर॥
हे सृष्टिकर्त्ता हे विश्वभर्त्ता हे दीन बन्धो हे शौख्य सिन्धो।
हे देव वन्दन हे नन्द नन्दन हे श्याम सुन्दर हे श्याम सुन्दर॥

(१७६)

जो श्रीराम जय राम गाता रहेगा।
वो निश्चय ही आनंद पाता रहेगा॥

अगर कोइ सतसंग में आता रहेगा
तो मरने का भय दिल से जाता रहेगा।

यदि प्रेम से संत के संग रहकर
चरण धूली मस्तक लगाता रहेगा॥

असर ना करेगी विषय बेली उनपर
जो अभ्यास बूटी को खाता रहेगा।

निकट में न आयेंगे यमदूत उनके
जो सतगुरु की वाणी निभाता रहेगा॥

दिखेगी वो ज्योति किसी न किसी दिन
जो श्रीराम जय राम गाता रहेगा।

कहे सज्जनानंद बिगड़ी बनेगी
शरण में जो संतों के जाता रहेगा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१७७)

कृपा की न होती जो आदत तुम्हारी।
तो सूनी ही रहती अदालत तुम्हारी॥
जो दीनों के दिल में जगह तुम न पाते।
तो किस दिल में होती हिफाजत तुम्हारी॥
गरीबों की दुनियाँ है आबाद तुमसे।
गरीबों से है बादशाहत तुम्हारी॥
न मुलिजम ही होते न तुम होते हाकिम।
न घर घर में होती इबादत तुम्हारी॥
तुम्हारी ही उल्फत के दृग 'बिन्दु' हैं यह।
तुम्हें सौंपते हैं अमानत तुम्हारी॥

(१७८)

शरण अपनी में रख लीजो दयामयी दास हूं तेरा।
तुम्हें तजकर कहाँ जाऊँ हितू अब कौन है मेरा॥
भटकता हूँ मैं मुद्दत से नहीं विश्राम पाता हूँ।
दया की दृष्टि से देखो नहीं तो डूबता बेड़ा॥
सताया राग द्वेषों ने तपाया तीन तापों का।
दुखाया जन्म मृत्यु का हुआ तंग हाल है मेरा॥
दीन दुख मेटने वाली तेरा ही नाम सुनकर मैं।
शरण तेरी मैं आया हूँ बनालो मात अब चेरा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सन्त वाणी

(१)

सिया राम स्वरूप अगाध अनूप बिलोचन मीनन को जलु है।
श्रुति राम कथा मुखराम को नाम हिये पुनि रामहि को थलु है॥
मति रामहिं सों गति रामहिं सों रति राम सो रामहिं को बलु है।
सबकी न कहै 'तुलसी' के मते इतनो जग जीवन को फलु है॥

(२)

जप जोग विराग महामख-साधन दान दया दम कोटि करै।
मुनि-सिद्ध-सुरेस गणेश-महेस से सेवत जन्म अनेक मरै॥
निगमागम ज्ञान पुरान पढ़ै तपसानल में जुग पुँज जरै।
मन सो पन रोपि कहै तुलसी रघुनाथ बिना दुख कौन हरै॥

(३)

कबहुं शशि माँगत आरि करै कबहूं प्रतिबिम्ब निहारि डरै।
कबहुँ करताल बजाइ के नाचत मातु सबै मन मोद भरें॥
कबहुँ रिसियाइ कहै हठि कै पुनि लेत सोई जेहि लागि अरै।
अवधेश के बालक चारि सदा तुलसी मन मन्दिर में बिहरै॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(४)

जे चरण सिव अज पूज्य रज सुभ परसि मुनि पतिनी हरी।
नख निर्गता मुनि वंदिता त्रैलोक्य पावनि सुरसरी॥
ध्वज कुलिस अंकुस कंज जुत बन फिरत कंटक किन लहै।
पद कंज द्वन्द मुकुन्द राम रमेश नित्य भजामहे॥

(५)

शिर उपर मोर के पंख लसै उर में वनमाल सुहाया रहे।
कटि काछ की मंजु कसे कटि में नटनागर वेश बनाया रहे॥
सब व्यंजन भोग पदार्थ तजे जिसके मन माखन भाया रहे।
वह सुन्दर श्याम सलौना मेरा इन नैनों में नित्य समाया रहे॥

(६)

मणिमाला मनोहर कंठ में हो पहिने उर में बनमाला रहो।
करते नित रास विलास रहो लिये संग सदा ब्रज बाला रहो॥
अपने मुखचन्द्र की चन्द्रिका से उर बीच किये उजियाला रहो।
इन नैनों में नित्य दया करके तुम नाचते नंद के लाला रहो॥

(७)

पहले मुखचन्द्र दिखाकर के फिर हाय वियोग दिखाया है क्यों।
चरणामृत स्वाद चखा करके विष का फिर प्याला पिलाया है क्यों॥
बस एक ही बार हंसा करके इस भाँति सदैव रुलाया है क्यों।
मन में जब मोह नहीं रखते मन मोहन नाम धराया है क्यों॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(८)

भव सागर में चलता फिरता गिरता पड़ता थक हारा हूँ मैं।
भली भाँति सभी फल चाख चुका चाहता इस से छुटकारा हूं मैं॥
सब ओर से होके निराश प्रभो तकता अब तेरा सहारा हूँ मैं।
प्रभु मारो या तारो करो कुछ भी अब तो सब भाँति तुम्हारा हूं मै॥

(९)

वृन्दावन धाम को बास भलो जहाँ पास बहै यमुना पटरानी।
जो जन न्हाय के ध्यान धरें वैकुण्ठ मिले तिनको रजधानी॥
चारिहूँ वेद बखान करें अरु सन्त गुनीन मुनी मनमानी।
यमुना यम दूतन टारत है भव तारत है श्री राधिका रानी॥

(१०)

जाकी कृपा शुक ग्यानी भये अति दानी औ ध्यानी भये त्रिपुरारी।
जाकी कृपा विधि वेद रचे भये व्यास पुरातन के अधिकारी॥
जाकी कृपा ते त्रिलोकी धनी सु कहावत श्री व्रज चन्द बिहारी।
लोक घटी ते हटी को बचाऊ कृपा करि श्री वृषभानु दुलारी॥

(११)

वह मोद न मुक्ति के मन्दिर में जो प्रमोद भरा व्रज धाम में है।
उतनी छवि राशि अनन्त कहाँ जितनी छवि सुन्दर स्याम में है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शशि में न सरोज सुधारस में न ललाम लता अभिराम में है।
उतना सुख और कहीं भी नहीं जितना सुख कृष्ण के नाम में है॥

(१२)

कहीं मान प्रतिष्ठा मिले न मिले अपमान गले में बंधाना पड़े।
जल भोजन की परवाह नहीं करके व्रज जन्म बिताना पड़े॥
अभिलाषा नहीं सुख की कुछ भी दुःख नित्य नवीन उठाना पड़े।
व्रज भूमि के बाहर किन्तु प्रभो हमको कभी भूलि न जाना पड़े॥

(१३)

किन भाँति छुएँ अपने कर से पद पंकज है सुकुमार तेरा।
हरे कृष्ण! बसा इन नयनन में अति सुन्दर रूप उदार तेरा॥
नहीं और किसी की जरूरत है हमको बस चाहिए प्यार तेरा।
तन पै मन पै धन पै सब पै इस जीवन पै अधिकार तेरा॥

(१४)

चितचोर छिपोगे कहाँ तक यों हमें शान्ति नहीं प्रगटाये बिना।
हम छोड़ेंगे ध्यान तुम्हारा नहीं नहिं मानेंगे श्याम बुलाये बिना॥
नहीं छाती की ज्वाला मिटेगी प्रभो तुमको इससे लिपटाये बिना।
यह जीवन प्यास बुझेगी नहीं चरणामृत प्यारे पिलाये बिना॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१५)

मन में है वसी बस चाह यही प्रिय नाम तुम्हारा उचारा करूँ।
बिठला के तुम्हें मन मन्दिर में मन मोहनी रूप निहारा करूँ॥
भर के दृग पात्र में प्रेम का जल पद पंकज नाथ पखारा करूँ।
बन प्रेम पुजारी तुम्हारा प्रभो नित आरती भव्य उतारा करूँ॥

(१६)

दीन दयाल सुने जबते तबते मन में कछु ऐसी बसी है।
तेरो कहाय के जाऊँ कहा अब तेरे ही नाम की फेंट कसी है॥
तेरो ही आसरो एक मलूक नहीं प्रभो सों कोऊ दूजो जसी है।
एहो मुरारि पुकारि कहों अब मेरी हँसी नहिं तेरी हँसी है॥

[१७]

रस रूपमयी रस की सरिता सुख रूप सदा सुख कन्दनि के।
वसुधा की सुधा व्रज की सुषमा वृषभानु सुता जग वन्दनी के॥
जल मीनन मान विभंजनी के मृग खंजन नैन निकंदनी के।
जिनको जग वंन्दत देखो वही पग वन्दत कीरति नन्दनी के॥

[१८]

नव भूषण भूषित शक्ति मयी रस रासेश्वरी सुखकारी श्री राधे।
रसिकों की सजीवन मूल तथा जगतीतल की उजियारी श्री राधे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रिय-प्रेम-पुरी की पताका सदा प्रणयेश की प्राण पियारी श्रीराधे।
मनमोहन मोह लिए छण में युग लोचनों को बलिहारी श्री राधे॥

(१९)

जिनके पग चाँपत नन्दलला वो तो वेद प्रसिद्ध सुभायन में।
सुर तेतीस कोटि की कौन गिने जहाँ ब्रह्म रह्यो लपटायन में॥
'कविलाल' गुपाल के जीवन मूल शशि कांति के कोटि प्रवाहन में।
रहुरे मन तोसों करौं विनती वृषभान किशोरी के पाँयन में॥

(२०)

प्रेम सरोवर छाड़ि कै तू भटकै क्यों करील की चाहन में।
जहाँ गैदा गुलाब अनेक खिले बैठो क्यों करील की छाहन में॥
'प्रेमी' कहै प्रेम को पंथ यही रहिबो कर सूधे सुभायन में।
मन तोहि मिलै विश्राम वहीं वृषभानु किशोरी के पाँयन में॥

(२१)

वह पायेगा क्या रसका चसका नहिं कृष्ण से प्रेम लगायेगा जो।
'हरे कृष्ण' इसे समझेगा वही रसिकों की समाज में जायेगा जो॥
ब्रज धूल लपेट कलेवर में गुण नित्य किशोर के गायेगा जो।
हँसता हुआ श्याम मिलेगा उसे निज प्राणों की भेंट चढ़ायेगा जो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(२२)

ब्रह्म मैं ढूंड्यो पुरानन गानन वेद रिचा सुनि चौगुने चायन।
देख्यो सुन्यो कबहूँ न कितैं वह कैसे सरूप औ कैसे सुभायन॥
टेरत हेरत हारि पर्‌यौ रसखान बतायो न लोग लुगायन।
देख्यो दुर्‌यो वह कुञ्ज कुटीर में बैठ्यो पलोटत राधिका पायन॥

(२३)

पहिने यह कुण्डल यों ही रहो अलकावलि यों ही सँवारे रहो।
अधरामृत पान कराते हुए मुरली कर कंज में धारे रहो॥
नहीं और विशेष करो कुछ तो अनियारे दृगों से निहारे रहो।
कहीं जाओ न मोहन छोड़ हमें बने जीवन प्राण हमारे रहो॥

(२४)

जब सौंप दिया सब भार तुम्हें फिर मारो या तारो कहैं हम क्या।
अब आप ही प्यारे विचार करो इस दीन दुखी को सहारा ही क्या।
मझधार में लाके डुबाओ हमें चाहे पार लगाओ किनारे पे ला।
हम तेरे हैं तेरे रहेंगे सदा अब और किसी को निहारेंगे क्या॥

(२५)

जगदीश से नाता जुड़ा जब है तब क्या जगकी परवाह करें।
बस याद में रोते हुए उनकी पलको पर अश्रु प्रवाह करें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उतनी वह दूर भगे हमसे जितनी उनकी हम चाह करें।
सुख अद्भुत प्रेम की पीड़ा में हो हम आँह करें वह वाह करें॥

(२६)

बलि जाऊँ सदा इन नैनन की बलिहार छटापर होता रहूँ।
कभी भूलूँ न याद तुम्हारी प्रभो चाहे जागृत स्वप्न में सोता रहूँ॥
हरे कृष्ण ही कृष्ण पुकारा करूँ मुख आँसुओं से नित धोता रहूँ।
व्रजराज तुम्हारे वियोग में (मैं) बस यों हो निरंतर रोता रहूं॥

(२७)

कानन दुसरों नाम सुनैं नहिं एक ही रंग रंग्यो यह डोरो।
धोखेहुँ दूसरो नाम कढ़ै रसना मुख बाँधि हलाहल बेरो॥
ठाकुर चित्त की वृत्ति यही हम कैसेहुँ टेक तजैं नहिं भोरो।
बावरि वे अँखिया जरिजायँ जे साँवरो छाड़ि निहारति गोरो॥

(२८)

रंग प्रेम भरी बरसा करिके बरसों की वियोग व्यथा हर दे।
मन मेरा मयूर सा नाच उठे कुछ भावना भाव नया भर दे॥
जलती इस छाती की ज्वाला मिटे अपना पद कंज जरा धर दे।
हँसिदे हँसि दे दृग फेर अरे नट नागर नेक कृपा कर दे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(२९)

छण भंगुर जीवन है जग में मन मंजुल पुण्य कमाते चलो।
फिर अवसर ऐसा मिलेगा नहीं परमारथ पंथ बनाते चलो॥
सतसंग करो पर-पीर हरो हरि को सुमिरो सुख पाते चलो।
निसिजाम सदा सियाराम सिया सियाराम सियनित गाते चलो॥

(३०)

छण भंगुर जीवन की कलियाँ कल प्रात को जाने खिली न खिली।
मलयाचल की शुचि शीतल मंद सुगन्ध समीर मिली न मिली॥
कलिकाल कुठार लिये फिरता तन नम्र है चोट झिली न झिली।
भजले सियाराम अरी रसना फिर अन्त समय में हिली न हिली॥

(३१)

तात मिले पुनिमात मिले सुतभ्रात मिले युवती सुखदाई।
राज मिले गज वाजि मिले सब साज मिले मन वांछित पाई॥
लोक मिले सुर लोक मिले विधि लोक मिले बैकुण्ठ भी जाई।
'सुन्दर' और मिले' सबही सुख संत समागम दुर्लभ भाई॥

(३२)

जो फल कोटि न यज्ञ किये अरू जो फल पूरन प्रेम निभाये।
जो फल योग अखण्ड किये अरू जो फल मकर प्रयाग नहाये॥
जो फल चारोंहि धाम किये पुनि जो फल क्षेत्रन वास बसाये।
जो फल दान तमाम किये इक सो फल कृष्ण के नाम न गाये॥

(३३)

जब दाँत न थे तब दूध दिये अब दाँत दिये तो को अन्न भी दैहैं।
जल में थल में पशु पक्षिन में सब की सुधि लेत वो तेरीहु लैहैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जान को देत अजान को देत जहाँन को देत वा तोको भी देहैं।
रे मन मूरख सोच करे क्यूँ सोच करे कछु हाथ न अइहैं॥

(३४)

तू कछु और विचारत है नर तेरो विचार धर्‌यो ही रहैगो।
कोटि उपाय करै धन के हित भाग लिख्यो तितनोहि लहैगो॥
भोर की साँझ घड़ी पल माँझ सो काल अचानक आय गहैगो।
राम भज्यो न कियो कछु सुकृत सुन्दर सो पछिताय रहैगो॥

(३५)

वह और की आशा करे न करे जिसे आश्रय श्री हरि नाम का है।
उसे स्वर्ग से मित्र प्रयोजन क्या नितवासी जो गोकुल धाम का है॥
बस सार्थक जन्म उसी का यहाँ 'हरे कृष्ण' जो चाकर श्याम का है।
बिनु कृष्ण के दर्शन के जग में यह जीवन ही किस काम का है॥

(३६)

बुद्धि बड़ी चतुराई बड़ी मन में ममता अतिसय लिपटी है।
सान बड़ो धन धाम बड़ो करतूत बड़ी जग में प्रगटी है॥
गज बाजी हूं द्वार मनुष्य हजार तो इन्द्र समान में कौन घटी है।
सो सब राम की भक्ति बिना मानों सुन्दर नारी की नाक कटी है॥

(३७)

पेट में पोढ़ि के पौढ़े महीपर पालना पोढ़ि के बाल कंहाये।
आई जबै तरुणाई तिया-संग सेज में पोढ़ि के रंग जमाये॥
क्षीर समुद्र के पौढ़न हार कौ नेकहुँ ध्यान हृदय नहिं लाये।
पोढ़त पोढ़त पोढ़ि गये अब चिता पर पौढ़न के दिन आये॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(३८)

संत सदा उपदेश बतावत केश सभी सिर श्वेत भये हैं।
तू ममता अजहूं नहिं छाड़त मौतहू आय संदेश दियो है॥
आज की काल करे नर मूरख तेरे ही देखत केते गये है।
सुन्दर क्यों नहिं राम सम्हारत या जग में कहो कौन रहे है॥

(३९)

जो दस बीस पचास भये सत होई हजार तू लाख मंगेगी।
कोटि अरब खरब असंख्य पृथ्वी पति होने की चाह जगेगी।
स्वर्ग पताल को राज करौ तृष्णा अधिकी अति भंग बढ़ेगी।
सुन्दर एक सन्तोष बिना सठ तेरी तो भूख कभी न भगेगी॥

(४०)

काम से रूप प्रताप दिनेश से सोम से सील गणेश से माने।
हरि चन्द्र से साँचे बड़े विधि से मघवा से महीप विषय सुखदाने॥
सुक से मुनि सारद से बक्ता चिर जीवन लोमस ते अधिकाने।
ऐसे भये तो कहाँ तुलसी जो पे राजिवलोचन राम न जाने॥

(४१)

जिन्दगी जब तक रहेगी फुरसत न होगी काम से।
कुछ समय ऐसा निकालो प्रेम कर लो राम से॥
जिन्दगी के झमेले कभी कम न होंगे।
एक दिन आयेगा ऐसा हम न होंगे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवान संकीर्तन की ध्वनियाँ

चेतोदर्पणमार्जनं भवमहादावाग्निनिर्वापणम् ।
श्रेयः कैरवचन्द्रिकावितरणं विद्यावधूजीवनम् ॥
आनन्दाम्बुधिवर्धनम् प्रतिपदं पूर्णामृतास्वादनम् ।
सर्वात्मस्नपनम् परं विजयते श्रीकृष्णसंकीर्तनम् ॥

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

× × × ×

अच्युतं केशवं रामनारायणं
कृष्ण दामोदरं वासुदेवं हरिम् ।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं
जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे ॥

× × ×

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव ।

× × ×

श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभो नित्या नन्द ।
हरे कृष्ण हरे राम राधे गोविन्द ॥

× × ×

मोहन मदन मुरारे राधे श्याम राधे श्याम ।
केशव कलिमल हारिन् राधेश्याम राधेश्याम ॥

× × ×

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृष्ण गोविन्द गोविन्द गोपाल नन्दलाल।
जय जय मुरली मनोहर मदन गोपाल।'

× × ×

हरि हरि बोल हरि हरि बोल मुकुन्द माधव गोविन्द बोल

× × ×

गोविन्द बोलो हरि गोपाल बोलो
राधारमण हरि गोबिन्द बोलो

× × ×

गोविन्द जै जै गोपाल जै जै
राधारमण हरि गोविन्द जै जै

× × ×

राधे श्याम राधे श्याम श्याम श्याम राधे राधे।
राधे कृष्ण राधे कृष्ण कृष्ण कृष्ण राधे राधे॥

× × ×

गोविन्द हरे गोपाल हरे जय जय प्रभु दीन दयालु हरे

× × ×

भज गोविन्दं बालमुकुन्दं परमानन्दं हरे हरे।
पारमानन्दं हरे हरे बालमुकुन्दं हरे हरे॥

× × ×

जय जय राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे गोबिन्द।
जय जय श्याम सुन्दर मदन मोहन वृन्दावनचन्द॥

× × ×

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राधे राधे गोविन्द गोविन्द राधे
गोविन्द राधे गोविन्द राधे

× × ×

भजो राधे कृष्ण गोपाल कृष्ण कृष्ण कृष्ण श्रीराधे
श्री राधे श्याम राधे श्री राधे श्याय राधे

× × ×

मेरे तेरे आधार है श्री राधा के चरणार विन्द ।
मेरे जीवन प्राण है श्री राधा के चरणार विन्द ।।

× × ×

राधे रानी की जै महारानी की जै बोलो बरसाने वाली की जै ।३।
बोलो बरसाने वाली की जै जै जै बोला कीरत कुमारी की जै जै जै ।।

× × ×

गोपी जन वल्लभ श्याम राधारमण श्याम ।
मेरे चित चोर श्याम नवल किशोर श्याम ।।

× × ×

आवो नंद नंदना प्यारे नंद नंदना ।
गोपियों के प्राण धन राधा उरचन्दना ।।

गोविन्द गोविन्द गोपाल रे भजमन राधे गोविन्दा ।
केशव दीन दयालु रे भजमन राधे गोविन्दा ।

× × ×

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरो प्यारो नन्दलाल किशोरी राधे
किशोरी राधे श्यामा गोरी राधे।

रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीताराम

× × ×

जय रघुनन्दन जय सियाराम जानकी बल्लभ सीताराम

× × ×

श्री राम जय राम जय जय राम

× × ×

जय सियाराम जय जय हनुमान संकटमोचन कृपा निधान।

× × ×

जय जय सीताराम की जय बोलो हनुमान की॥
भरत लखन रिपुदमन सुजान की॥
राम लक्ष्मण जानकी जय बोलो हनुमान की।

× × ×

जय २ विघ्न हरण हनुमान संकटमोचन कृपा निधान॥

× × ×

राम राघव राम राघव राम राघव रक्ष माम्।
कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव पाहि माम्॥

× × ×

श्रीमन्नारायण नारायण नारायण॥
लक्ष्मी नारायण नारायण नारायण॥

× × ×

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नि दुर्गे जय जय काल विनासिनी काली जय जय
ा ब्रह्माणी जय जय राधा सीता रुक्मणी जय जय

× × ×

हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे।
काशी विश्वनाथं गंगे सदा शिव पार्वती संगे॥

× × ×

जय मीरा के गिरधर नागर जय तुलसी के सीताराम।
जय नरसी के साँवरिया जय सूरदास के राधेश्याम॥

× × ×

रामधुन लागी रे गोपाल धुन लागी।

× × ×

जय जय श्यामा जय जय श्याम जय जय श्री वृन्दावन धाम
जय जय श्री वृन्दावन धाम मुरली मनोहर सुन्दर श्याम

× × ×

जयति शिवा शिव जानकी राम गौरी शंकर सीताराम।
जय ब्रजनंदन जय घनश्याम ब्रजगोपी प्रिय राधेश्याम॥

× × ×

रामचन्द्र रघुनायक जय जय दिव्य चार धर सायक जय जय
कृष्णचन्द्र यदुनायक जय जय भगवद् गीता गायक जय जय

× × × ×

जय रघुनन्दन जनक किशोरी सीताराम मनोहर जोरी
यमुना पुलिन विहारी जय जय वृन्दा विपिनविहारी जय

× × × ×

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri